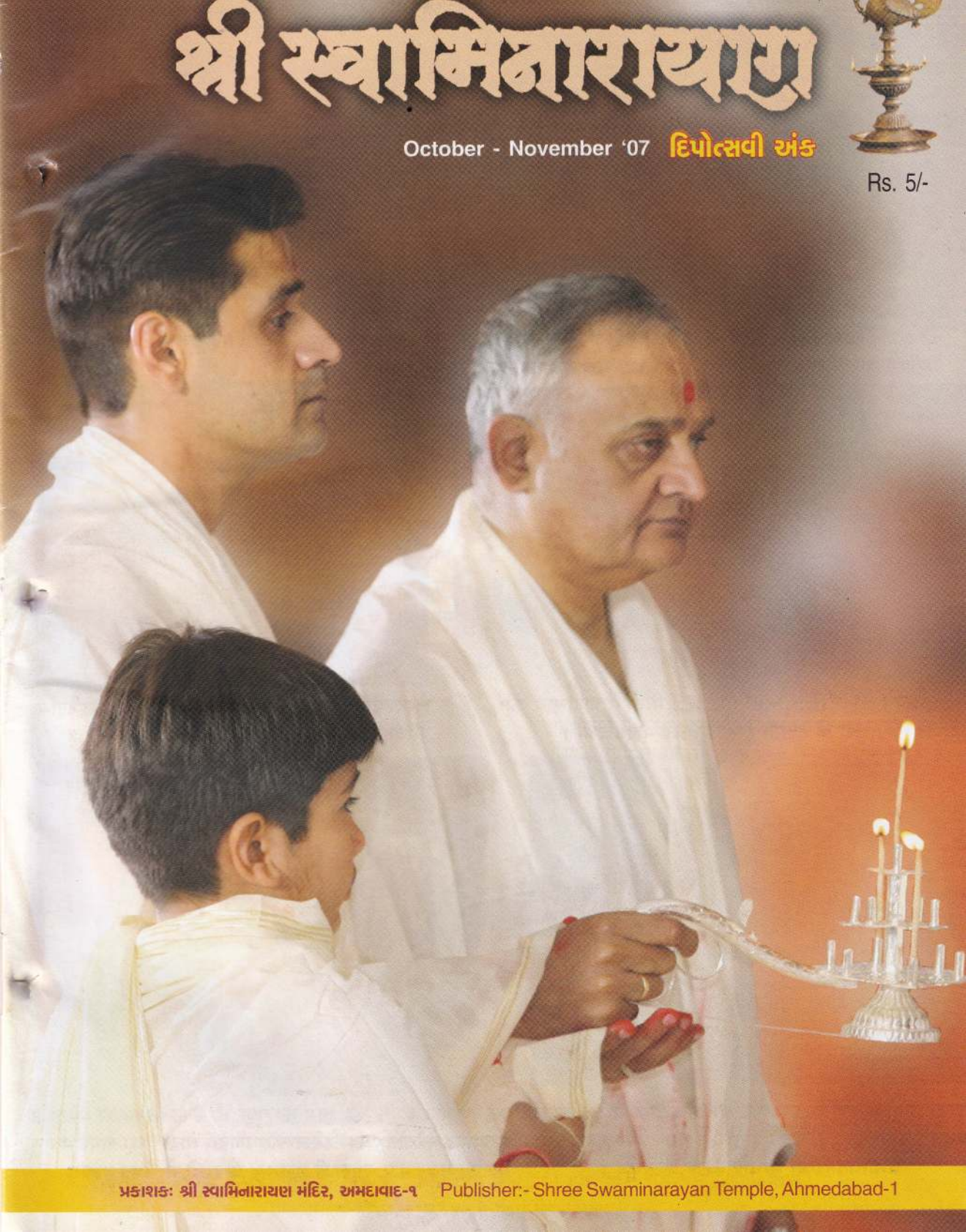
શ્રી સ્વામિનારાયણ

October - November '07 દિપોત્સવી અંક

Rs. 5/-



પ્રકાશકઃ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



बोस्टन (I.S.S.O., U.S.A.) मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा भाई एवं बहनो की सत्संग सभा ।



अपने लेस्टर (I.S.S.O., U.K.) मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



लेस्टर मंदिर में पाटोत्सव के मुख्य यजमान काचा टेलर्स परिवार प.पू. बडे महाराजश्री की आरती उतारते हुए ।



टर मंदिर में वहाँ के एम. पी. श्री कीथवाझ जब दर्शनार्थ ारे उस समय प.पू. बडे महाराजश्री का दर्शन करके खूब प्रभावित होकर भावना व्यक्त करते हुए ।



अहमदाबाद म्युनि. को. द्वारा कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के मुख्य रोड के चोराहे का "श्री नरनारायणदेव चौक" का नामाभिधान का उद्घाटन प.पू. लालजी महाराज के हाथों से संपन्न हुआ ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरूपदासजी
(महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 1 अंक : 6-7 अक्टूबर-नवम्बर -2007

अ नु क्र म णि का

१. अरमदीयम ३
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रूपरेखा ४
३. दीपावली आई... ५
४. उत्सव प्रियाः खलु मनुष्याः ६
५. दीपोत्सव ८
६. आदरज में अन्नकूट उत्सव १०
७. प्रतिदिन दीपावली १२
८. "आनंद की वर्षा" नये वर्ष का उपदेश १४
९. श्रीजी के अपर स्वरुप १६
१०. अनुवर्ती भंग (अनुकूल-आचरण) १८
११. दीपावली का दिन किस के लिये महत्व पूर्ण ! २१
१२. प्रेम के भूखे हैं पदार्थ के नहीं २४
१३. दीपावली पर्व में श्रीहरि दर्शन २५
१४. सखी हैडे ते हरख न माय, आ दीवाली रे २७
१५. अंत में नीलकंठ वर्णी पंढरपुर में विठु भगवान को भेंटे २९
१६. सत्संग सुरभि : प्रत्येक में से गुण लेने की आदत रखो ३०
१७. सत्संग बालवाटिका ३२
(१) प्रत्येक दिन दीपावली है
(२) प्रत्येक् दीन काम का है
१८. भक्तिसुधा ३४
(१) मधुबाई की तरह किसी का भोजन नहीं
(२) कारियाणी की शीतबा (३) लाकडी बाई का प्रभु प्रेम
(४) कुल त्याग कर निश्फल हुए (५) सगरम वाघरी
(६) पुत्र का दान
१९. प्रश्नपेटी ३९
२०. समाचार वृत्तांत ४०

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

॥ आशीर्वाद पत्रम् ॥

His Holiness Acharya Maharaj
Shri Koshalendraprasadji Pande

દીપાવલી
નૂતન વર્ષ -સં.૨૦૬૪

સર્વાવતારી શ્રી હરિએ સ્વમુખે કહ્યું છે કે ભગવાનની મૂર્તિ ચિંતામણી છે. કોઇના હાથમાં ચિંતામણી હોય તો એ જે પદાર્થ ચિંતવે તેને તે પ્રાપ્ત થાય. તે તો જીવ, ઈશ્વર, માયા, બ્રહ્મ અને પરબ્રહ્મના સ્વરુપને જોવા ઈચ્છે તે પણ દેખાય. સર્વ વચનામૃતના સાર સમાન ગઢડા પ્રથમના પહેલા વચનામૃતમાં અલૌકિક વાત ભક્તો પ્રત્યે કરી છે. શ્રી હરિએ સ્વ સ્વરુપની શ્રી નરનારાયણદેવની મૂર્તિ આપણને કૃપા કરીને આપી છે,તેમાં મન, વચન, કર્મે કરીને અનન્ય નિષ્ઠા રાખવી. શ્રી નગરમાં સર્વ પ્રથમ મંદિરમાં સ્વ-હસ્તે બાથમાં લઈને પધરાવેલા શ્રી નરનારાયણદેવના સ્વરુપમાં બિરાજમાન સર્વાવતારી શ્રી હરી સર્વે ત્યાગી, ગૃહી, સમસ્ત દેશ-વિદેશમાં વસતા નાના-મોટા સત્સંગીઓને ત્રિવિધના તાપમાંથી મુક્ત કરીને , વ્યવહારીક તથા આધ્યાત્મિક ક્ષેત્રમાં ઉત્તરોત્તર પ્રગતિ કરે તેવા શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠ સ્થાનથી અમારા રુડા શુભાશીર્વાદ અને નૂતન વર્ષાભિનંદન સહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

શુભાશીર્વાદ સહ.

પ.પુ.ધ.ધુ.આચાર્ય મહારાજ શ્રી
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર
કાલુપુર - અમદાવાદ

Shree Swaminarayan Mandir,
Ahmedabad-1
Tel:079 2212 3835

Shree Swaminarayan Bagh,
Ahmedabad-52
Tel: 079 27478070

अस्मदीयम्



तन्त्रीश्री की तरफ से.....

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभुने अपने आश्रितों के विघ्न को दूर करने के लिये तथा कल्याणकारक उपासना करने की आज्ञा ग.म. ७ वें वचनामृत में किया है। उपासना के बिना कोई सिद्धि मिलती नहीं है। अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण हैं। जो सर्वोपरि सर्वातारी सभी कारणों के कारण हैं, ऐसी दृढता मन में करनी चाहिए। अपने मंदिर में श्री नरनारायणदेव- श्री लक्ष्मीनारायण इत्यादि स्वस्रूों के मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करके श्रीहरिने स्पष्ट कहा है कि - मैं इसी स्वस्रूप में अहमदाबाद - वड़ताल आदि मंदिरो में विराजमान नरनारयणदि स्वस्रूप में रहता हूँ। बदरिकाश्रम सहित अक्षरधामाधिपति के स्रूप में साक्षात् प्रत्यक्ष विराजमान रहता हूँ। ऐसा मानकर मेरी उपासना करना। ऐसा मानने वाली की सेवा हम स्वीकार करेंगे। स्वामिनारायण भगवान में पतिव्रता की तरह भावना रखकर सेवा पूजा करने से सकल कार्य की सिद्धि होगी। इष्टदेव में निष्ठा तथा श्रद्धा के सिवाय किसी कार्य की सिद्धि मिलती नहीं है। इस लिए इष्टदेव परायण होना आवश्यक है। साधना भले कितनी भी कठिन की जाय यदि इष्टदेव में श्रद्धा न हो तो फल नहीं मिलता है। ज्ञान मार्ग में यह सदा ध्यान रखना चाहिए कि भगवान के स्वस्रूप का कभी द्रोह न हो जाय। कदाचित् वचन का लोप हो जाय तो चिंता नहीं, लेकिन भगवान के स्वस्रूप को पहचानने में कमी रह गयी तो प्रत्यक्ष द्रोह कहा जायेगा। श्रीहरि द्वारा प्रवर्तित उपासना एवं आज्ञा में कोई मनुस्वी पुस्रूष अपना निर्देश करता है.तो उसे कदापि स्वीकार नहीं करना, क्योंकि कितने लोग शिक्षापत्री के श्लोको को संक्षिप्त करके प्रकाशन करते हैं, तो कितने लोग वचनामृत को छोटा समझ कर बढा कर प्रकाशित करते हैं।

श्रीहरि ने संप्रदाय के त्यागी एवं गृही के गुस्रूद पर धर्मवंशी आचार्य को अपने पद पर स्वयं प्रतिष्ठित करके सामान्य एवं महादीक्षा ग्रहण करने की आज्ञा दी है। मंत्रदीक्षा विना भजन-भक्ति करने का अधिकार नहीं है। धर्मवंशी आचार्य जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा किये है, वही स्वस्रूप सेवा के योग्य है। दूसरी मूर्ति तो नमस्कार मात्र है। शि.प.श्लो. ६२ की आज्ञा का अवश्य पालन करना चाहिए।

सत्संगी मात्र प्रतिदिन भगवान के मंदिर में जाये, वहाँ प्रभु की आज्ञा की पुष्टि के लिये सत्संग करे, कथा श्रवण अवश्य करें, सच्चे संत का समागम करें। मंदिर में दर्शन करके तुरंत नहीं निकलना चाहिए अवश्य सत्संग करें। धर्म, ज्ञान, वैराग्य आदि की पुष्टि कथा के विना संभव नहीं है।

वीते हुए वर्षो में अपने इष्टदेव, धर्मवंशी गुरु, शास्त्र, संत एवं सत्संगी के प्रति निष्ठा में कोई भूल हो गयी होतो आनेवाले नूतन वर्ष में सुधार लेना चाहिए। अपने आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक जीवन की सिद्धि में अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण तथा धर्मवंशी गुरुआचार्य महाराजश्री की सतत कृपा दृष्टि है ऐसा समझकर कभी भूलना नहीं चाहिए। श्री स्वामिनारायण अंक के सभी सत्संगीजनो को हमारा श्री नरनारायणदेव के चरण कमल में अभिनन्दन के साथ नूतन वर्षाभिनन्दन सह जयश्री स्वामिनारायण।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- साधु नारायणस्वस्रूपदास का

जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

सितम्बर- अक्टूबर-२००७



सितम्बर-२००७

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया यज्ञप्रसंग पर पदार्पण ।
१३. श्री लालभाई पटेल (भावपुरावाला) के यहाँ पदार्पण, निकोल ।
१४. जयदेवपुरा श्री स्वामिनारायण गुरुकुल ज्ञानसत्र एवं महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।
१५. अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री गणेश-चतुर्थी प्रसंग पर श्री गणपतिजी की आरती उतारने पधारे ।
श्री गांडाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, सांतेज ।
१८. से २६. अपने कार्डिफ (इंग्लेन्ड) श्री स्वामिनरायण मंदिर में श्री घनश्याम महाराज की प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
३०. श्री हर्षदभाई कालीदास सोनी के यहाँ पदार्पण, इसनपुर ।

अक्टूबर-२००७

६. श्री विजयभाई जयंतीभाई ठक्कर के यहाँ सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण, वासणा ।
७. श्री प्रबोधभाई आरीवाला आयोजित धुनि प्रसंग पर पदार्पण, नारायणपुरा मंदिर ।
१०. श्री अरविंदभाई सेंधालाल पटेल के यहाँ पदार्पण, बोपल ।
१२. से १४. तक सर्वोपरि छपैयाधाम में इष्टदेव सर्वावतारी बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के जन्म स्थल पर शिलान्यास विधि प्रसंग पर पदार्पण ।
१९. श्री दीलीपभाई मंगलदास पटेल के यहाँ पदार्पण, घाटलोडीया ।
२०. श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला अक्षरमहोलवाडी जेतलपुर में श्री सरस्वती पूजन प्रसंग पर पदार्पण ।
२१. ३५ वाँ प्राकट्योत्सव प.पू. बडे महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में संत-हरिभक्तोंने धूमधाम के साथ मनाया ।
२३. श्री प्रकाशभाई पटेल (गवाडावाला) के यहाँ पदार्पण, शाहीबाग ।
२४. श्री घनश्यामभाई गणेशभाई पटेल के यहाँ तथा अन्य भक्तों के यहाँ पदार्पण, निकोल-नरोडा ।
२५. श्री डॉ. हर्षदभाई झिंझुवाडीया के "धर्मराज ज्वेलर्स" में पदार्पण, नवरंगपुरा, सी.जी. रोड ।
२७. श्री हनुमानजी मंदिर असारवा में पुनः प्राण प्रतिष्ठा तथा मास्तियज्ञ प्रसंग पर पदार्पण ।
२८. जुंडाल श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री परसोत्तमभाई वालजीभाई पटेल (गवाडावाला) की शांति आर्केट ओफिस के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, नवरंगपुरा ।
असलाली श्री स्वामिनारायण मंदिर महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।





दीपावली आई...

- साधु घनश्यामप्रकाशदास -
जमीयतपुरा (महंत माणसा)

दीपावली आई क्या क्या लाई ? आनंद उल्लास तथा नवजीवन के अरमानो को लाई, भक्तों के भक्ति सुख को लाई, अन्नकूट के राजभोग को लाई, ऐसी ही एक दीपावली भगवान स्वामिनारायण ने कारियाणी में मनाई थी । उस समय संत-भक्तों के आनंद की सीमा ही नहीं थी । कारण यह कि भक्तिभाव को स्वीकारने वाले श्रीहरि स्वयं वहीं प्रत्यक्ष थे । बडे सुन्दर ढंग से दीप माला सजाई गयी थी । जिसका प्रकाश जगमगा रहा था । ऊँचा एक मंच बनाया गया था, जिस पर श्रीहरि को नाना विध पुष्पों से सजे पलंग पर बैठाया गया था । विविध श्रृंगारो से श्रीहरि को सजाया गया था। इसके साथ नरनारायण - स्वामिनारायण के नाम का दुपट्टा ओढे थे । सुन्दर पगडी बांधे छे । पीले पुष्पों का हार पहने थे । इस दिव्य स्वरूप का भक्तजन चकोर दृष्टि से पान कर रहे थे। अपने जीवन की धन्यता का अनुभव करते हुए सभी भक्तजन इस दीपावली का उत्सव मना रहे थे ।

उसी समय दीव टापू के भक्त वहाँ आये, वे लोग अपने साथ वहाँ की महिलाओं द्वारा निर्मित सुनहरे कलर का जो हाथ से भरा हुआ था ऐसा उत्तरीय वस्त्र स्वयं स्वीकार करके, उन भक्तों द्वारा पूजन अर्चन स्वीकार किये। बाद में सभा से उठकर उन वस्त्रों को भीतर जाकर पहने और बाहर आकर कहने लगे कि हमारे हजारों भक्त हैं, हजारों प्रकार से भेंट देते हैं, हजारों की सौजात देते हैं, फिर भी मैं स्वयं लेने नहीं जाता हूँ, इस प्रकार तुरन्त धारण भी नहीं करता, इतनी प्रसन्नता भी नहीं होती, लेकिन आज इन भक्तों पर विशेष प्रसन्न हूँ । यह सुनकर दीव के हरिभक्त अपने जीवन को धन्य तो माने ही, साथ में अपनी दीपावली को ऐतिहासिक माने । इस प्रकार सभी संत-हरिभक्त अपने सामर्थ्य अनुसार श्रीहरि को उपहार दीपावली के अवसर पर दिये । सभी मिलकर उस दिपावली का उत्सव ऐसा मनाये कि वह एक इतिहास बन कर रह गया । श्रीहरि भी दीपावली के उत्सव को मनाने के लिये इतना उत्सुक हुए कि उनके आगे भक्त अल्प लगने लगे । दोनो में आकाश पाताल का अंतर था । उत्सव मनाने में श्रीहरि का विशेष उद्देश्य होता है । प्रत्येक प्रसंग पर जीवात्मा के अंत:करण के शुद्धि की अवश्य बात होती है । आज भी अंत:करण के प्रेम को देखा और चरित्रामृत को परसने लगे ।

हुआ ऐसा कि सभा में दीनानाथ भट्ट आये, उसी समय स्वयं उठकर श्रीहरि जितनी सामग्री स्वयं भेंट स्वीकार किये थे वह सब दीनानाथ भट्ट को दक्षिणा के रूप में भेंट कर दिये और कहने लगे "हमें ये भेंट सौगात जो आपलोगों ने दी थी । सभी भट्ट को दे दिये । यही सद्धर्म है । शास्त्र भी ऐसा कहता हैं कि जो वस्तु दान में आवे वह सत् पात्र ब्राह्मण को दे देनी चाहिए । आप ने अपने इष्टदेव को दी, हमने वही वस्तु सत्पात्र को दी अब उस वस्तु का सदुपयोग होगा । कभी मत्सर से रहित कार्य करना चाहिये । व्यासजी भागवत में लिखे हैं कि निर्मत्सर ऐसे संत को भागवत का अधिकारी बताया है । इसलिये हे भक्तों ! मत्सर रहित होना बहुत आवश्यक है । अब श्रीहरि जो लक्ष्य रखकर कहने जा रहे है, वह दीपावली के समय अत्यंत अनमोल, अद्‌भुत, एवं दुर्लभ महाप्रसाद है । आज सभी त्यागी - गृही मुक्तों पर कृपा दृष्टि वरसाने जा रहे हैं । महाराज अपने स्वरूप को स्पष्ट करने जा रहे हैं । भगवान का स्वरूप कितना निर्मल है । निर्दोष है । इसी वात को स्पष्ट कर रहे हैं । दीपावली कितनी आई और कितनी

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १३

उत्सव प्रियाः खलु मनुष्याः

- शास्त्री स्वामी रामानुजदास (कालुपुर मंदिर के कोठारी स्वामी)



कवि कालिदास की यह उक्ति मनुष्य के जीवन में चरितार्थ होती है। संसार के प्रपंच से उद्विग्न होकर मनुष्य उत्सव-आनंद की तरफ गति करता है। अन्तःकरण के भाव से उत्सव मनाया जाता है जीवन में आनंद की अनुभूति होगी । अपने संप्रदाय में उत्सवों की महिमा जितनी देखने को मिलती है वह अन्यत्र कहीं देखने को नही मिलेगी ।

अंतर में प्रकाश फैलाने वाली दीपावली, आध्यात्मिकता का भी प्रकाश फैलाती है । ऐसा कहा जाता है कि "आत्मदीपोभव" तुम अपने लिये दीपक बनो । तूं स्वयं अपने जीवन को प्रकाशित कर । इस प्रकार श्रीजी महाराज स्वयं वचनामृत के प्रथम के २० वें श्लोक में यह वात कहे हैं अपने को पहचानने वाला ज्ञानी होता है, अन्य को पहचानने वाले अज्ञानी होते है ।

परंतु दीपावली एक ऐसा त्योहार है जिसका महत्व कभी घटता नहीं है । गुजरात में दीपावली का उत्सव अन्यत्रकी अपेक्षा अनेको ढंग से मनाया जाता है । आश्विन कृष्ण-११ से पांच दिन तक दीपावली का उत्सव प्रतिपदा के दिन नूतन वर्ष इसके बाद भातृ द्वितीया तक चालू ही रहता है ।

दशहरा के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम रावण पर विजय प्राप्त करके दीपावली के दिन अयोध्या पहुंचे थे, उन्हीं के स्वागतार्थ आनन्दोत्सव मनाने के लिये प्रजाजन अपने घरो को दीपक से सजाया जाता है । आश्विन कृष्ण चतुर्दशी अर्थात् नरक चतुर्दशी या काली चतुर्दशी इस दिन दीपक प्रज्वलित करने का विशेष महत्व है । अनेक ग्रंथो में इस दिन पूजन विधि का प्रकार बताया गया है । यमतर्पण, दीपदान की व्यवस्था बताई गइ है । दीपदान पुण्यकर्म है । दीपदान से यमयातना नहीं मिलती । अपमृत्यु निवारण के लिये संध्या समय मे दीपक प्रगट करने से दीपदान कहा जाता है । आज के दिन प्रत्येक मंदिर में, मठ में, घर में, बगीचे में, दरवाजा पर, गौ-शाला, घोडशाला, हाथीशाला, इत्यादि स्थलों पर दीपदान का उल्लेख मिलता है । जितनी संख्या में दीपदान किया जाय उतने हजार वर्ष तक धाम का सुख मिलेगा ऐसा माना जाता है ।

दीपक प्रज्वलित करने का एक विशेष उद्देश्य है, मात्र परंपरा का अनुसरण न करके विधियों के रहस्य को समझकर परिवर्तन किया जा सकता है । दीपदान की विधि भारतीय संस्कृति की पहचान है । लेकिन उत्सवों के पीछे छिपे रहस्य को समझकर मनायेंगे तो उत्सवों के मनाने का पूर्ण लाभ मिल सकेगा ।

आदिकाल से भारत में दीपावली उत्सव मनाने का रिवाज चला आ रहा है । दीपावली संस्कृत शब्द है । दीप तथा आवी इन दो शब्दों से दीपावली बना है । दीप का अर्थ दीपक, अवली का अर्थ पंक्ति, अर्थात् दीपकों की पंक्ति, दीपाली शब्द सुनते ही प्रकाश से सम्पृक्त मन होजाता है । व्यक्ति सदैव प्रकाश की चाहना करता है । प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को प्रकाशमय बनाना चाहता है, इसी हेतु से दीपावली का उत्सव लोग मनाते है, जिससे जीवन प्रकाशमय बन जाये । घर, गाँव, शहर, मंदिर कहाँ दीपक के प्रकाश से आँखे चका चौंध नहीं होती है । दीपावली का ऐसा सुनहरा अवसर हैं जिस में सभी छोटे-बडे एक दूसरे से मिलते हैं और पीछे के भाव को भूल कर नये विचार लाते हैं ।

दीपावली मात्र दीपक से ही नहीं बल्कि हृदय से मनाने का पर्व है । दीपावली के उत्सव में अपने घर में दीप जलादें, पर बाहर के वातावरण

को अंधकारमय बनाये रहें तो उस दीप जलाने से क्या प्रयोजन । प्रत्येक व्यक्ति के भीतर तथा समाज में दीपक स्मी प्रकाश को फैलाना ही सच्ची दीपावली है । जब मनुष्य अज्ञान स्मी अंधकार को दूर करके ज्ञान स्मी प्रकाश से प्रज्वलित नहीं होता तब तक मनुष्य का जीवन अंधकारमय ही है । अपने जीवन को प्रकाश में लेजाने के लिये अनुभव सिद्ध प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जैसे महान विभूतियों का मार्ग दर्शन लेना चाहिये । जिससे सदा के लिए अपना जीवन दीपावली हो जाय ।

अवशिष्ट जीवन भी दीपावली मय बने ऐसा शुभ संकल्प करना चाहिये । ऐसे शुभ संकल्प से भगवान की कृपा होती है इस तरह जीवात्मा भी एक दीपक है । जो परमात्मा की कृपा से मिला है, जो स्वयं प्रकाश स्वस्म है । ऐसे उत्सव के समय पूज्य आचार्य महाराजश्री तथा बडे संतो एवं अपने से बडो का आशीर्वाद लेना चाहिये । तभी अज्ञान स्मी अंधकार का आवरण हटेगा और बुद्धि में प्रकाश फैलेगा । जब बुद्धि में प्रकाश होगा तभी परमात्मा के चरणारविंद के सुख की अनुमति होगी । जीवन सुखमय बनेगा ।

भारतीय प्रकाश के पूजक होते हैं । भारत शब्द भी (भा=प्रकाश, रत=युक्त) प्रकाश से प्रेम करने वाला का वाचक है । इस तरह भारत प्रकाश प्रेमी देश है । प्रकाश का पुजारी है । विश्व में भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर युगों से प्रकाश का उत्सव अर्थात् दीपावली का उत्सव मनाया जाता है ।

"तमसो माज्योतिर्गमय "।

अंधकार में से दिव्य प्रकाश की तरफ - अर्थात् जगत के विषयों से हट कर परमात्मा में प्रीति करने का पर्व दीपावली है । हमारी हिन्दू संस्कृति में दीपावली का त्योहार पांच दिन तक मनाया जाता है । धन तेरस, काली चौदश, दीपावली, नूतन वर्ष, भ्रातृद्वितीया ।

प्रकाश मनुष्य को प्रवृत्ति में सम्पृक्त करता है । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रकाश का महत्व है । हम अपने सत्संग में कभी अंधकार की तरफ शिकायत नहीं करेंगे । हजारों शिकायत करने पर भी अंधकार दूर नहीं होगा । अंधकार को दूर करने के लिये जीवन में संत समागम, सत्संग स्मी दीपक को प्रगट करना होगा । ऐसे दीपक को जलाने से कुसंग स्मी अंधकार भाग जायेगा । जो व्यक्ति सत्संग में एक जीवात्मा को सत्संग करायेगा उसके जीवन में सत्संग स्मी दीपक जलायेगा, वह सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित किया ऐसा समझना चाहिये ।

वैसे तो दीपावली भौतिक प्रकाश का पर्व है । फिर भी आध्यात्मिकता की तरफ प्रकाश का संदेश देते जाता है । ऐसे दीपावली के प्रकाशमय पर्व से सभी को पेरणा लेनी चाहिए कि हम स्वयं प्रकाश स्वस्म बने और उस प्रकाश स्वस्म परमात्मा को प्राप्त करें ।

बालकों के लिये तो दीपावली फटाका का पर्व है । मिठाई खाने का पर्व है । अवकाश में धूमने का पर्व है । युवानो के लिये नूतन वर्ष है । महिलाओं के लिये घर को सजाने का पर्व है । व्यापारियों के लिये लेखा जोखा का पर्व है ।

लेकिन भगवान के भक्तों के लिए, संतो के लिये, प्रत्येक दिन दीपावली है । कारण यह कि हमें सर्वोपरि भगवान मिले हैं । उन्हीं की चाहना ही दीपावली है । भक्तों के अंदर सद्विचार स्मी दीपक प्रगट हो जिससे परमात्मा में जीवात्मा को जोड़ा जा सके । यही दीपोत्सव का रहस्य है ।

नूतन वर्ष के कलन्डर में सौजन्य के लिए

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की तरफ से जनवरी-२००८ से दिसम्बर २००८ तक का सुन्दर कलात्मक दिव्य चित्राकर्षक मनोहर स्वस्म सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज (रंगमहल) की तस्वीर उद्योग छपाकर कलन्डर लेना चाहते हों तो पहले साहित्य केन्द्र में एडवान्स समये जमा कराकर पहुँच लेलें, जिससे उनका नाम छपा जासके । इसके साथ वे अपना नाम, पता, व्यापार स्थल, फोन को अवश्य लिखावें । *(कोठारी स्वामी)*



- शास्त्री स्वामी धर्मकिशोरदास गुरु स.गु. महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (प्रयारगाज मंदिर के कोठारी) .

भगवान स्वामिनारायण को उत्सव बहुत प्रिय था । (उत्सवप्रिया: मानवा:) बडे-बडे उत्सव करते । वचनामृत के शब्दो को याद करें तो (ग.म.प्र. ३) श्रीजी महाराज कहते हैं कि भगवान जिन-जिन स्थानों पर लीला की हो, वह स्थान स्मरण में आवे अथवा साधु ब्रह्मचारी स्मरण में आवे या भगवान की मूर्ति का स्मरण हो जाय तो जीव बडे पद को प्राप्त करता है इसके साथ ही उसका बडा कल्याण होने वाला है ऐसा समझना चाहिये । इसी हेतु से बडे-बडे विष्णुयाग करते हैं जिस में साधु-ब्रह्मचारी-भक्तजन को एकत्रित करते है, यदि कोई पापी जीव हो उसे इन सभी स्वस्मों का अंतिम समय में अर्थात् अंतकाल में स्मरण हो जाय तो उसे भगवत् धाम की प्राप्ति होगी । ऐसा श्रीजी महाराजका उत्सव प्रिय सिध्धांत था ।

इस प्रकार हम सभी मिलकर प्रेम से दीपावली का उत्सव मनायें तो महाराज हम सभी पर खूब प्रसन्न होंगे । किसी कविने दीपावली के ऊपर अच्छा लिखा है -

उत्सव आया, उमंग लाया
खुशियो भरा, त्यौहार लाया
सबके दिलो में, उमंग लाया
दिपावली पर्व में, दिप जलाये
प्रभु मिलन का दिवस आया
आओ सब मिलकर, दिपोत्सव मनाये

इसी तरह अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में दीपावली सजाकर अलौकिक दर्शन की याद बनी रहे तो निश्चित जीव का कल्याण हो जायेगा ।

दीपावली आने के साथ ही लोग अपने घरो को साफ सुथरा करने लगते हैं । वह इस लिये कि साफ सुथरे घर में भगवान का वास होता हैं । इसी तरह अपने हृदय (मंन) को साफ-पवित्र निर्मल रखेंगे तो अवश्य इस मन स्मी घर में भगवान का वास होगा । लिखा है -

निर्मल मन जन सो मोहि पावा ।
मोही कपट छल छिद्रन भावा ॥

पवित्र मन में ही श्रीहरि का वास सम्भव है । - पवित्र लीला की एक झलक देखिये -

एकवार भगवान स्वामिनारायण गढपुर में सुन्दर सभामें विराजमान

थे । महाराज सुन्दर श्वते वस्त्र धारण किये हुए थे । कानों में कुंडल, गले में कंठी, धारण किये हुए थे । मुखारविन्द से दिव्य तेज निकल रहा था । सभी के ऊपर कृपादृष्टि बरसा रहे थे । उसी समय सूरत से कुछ भक्त मिलने आये थे। वे सभी महाराज को दंडवत् प्रणाम करके कहने लगे हे प्रभु ! हम सभी पर आप प्रसन्न दया रखना । उस समय महाराज ने कहा, आप लोक भी हमारे ऊपर दया रखना । सभी महाराज का दर्शन करके चले गये । जाकर राधावाव के पास विश्रांति करने लगे, उसी समय किसीने कहा कि हम तो पामर जीव है, हमारी फर्ज थी हमने कहा । महाराज ने क्यों कहा कि आप लोग भी दया रखना । वे अपनी मन की शांति के लिये पुनः महाराज के पास गये और कहने लगे कि आप ने क्यों कहा कि दया रखना । महाराज ने कहा इसलिये कि आप लोग अपने मन को निर्मल रखने में दया रखना अन्यथा हमारी दया कैसे होगी । निर्मल मन में ही मेरा निवास है इसलिए मैंने कहा । इस का मतलब यह हुआ कि अपना हृदय निर्मल हो तो महाराज आकर विराजमान होंगे ।

दीपावली आने के साथ ही सभी के मन में अति आनंद की अनुभूति होने लगती है । सभी का हृदय आनंद से झूम उठता है । घर में भगवान का प्रवेश होते ही सब के लिए दिपावली का ही उत्सव है । इस तरह दीपावली मनाई जाय तो निश्चित जीव का कल्याण होगा ।

(आज दिवाली रे आज दीवाली रे, सखी हैडे ते हरख न माय)

आज दीपावली है । हे प्रभु जब भी अब आप को देखता हूँ तब मेरी दीपावली ही होती है । यथार्थ रूप में देखा जाय तो जब तक जीव के हृदय में प्रकाश का उदय नहीं होता तब तक जीवन अन्धकारमय ही रहता है । जिस प्रकार दीपावली के समय अंधकार को दूर करने के लिये दरवाजे के सामने या घर के भीतर दीप प्रगट किया जाता है, जिससे सम्पूर्ण बाह्याभ्यन्तर प्रकाशमय हो जाता है । इसी प्रकार हृदयप्रकाश में तथा बाह्य वातावरण को भी शुद्ध करना होगा तभी परमात्मा रूपी प्रकाश का उदय होना संभव है । जब तक दुर्गुण रूपी अज्ञान है तब तक प्रकाश का आना संभव नहीं ।

हे प्रिय भक्तजन ! अपने जीवन में महाराज का जितना अधिक स्मरण करेंगे उतना ही आनन्द एवं सुख की प्राप्ति होगी । इसलिये श्रीहरि को सदा ही अपने हृदय कमल में. रखना चाहिये ।

जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने लंका ऊपर चढाई करके, रावण के साथ युद्ध करके लंका पर विजय प्राप्त की थी । इसीतरह अनपे भीतर भी रावण जैसे अंतः शत्रु सदा रहते हैं, इन अन्तः शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिये हृदय में भगवान का स्थान देना पडेगा, दुर्गुणों को जीतना पडेगा । विजय मिलने के बाद भगवान राम का अयोध्या में स्वागत करके राज्याभिषेक किया गया था । हम भी अंतःशत्रुओं पर विजय प्राप्त करें तो हमारे जीव का भी भगवत धाम में आत्माभिषेक होगा और आत्माभिषेक होने के बाद जीवात्मा के लिए तो रोज ही दिपावली है । भगवान के धाम का दरवाजा खुल जायेगा, फिर तो रोज ही दीपावली रहेगी । भक्त जब से महाराज को मिले उसी समय से भक्त की रोज दीपावली ही दीपावली । स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी तो महाराज को कहते हैं कि हे प्रभु जब से आप मिले हैं तब से हमारे जीवन में दीपावली हैं उसी की स्पष्टता इस पंक्ति से होती है -

ब्रह्मानंद व्हाला तमसंग, रमता मारे
दाडी दाडी ते ।
दीवाली हैडामां मुने व्हाला लागो
छो वनमाली ॥

हमारे लिये तो रोज दीपावली है भक्तों इस दीपावली के पवित्र पर्व को बडे आनंद के साथ सभी मिलक मनायें तो महाराज बहुत प्रसन्न होंगे दीपावली पर्व सभी को मिलकर रहन सिखाता है । सदा के लिये सभी के जीवन में ऐसी दीपावली आवे ।

दीपावली के इस पवित्र पर्व प महाराज सभी के हृदय में विराजमा होकर सभी को सुखी करें ऐस भगवान श्री नरनारायणदेव के चरण में प्रार्थना ।

आदरज में अस्कूट उत्सव

- साधु रामकृष्णदास
(आदरजवाला)

सं. १८८१ में अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति इस गाँव में पधारे, उस समय इस गाँव के भक्तों के आनंद की सीमा न रही । सभी नरनारी अपने जीवन की सार्थकता एवं धन्यता का अनुभव कर रहे थे । ठाकुर समाज के २८२ गाँव के लोगो का कल्याण करने के लिये पधारे थे । आज के दिन अर्थात् दीपावली के दिन सम्पूर्ण ठाकुर समाज के अग्र गण्य सुविख्यात निशानबाज एकत्रित हुए थे । यहाँ पर गाँव के विशाल तालाब में दीपक को जलाकर छोड दिया जाता था, प्रख्यात निशान बाज इस जलते दीपक को तीर द्वारा संधान करते थे । इसी समय में श्रीजी महाराज पधारे सारा समाज आनंद मग्न हो गया था । ऐसे कार्यक्रम में सारा समाज को एकत्रित करने का कारण यहाँ के अर्थात् समाज के अग्रगण्य प्रमुख श्रीजी महाराज के परम भक्त थे । जिनका नाम रितुजी खांट था । आदरज गाँव सायाजीराव गायकवाड सरकार के सीमा में आता था, यहाँ के लोग गुंडागिरी करते थे । लूटपाट करते थे । किसी का जाने लेना इनके लिये खिलवाड था । गाँव के वृद्धो से यह ज्ञात हुआ है कि हमारे गाँव के आदमी पाटण महेसाणा, खेडा, गोधरा, अहमदाबाद तथा अन्य स्थलों पर चोरी करके रात्रि में वापस आ जाते थे । यदि वे वापस नहीं आते तो पकडा जाते थे । कारण यह कि सयाजराव सरकार ऐसे चोरों की सुबह शाम हाजिरी बनाते थे, आज भी जहाँ सभी की हाजिरी होती थी वहाँ पर इमली का वृक्ष है । श्रीजी महाराज जब पधारे थे उस समय उनके साथ ५०० परमहंस थे अन्य कुल मिलाकर २००० संत थे । असंख्य हरिभक्तों के साथ श्रीहरि को देखकर रितुजी खांट के मन में शंका हुई कि इतने बडे समाज के खाने पीने की व्यवस्था कैसे होगी । इस संकल्प को प्रभु जान गये । मंद-मंद मुस्काने लगे, लेकिन इस मुस्कान को भक्त लोग समझ नहीं सके । बल्कि स्वयंप्रभु ने कहा भक्तराज हमारे खाने पीने की चिंता मन करना । हम आपका खाने नहीं आये है, खिलाने आये है । आपके समाज को आनंद देने आये हैं । इस प्रकार की धार्मिक वाणी कोसमझ



नहीं सके । दूसरे दिन रितुजी खांट बेंटो के साथ खेत में काम करने गये ये वहाँ पर चार्दी के सिक्कों का घडा जमीन मे मिला, जिसे लेकर वापस घर आगये । उन्हें यह विश्वास हुआ कि यह प्रभु की लीला है । इसलिये यह धन भगवान के पास लेकर आ गये । आकर कहने लगे आप हमारे भगवान हैं आप हमें आनंद देने आये, आपको हम पहचान नहीं सके । मेरी मनुष्य बुद्धि के कारण ही ऐसा विचार आया था । मुझसे भूल हुई, आप तो विश्वभर हैं । मैं आपको क्या खिला सकता हूँ जो जगत को खिलाने वाला हैं । यह जो धन मिला है वह आपके प्रताप से मिला है, इसे आपके चरणों में भेट करने आया हूँ । भगवानने कहा कि आप को हमारी तथा हमारे साथ आये अनुयायियों के भोजन की चिंता थी, अब वह दूर हो गयी । यह धन भगवानने आप को दिया है, आप इसे रखें । रितुजी खांट की आंखे भर आयी गद-गद कंठ से कहने लगे कि प्रभु मैं मनुष्य भाव से आप सभी के खाने पीने का विचार कर रहाथा । आप स्वयं अखिल ब्रह्मांड का भर पोषण करते हैं । मुझे यह धननहीं चाहिये । मैं आपको अर्पण करने आया हूँ ।

आप इसे स्वीकार करे । आप यहाँ उत्सव करें, जो धन चाहिए वह मेरे दरबार में से लेलीजियेगा । श्रीजी महाराज रितुजी खांट पर खूब प्रसन्न हुए । सभी संत पार्षदो को संबोधित करके कहने लगे, हे प्रिय भक्तों ! भक्तराज रितुजी खांट के लिये हम यहाँ उत्सव करेंगे । यह सुनते ही भक्तजन आनंदित हो गये । प्रत्येक संत अपनी सूझ-बूझ के साथ शुद्धता को ध्यान में रखकर भोजन बनाने लग गये ।

भगवान भोजन करते जाते और भोजन की प्रसंशा भी करते जाते । बनाने वाले खूब प्रसन्न हो गये प्रभु के प्रसाद लेने से । मुक्तानंद स्वामी स्वयं कमर में दुपट्टा बांधकर सुंदर मिष्ठान तैयार किये ब्रह्मनंद स्वामी वासुदी बनाकर प्रभु को खिलाने में लग गये । भगवान को भोजन करने के बाद जो प्रसाद बचा उसे सभी ने लेलिया । गोपालानंद स्वामीने गोंद का पाक बनाया, प्रेमानंद स्वामीने पेंडा-बरफी को तैयार किया, निष्कुलानंद स्वामीने नरम नरम सेव बनाया, सुखानंद स्वामीने सुखडी बनाई, नित्यानंद स्वामीने तिलवा का लड्डू बनाया, गुणातातीनंद स्वामी गुलाब जामुन, महानुभावानंद स्वामी मूग की दाल पापड बनाये, व्यापकानंद स्वामीने बडा, देवानंद स्वामीने दहीवडा बनाये, भूमानंद स्वामी खाजा खुरमा बनाये, जयराम ब्रह्मचारी .जलेबी बनाये, गुस्त्वरण रतानंद स्वामी पापड बनाये, भूतात्मानंद स्वामीने पकौडी बनाया ।

अन्य संत भोजन की उत्तम से उत्तम भोज्य सामग्री तैयार किये । हजारों प्रकार के व्यंजन बनाये गये थे। सभी व्यंजन श्रीजी महाराज के थाली में रखा गया था । भगवान पीताम्बर धारण करके, उत्तरी वस्त्र ओढकर चांदी की खडाऊँ पहन कर प्रसाद ग्रहण करने लगे । लाखों भक्तों को जब भगवान दर्शन दिये उस समय भक्तों के आनंद समा नही रहे थे । आधारानंद स्वामी अपने ग्रंथमें लिखा है कि श्रीजी महाराज आदरज के अन्नकूट के उत्सव में अनेक स्म धारण करके जब भोजन करने पधारे उस समय सोने की थाली में अनेकों भोज्य पदार्थ, लेह्य, पोष्य, पेच पदार्थ रखा गया, जो अन्नकूट जैसा लग रहा था, उसी का रितुजी खांट द्वारा बडे संतो ने आरती उतरवाई । आकाश में ऐसे दिव्य दर्शन का लाभ लेने के लिए देवता, गन्धर्व, किन्नरो की भीड लग गयी । ऐसा भूतो न भविष्यति जिस मिष्ठान्न को जिस संत ने बनाया, उसका नाम लेकर खाने लगे । इसी तरह नमकीन पदार्थ चोष्य पदार्थ, लेह्य पदार्थ, जिसने जिस पदार्थ को बनाया उसे वे ग्रहण करते और बनाने वाले की प्रसंशा करते थे सम्पूर्ण दंढाव्य देश आज आनंद में डूबा हुआ था । कारण यह कि ऐसा अन्नकूट प्रथमवार यहाँ पर बनाया गया था । वहाँ के लोग स्वयं को भाग्यशाली मान रहे थे । सूर्य उदय हुआ उस समय से सूर्यास्त तक भक्तों की भीड खत्म ही नहीं हो रही थी । भगवान के दर्शन का भूखा भास्कर आज अपनी गति को भूल गया । आज का सूर्य अपने को धन्य मानने लगा था ।

प्रतिदिन दीपावली



- शा. सूर्यप्रकाश गुरु गोपालचरणदासजी (वांकानेर)

सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण की प्राप्ति ही सच्ची दीपावली हैं। इसी लिये नंद संतो ने गाया है "मारे दहाडे-दहाडे दीवाली" दीपावली नजदीक आती है तो सभी लोग मकान, दुकान, कारखाना को सफाई करवाते हैं रंग से रंगते हैं। नाना प्रकार से सुशोभित करते हैं। दीपक जलाते हैं। जिससे अंधकार दूर हो। लक्ष्मी का वास है। स्वयं स्नानादि करके सुंदर वस्त्र पहन कर सुगंधित तेल इत्र आदि का लेपन करके मिष्ठान्न खाते हैं, पटाका फोडते हैं। आनंद का वातावरण चारो तरफ दिखाई देता है. दीपावली के दिन क्रोध कलह न हो इसका विशेष ध्यान रखते हैं। जिससे आगामी वर्ष आनंद प्रमोद मे व्यतीत हो।

परंतु भगवान के भक्त की दीपावली जगत से न्यारी होती है। जगत का आनंद-प्रमोद गौड होता है। भक्त को भगवान से सम्बन्धित सत्संग में आनंद होता है। सत्संग करना तथा करना ही सच्चा दीपक है। अज्ञानरुपी अन्धकार को हृदय में से दूर करने के लिये सत्संग रुपी दीपक का आश्रय करता है। "सत्संग यही सच्चा दीपक है।" सत्संगि जीवन में सत्संग दीप की व्याख्या करते हुए भगवान स्वामिनारायण ने कहा है -

"सत्शब्देन परं ब्रह्म, साधवश्च
तदाश्रिताः।
प्रोक्ता स्तदीयो धर्मश्च, शास्त्रं
चैतत्त्रिकाश्रयम् ॥
(स.गी. प्र. ३-२२-४)

सत्शब्द से परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि सत् शब्द से स्वामिनारायण भगवान का (धर्मकुल के आश्रित) संतो को कहा है। सत् शब्द से भगवान द्वारा उपदिष्ट धर्म कहा गया है। इसके साथ परब्रह्म, संत, धर्म, इन तीन का जो शास्त्र प्रतिपादन करता है उसे भी सत् कहते हैं। सत्संग यही सत्यदीप है। दीपक प्रज्वलित करने के बाद बार-बार उस में तेल डालना पडता है। अन्यथा दीपक बुझ जायेगा और अंधकार हो जायेगा। इसी तरह सत्संग रुपी दीपक को सदा प्रगट रखने के लिये या प्रज्वलित (प्रकाशमय) रखने के लिए प्रतिदिन देव, शास्त्र, आचार्य, संत समागम आवश्यक है।

जगत के जीव जिस प्रकार मकान-दुकान से गन्दगी निकालते है, उसी तरह भक्त देहरुपी मकान में से काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान, मत्सर, ईर्ष्या, अभिमान, अहंकार इत्यादि दोषो को निकाल कर शरीर को शुद्ध निर्मल करके हृदय में परमात्मा का दर्शन करके अन्नकूट, पूजा-पाठ इत्यादि द्वारा दीपावली का आनंद लेते हैं। काम, क्रोधादिक दूर करना तो देवों को भी दुर्लभ है। परंतु भक्त के लिये सुर्लभ है। कारण यह कि भक्त उपरोक्त दोषों को दूर करने के लिये भगवान का आश्रय लेता है। ग.म.प्र. वचनामृत ७८ मे महाराज कहते हैं कि "जिसे सत्संग मे चाहना हो, सत्संग में दृढता हो, उसके सामने कोई खराब बोले तो सहन नहीं कर सकता है। जिस प्रकार परिवार में भी ऐसा होता है, यदि कोई परिवार के किसी भी सदस्य को कोई खराब बोलता है तो, सुनने वाला बर्दास्त नहीं कर पाता। इसी तरह जिसे सत्संग का पक्ष है - उसमें सदा दृढता रहेगी। जिस में यह भाव रहेगा वह संत तथा

सत्संग के प्रति कभी मान-मत्सर नहीं रहेगा । तामसी कर्म दूर करने के लिये महाराज सा. ९ वचनामृत में कहते हैं - ''जिसे संत एवं परमेश्वर में अटूट श्रद्धा हो एवं दृढ विश्वास हो उसके सामने चाहे जितना भी तामसी कर्म आये, उसका नाश हो जाता है । कलियुग का धर्म नष्ट होकर सत युग का धर्म आजाता है । इस लिये सच्चे हृदय से सत्संग करने से कोई दोष लगता नहीं है । ऐसा व्यक्ति देह रहते ही ब्रह्म स्म हो जाता है ।

भक्त के मन में जब मलिन विचार आने लगें तो महाराज ने टालने के उपाय ग.म.प्र. वचनामृत में बताया है ''सत्संग का प्रताप अतिशय बडा है, सत्संग के प्रताप से मलिनता को दूर कर सकता है, अन्यथा कोई उपाय नहीं है । जब रजोगुण दूर हो जायेगा तभी सतो गुण का आगमन सम्भव है।। सतोगुण से ही सत्संग सम्भव है । सत्संग से ही दुःख सहन करने की शक्ति बढती है । ग.अ.प्र. वचनामृत में महाराज कहते है कि जो दृढ सत्संगी हो, उसे कितना बडा दुःख आ जाय तो भी पीछे नहीं जाता है । ऐसा दृढ सत्संगी ही हमारा है । सत्संग की महिमा अपार है । सभी व्रत, जप, तप का फल सत्संग है । सत्संग के बल से भगवान को भक्त के आधीन होना पडता है । ग.अ.प्र. २ वचनामृत में महाराज कहते हैं कि सभी साधना का फल यह सत्संग है, इसी वात को श्रीमद् भागवत में भगवान श्रीकृष्ण ने उद्धव से कहा कि अष्टांग योग तथा सांख्य विचार एवं शास्त्र पठन, तप, त्याग, योग, भजन, दान, व्रतादिक द्वारा वश में नहीं होता हूँ, मात्र सत्संग द्वारा वश में होता हूं । सत्संग में दृढता आवे तभी भगवान के स्वस्म में निष्ठा होगी । ऐसे निष्ठा वाले भक्त को महाराज एकांतिक भक्त कहे हैं । ग.म.प्र. ९ वचनामृत में श्रीजी महाराज कहते हैं कि इस सत्संग में जिसकी प्रीति हुई उसके पुण्य का कोई अंत नहीं है । ऐसा समझकर सत्संगी को स्वयं को कृतार्थ मानना चाहिए । ऐसा कृतार्थ भक्त महाराज की प्रसन्नता प्राप्त कर लेता है । एकान्तिक कल्याण प्राप्त कर लेता है । ऐसा भक्त इस लोक तथा पर लोक में सदा स्वामिनारायण भगवान की सेवा में रहता है । ऐसे भक्त के लिए सदा दीपापली है । इसीलिये संतो ने गाया है - मारे दहाडे - दहाडे दीवाली भगवान का इस प्रकार का जिसे ज्ञान हो गया उसकी तो रोज दीपावली है । अन्यथा बाहर हजारो दीपक प्रगट करने से क्या फायदा भीतर तो अन्धकार ही है ।

पृष्ठ ५ से आगे.....

दीपावली आई...

आयेगी लेकिन आज की दीपावली को महाप्रभु अद्वितीय स्म एवं अमरत्व देने जा रहे है, इस वात को समझना तथा अपने जीवन में उतारना ही मोक्ष तत्व को प्राप्त करने जैसा है ।

श्रीहरिने कहा - हमें तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान, मत्सर, ईर्ष्या इत्यादिका स्पर्श ही नहीं होता । इसके साथ शब्द, स्पर्श, स्म, रस, गन्ध इन पांच विषयों का सदैव अभाव रहता है। लेकिन जितना भी हम अन्न, वस्त्रादि को ग्रहण करते हैं वह भक्त के भक्ति के अधीन होकर करते है । अपने सुख के लिए हम कुछ नहीं करते । हम जो खाते, पीते, सोते हैं वह भक्तों के प्रेम के लिये । यदि भक्तों में यह भाव आजाय कि शरीर के लिये करते हैं तो वह किया सब मिट्टी में मिल जायेगा, व्यर्थ का होगा । हम तो आकाश की तरह निर्लेप हैं । मन, कर्म, वचन से जो हमारे भक्त है हम अपनी देह भी उन्हीं के लिए रखते हैं । हमारे लिये तो तीनों लोक चौदह भुवन की संपत्ति तृण के समान है ।

अपने स्वस्म दर्शन की वात अत्यंत रहस्यात्मक ढग से समग्र तत्वज्ञान के साथ समझाकर, आध्यात्मिकता से रहस्य को समझाया है । इस रहस्य को जो समझ लेगा उसी की शरणागति चरितार्थ होगी । उसी की सर्वोत्कृष्ट निश्चत कहा जायेगा । उसी के हृदय में प्रेम का झरना अपने आप बहने लगेगा । इन उपरोक्त रहस्यों को लेश मात्र भी जीवन में जो उतार सकेगा तो उसके लिये प्रतिदिन दीपावली ही दीपावली है । यही श्रीहरि की अपेक्षा है ।

आनंदनी हेली

नये वर्ष का उपदेश

- शास्त्री हरिजीवनदास स्वामी

अरे आज क्यों लोग पहले उठ गये ? आज क्या है ? जहाँ सभी नव बजे तक उटते थे आज तो सूर्योदय से पूर्व उठ गये । सभी छोटे बडे अपने आत्मीयों को प्रेमपूर्वक जगा रहे हैं । कोई मां अपने बेटे को जगा रही है - जागो बेटा ! जल्दी नहा लो, मंदिर में प्रातः दर्शन के लिये जाना है ।

छोटे-बडे सभी नूतन वस्त्र पहने हैं । सुगन्धित द्रव्य लगाकर अपने इष्ट मित्रों से मिलने जा रहे हैं । कोई मंदिर जा रहे हैं । छोटे सभी अपने बडो का या माता-पिता को प्रणाम करके आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं । आज सारा देश आनंद का अनुभव कर रहा है । कहीं उदासीनता नजर नहीं आ रही है । परम्परा के वस्त्र तथा अलंकारों को पहनकर लोग बाहर निकल रहें है । स्त्री-पुरुष सभी ने आज का वातावरण नयनरम्य बना दिया है ।

छोटे-छोटे बच्चे घर आंगन में पटाका फोडकर आने वालों का स्वागत कर रहे है । वह आनेवाला कौन है ? वही जिसके स्वागत में सारा भारत देश का मंगल प्रभात जागृत हुआ है । सर्व नतूनवर्ष स्मी मेहमान का स्वागत हो रहा है । परंतु जिसके बल पर नूतन वर्ष एवं नूतन जिंदगी मिली है ऐसा विता वर्ष एवं परमात्मा को हम भूलने का प्रयास करते है, या भूल जाते है, यही हमारी भूल है ।

वात इस तरह हैं कि नूतन वर्ष के दिव्य अवसर पर स्वयं लक्ष्मी एवं नारायण ब्राह्मण स्म धारण करके किसी शेठ की दुकान में जाते हैं । भगवान कहते है लक्ष्मी जी यह शेठ आपका परम भक्त है, मैं उसी के पास जा रहा हूँ । ब्राह्म स्मधारी भगवान उस शेठ के पास जाते हैं और शेठ को राम राम करके, नूतन वर्ष के उपलक्ष्य में कुछ मांगते है । "यह बला आज ही के दिन आनी थी ।" इस तरह शेठ विचार करने लगा । बाद में तो अपने गल्ले में से एक स्मये का सिक्का निकाल रहा था उसी समय भगवान ने कहा शेठ ? आप अपने कमाई में से भगवान का भाग निकालते हैं या नहीं ? भाग का नाम सुनते ही शेठ गरम हो गया । शेठ ने कहा चले हो मांगने और भाग निकालने की बात करते हो ? तुरंत ही नौकर को आदेश दिया कि, इस आदमी को धक्का मारकर बाहर कर दो । लेकिन नौकर संस्कारी था परंतु उसने कहा ब्राह्मण को लात मारने का पेमेन्ट आप नहीं देते हैं । इतने में शेठ स्वयं उठा और पैर से मारा कि वह ब्राह्मण धूल में जाकर गिर गया । मुख में धूल चली गयी । यह देखकर लक्ष्मीजी को बहुत दुःख हुआ । मेरे पति की ऐसी दशा ?

प्रभु खडे होकर लक्ष्मी के पास गये । देवी ! ऐसे तुम्हारे भक्त है ! हमें तो हमेशा ऐसे आपके भक्तों से लात खानी पडती है । आपके भक्त हमारे जैसे पर उपकार-कृपा के बदले धक्के ही मारते हैं । यह सुनकर लक्ष्मीजी लज्जित हो गयी । अहों ! मेरे भक्त मेरे पति की ऐसी दशा करते हैं । धीरे से लक्ष्मीजी ने कहा, इसे कुछ शिक्षा दिजिए ! देवी ? ऐसा ही करता हूँ ।

भगवान नगर शेठ धनिक का स्मलिये । मस्तक पर सुन्दर पगडी बांधकर, सुवर्णालंकार से सुसज्ज हो कर अच्छे वस्त्र पहनकर उसी शेठ की दुकान पर गये । शेठ उस समय लघु शंका करने गया था । नगरे शेठजीकी कुर्सी पर बैठ गये । उसी सयम शेठ आया । शेठने कहा आप कौन हैं ? खडे हो जाओ । प्रभु बैठे ही रहे । शेठ के नौकर उसे धक्के मारकर गिरा दिये ।

खडा होकर शेठ घर की तरफ चल दिया । वह वहाँ शेठानी को जाकर कुछ कहे कि नगरशेठ संदेश भेंजा कि हमारा स्म लेकर कोई बहुरूपिया जा रहा है, दरवाजा मत खोलना । शेठ घर पहुँचा । दरवाजा खूब खटखटाया लेकिन शेठानी बहुरूपिया जानकर खोला ही नहीं । अंत में राजा के पास शेठ शिकायत करने गया । लेकिन उससे पहले नगर शेठ संदेश भेंजा की

मेरा स्मधारण करके कोई शेठ आपके पास जा रहा है, उसे यथोचित दंड दीजियेगा । शेठ राजा के पास पहुँचा । राजा उसकी बात सुने विना वहाँ से बाहर निकलवा दिया । अब शेठ परेशान हो गया । गाँव के बाहर एक मंदिर था वहाँ जाकर उदास होकर बैठ गया । वहीं पर ब्राह्मण वेश धारण करके भगवान भी पहुंच गये और कहने लेग शेठ ? प्रातः तुम्हारा मुख देखे तो पूरा दिन मुझे कुछ मिला ही नही । मेरा पूरा दिन विगड गया । "अरे, मेरा तो पूरा संसार बिगड गया - विना घर बार का हो गया हूँ । कंगाल हो गया हूँ । ऐसा कहकर शेठ रोने लगा । ब्राह्मणवेश धारी भगवान बोले शेठ ? अब तो भगवान का भाग निकालेगा न ?

उत्तर देते हुए भगवान के चरण पर गिर गया । भगवानने कहा जाओ अपना घर-बार सम्हालो और सुखी बनो । शेठ भगवान को दंडवत् करके दुकान पर आया । भगवान की कृपा मानी कि हमारा नूतनवर्ष बिगडते रह गया ।

सज्जनो ! पैसा मिलेगा ! गाडी, बंगला, सुख-सम्पत्ति सब कुछ मिलेगी । लेकिन सद्बुद्धि नहीं होगी तो लक्ष्मी जी स्वंय नारायण से कहेंगी कि आप कोई उपाय करिये । जैसे ऊपर शेठ पर उपाय बताई गयी । नारायण की पूजा नहीं करेंगे तो लक्ष्मीजी रुठ जाएगी । क्योंकि लक्ष्मीजी पतिव्रता हैं । जहाँ नारायण की पूजा नहीं होती वहाँ लक्ष्मीजी का स्थायीवास नहीं होता । लक्ष्मीजी तो भगवान के पक्के भक्तों पर ही कृपा करती हैं । दूसरी बात यह कि धन का घमंड बहुत खतरनाक होता है । धनिक लोग कितनी बार जान-अनजान में ईश्वर की छाती में लात मारते हैं । परंतु ईश्वर का भाग निकालने वाले की लक्ष्मी पवित्र एवं सात्विक हो जाती हैं । अब आप नूतन वर्ष में कोई निश्चित नीयम लेंगे क्या ? सभी वाचक मित्रों को नूतन वर्षाभिनंदन के साथ जयश्री स्वामिनारायण ।

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में दीपावली का शुभकार्यक्रम

धनतेरस : (आश्विन वद-१३) ता. ७-११-२००७ बुधवार को श्री लक्ष्मीपूजन, धन्वन्तरी जयंती, ठाकुरजी का अलंकार धोना ।

काली चौदस : (आश्विन वद-१४) ता. ८-११-२००७ गुरुवार ।

चतुर्दशी को श्री हनुमानजी का पूजन, आरती, सायंकाल ६-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ करकमलों से सम्पन्न होगा ।

दीपावली : (आश्विन वद-३०) ता. ९-११-२००७ शुक्रवार समूह शारदापूजन, लक्ष्मीपूजन, सायंकाल ५-३० बजे अहमदाबाद मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कर कमलों द्वारा विद्वान पंडितो द्वारा संपन्न होगा ।

नूतन वर्षाभिनंदन/अन्नकूटोत्सवः (कार्तिक शुक्ल-१) ता. १०-११-२००७ शनिवार, श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती प्रात : ५-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री उतारेंगे । इसके बाद अपने गद्दी स्थान पर प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ दर्शन देंगे ।

गोवर्धन पूजन प्रातः ९-०० बजे अन्नकूट आरती दोपहर १२-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न होगा । अन्नकूट दर्शन १२-०० से ४-३० तक होगा ।

अहमदाबाद मंदिर में परम्परागत समूह शारदापूजन

श्रीजी महाराज के सभी प्रिय भक्तों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से विद्वान पंडितो द्वारा अहमदाबाद मंदिर में प्रसादी के सभा मंडप में आश्विन कृष्ण-३० दीपोत्सव अमावास्या को ता. ९-११-२००७ शुक्रवार के दिन सायंकाल ०-०० बजे समूह शारदा पूजन-लेखिनी पूजन वेद विधि से शास्त्रोक्त विधि से धूमधाम के साथ सम्पन्न होगा । शारदा पूजन में लाभ लेने की इच्छावाले धर्म प्रेमी व्यापारी लोग अपना लेखा-जोखा पत्रक संख्या-२ नाम, पता, फोन का स्टीकर लगाकर लाल कपडे में बांधकर कोठार में जमाकर रसीद लेलें ।

लेखा पत्रक स्वीकार करने की अंतिम ता. ७-११-२००७ है । इसके बाद का पत्रक स्वीकार नहीं किया जायेगा । इसका सभी ख्याल रखें ।

- कोठारी स्वामी



श्रीजी के अपर स्वरुप

- डॉ. सी. एन. पारेख (M.D. Pad) (राजकोट)

श्रीजी महाराज भक्त वत्सल भगवान थे ठीक वैसे अपने प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी है। यह हमारे जीवन की घटना है जो आजभी आंखो के सामने प्रत्यक्ष दिखाई देती है। यही श्रीजी का अपर स्वरुप है। इसी में एकात्म भाव देता है। इस प्रकार की महिमा रखकर, प्रभु समझकर उसी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण का भाव रखें तो अक्षरांधिपति श्रीजी महाराज अपने समक्ष ही है। अपने भीतर है।

मुझे याद आती है कि सन् १९६८-६९ अर्थात् ३८-३९ वर्ष पूर्व जोडिया (जामनगर डिस्ट्रिक्ट) में मै गर्वमेन्ट सवेन्सरी में मेडिकल आफिसर के रुप में सर्विस करता था। गाँव में छोटा सा सुंदर हरि मंदिर है। दो संत मंदिर की सेवा में रहते हैं। मैं सायंकाल मंदिर दर्शन के लिये प्रति दिन जाता था।

एक दिन स्वामीने मुझे कहा कि अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री आज पधारने वाले है। इतनी ता.को. तथा इतने बजे दर्शन का लाभ लेने योग्य है। घर बैठे गंगा का लाभ जैसा है। मैंने तुरंत हाँ कर दिया। भादरा गाँव में आने की तैयारी चल रही थी सभी लोग गाँव के बाहर तक स्वागत के लिये गाजे बाजे से निकल पडे थे, उसी समय मैं भी पहुँचा। श्रीहरि के ६ठ्ठे वंशज के स्वागत की वात थी। सभा का भी आयोजन किया गया था। महाराजश्री सभा में अपने दिव्य ज्ञानोपदेश की बात की। आशीर्वचन दिया। अन्य संतोने भी यथा योग्य कथा प्रवचन किये। उस समय महाराजश्री की अलौकिक दिव्य मुद्रा देखकर ऐसा लगता था कि इस छटा को देखते ही रहें। हृदय में शांति एवं प्रसन्नता की अनुभूती हो रही थी। मन में ऐसा भाव आया कि महाराजश्री एकबार मेरे घर पदार्पण करें तो मेरा बेडा पार हो जाय। हम धन्य हो

जायेंगे । जोडिया गाँव महाराजश्री के चरण रज से पवित्र हो जायेगा । लेकिन यह शक्य नहीं था । कारण यह कि महाराजश्री का प्रोग्राम आज भी स्वामिनारायण अंक में वांचते है, कितनी कटोकटी रहती है । एक-एक मिनट का भी समय अलभ्य रहता है । सभी कार्यक्रम फिक्स होता है । फिर भी हिंमत करके सभा में से महंत के पास गये महंत को अपनी भावना व्यक्त की । तुरंत ही महंत स्वामी ने कहा - महाराजश्री को वापस अहमदाबाद जाना है । वहाँ दूसरा प्रोग्राम है । रास्ते में होता तो ठीक, लेकिन जोडीया गाँव तो आते जाते १० कि.मी. दूर है । इसलिये सम्भव नहीं । यह तो आप कह रहे है, एक बार महाराजश्री से पूछकर देख लीजिये, नहीं कर देंगे तो महाराज की ईच्छा मान लेंगे । स्वामी ने कहा कि तुरंत महाराज जोडिया आने को तैयार हो गये । यही भगवान की भक्त वत्सलता है । कितने भी प्रोग्राम हो लेकिन भक्त के अंदर की बात जानकर महाराज ने हा किया था । जोडिया गाँव में पदार्पण करके सम्पूर्ण गाँव को पावन दर दिया । घर में कोई तैयारी नहीं थी, मात्र शक्कर से सन्तुष्ट हुए । ऐसा कितना उदाहरण है । भगवान श्री स्वामिनारायण भी इसी तरह गाँव-गाँव भक्तों के घर पदार्पण करते थे । यद्यपि महाराज का समय निश्चि होता था । इस गाँव में इतना समय, फिर भी आगे भक्तों के प्रेम वश होकर समय परिवर्तित हो जाता था । साथ में संत, पार्षद, काठी दरबार सभी साथ चलते थे । जिसके यहाँ या जिस गाँव में रुकते थे । वहाँ सत्संगी के घर भोजन में नाना विध सुस्वादुभोजन स्वयं संत भक्तों को खिलाते थे । प्रेमानंद स्वामी ने लिखा है -

पीरसवा पधारे क्यारे डाबे रे,
खंभे खेखने आणी खेसने बांधो रे,
केड संगाथे ताणी पीर से लाडू रे,
जलेबी घनश्याम जणस जम्यनी रे,
अति घणी पीरसता कोई ना मुख
मां रे,
आपे लाडू हंसता पाछली रात्री रे..
प्रेमानंद

इस तरह कमर में दुपट्टा बांधकर अत्यंन्त प्रेम से लाडु, जलेबी सभी की थाली में पीरसते थे । जब अधिक भोजन हो जाता तो निद्रा - आलस्य आना स्वाभाविक है । लेकिन श्रीजी महाराज जब कह देते चलो तैयार हो जाओ तो पूर्वायोजित कार्यक्रम के अनुसार सभी तैयार हो जाते थे ।

सभी के साथ काठी दरबार भी रहते थे । श्रीजी महाराज जब उन्हें प्रेम से अधिक लड्डु खिला देते तो उन्हे भोजन के बाद आलस्य आता वे भगवान से कहते प्रभु इतना अधिक आपने खिलाया है कि अब घोड़े पर चढने की इच्छा नहीं है । शामतक आराम करके चलिये । महाराज सभी के सुख के लिये ऐसा भी करते थे ।

श्रीजी महाराज हाथ में जोमाला फेरते थे - वह भक्तों के लिये । भक्तों की रक्षा के लिये । ईसी तरह महाराज के अपर स्वस्थ बडे महाराजश्री प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तो समस्त हरिभक्तों के ऊपर अपार प्रेम रखते हैं । चाहे जितने भी थके हों लेकिन किसी के यहाँ पदार्पण के लिये ना नहीं किये । किसके लिये ? अपने प्रेमी भक्तों के लिये ।

श्रीजी महाराज को सच्चे अन्तःकरण से प्रार्थना करें कि प.पू. बडे महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम का काम सुन्दर ढंग से जल्दी तैयार हो जाय यही सभी संत, महंत, सत्संगियों की श्रीजी महाराज के चरणो में प्रार्थना है

श्री प्रभु हनुमानजी मंदिर, जमीयतपुरा कालीचौदश उत्सव

ता. ८-११-०७ के गुरुवार को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में नीचे क्रम अनुसार कार्यक्रम होंगे ।

सुबह : ८-०० से ११-३० मासतियज्ञ
शाम : ४-३० यज्ञ की पूर्णाहुति

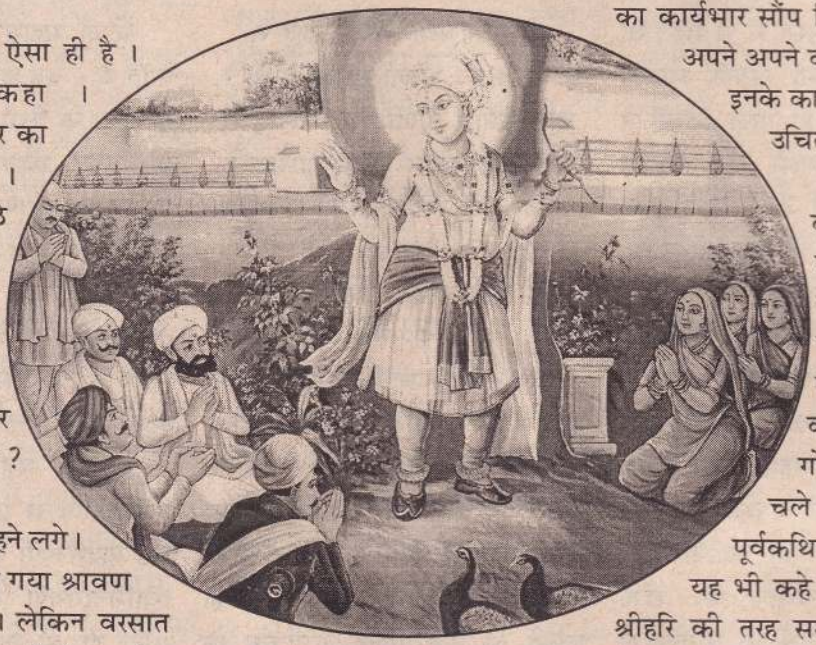
लि. महंत स्वामी, शा. घनश्यामप्रकाशदास

अनुवर्ती भंग (अनुकूल-आचरण)

- चन्द्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

अहो ! दादा खाचर, सुरा खाचर, अलैया खाचर, मातरा धाधल, लाधा ठक्कर, हरजी ठक्कर आप सभी मिलकर आये हो ! आओ आओ कुछ बात है क्या ? अपने अक्षर मंदिर में विराजमान श्रीहरि ने पूछा ।

हाँ महाराज कुछ ऐसा ही है । दादा खाचरने कहा । गोपीनाथजी के मंदिर का काम रुक गया है । कारीगर ऐसे ही बैठे हैं। पत्थर लाने वाले नहीं है । जबकि बावडी के पास बहुत सारे पत्थर हैं । ऐसा कैसे हुआ ? पत्थर लाने वाले कहाँ गये ? महाराजने पूछा ।



सोमला खाचर कहने लगे। आषाढ मास पूरा बीत गया श्रावण भी पुरा होने आया । लेकिन वरसात हुई नहीं । किसान काफी चिंतित है । पानी के अभाव में पशुओं को काफी तकलीफ हो रही है, पानी न होने से बारा भी नहीं हो रहा है। बैल क्या खायें ? क्या पीयें ? जब बुजाई नहीं होगी तो अन्न कहाँ से होगा ? पानी बरसेगा तभी नदी, तालाब, बावडी भरेगी, फसल होगी । अन्यथा सूखा के कारण सभी बेहाल हो रहे । बादल आता है लेकिन कहाँ चला जाता है । पता नहीं । किसान आकाश की तरफ देखते ही रह जा रहे हैं । यही कहने आये हैं कि वरसात न होने से ही मंदिर का काम रुका हुआ है । आप वरसात कराइये, जिससे काम प्रारम्भ हो जाय ।

हाँ महाराज ! इस समय बरसात की अति आवश्यकता है । आप इतनी कृपा करो बरसात हो, दूसरे भक्तने कहा । थोड़े समय के लिये सारा वातावरण शांत हो गया । सभी महाराज की वाणी सुनने के लिये आतुर थे । जैसे कोई बाबा चार वर्ष के बाद बोले की जा बच्चा बरसात नहीं होगा इसी प्रकार श्रीहरि बोले । बरसात होने की संभावना नहीं है । इन्द्र इस समय कोपायमान हैं इसलिये वरसात नहीं होगा ।

यह सुनकर भक्त मंडल निराश हो गया। दुष्काल की स्थिति देखकर अलैया खाचर महाराज से कहे कि आप इन्द्र कोआज्ञा करें तो अवश्य बरसेंगे ।

श्रीहरिने कहा यह ठीक है लेकिन हमने ब्रह्मांड के अधिकारियों को सभी का कार्यभार सौंप दिया है । ये सभी अपने अपने कार्य करते रहते हैं । इनके कार्य में बाधा डालना उचित नहीं है।

दादा खाचर ने कहा चलो जैसी प्रभु की इच्छा । सभी भक्त उठकर चल दिये । जाते समय किसीने कहा चलो गोपालानंद के पास चले । सभी वहाँ जाकर पूर्वकथित वात बताये और यह भी कहे कि हम आप को श्रीहरि की तरह समर्थ समझते हैं । जैसेभी हो आपको पानी वरसाना है, अन्यथा पानी विना सभी मर जायेगे ।

गोपालानंद स्वामीने पूछा की श्रीहरि आप सभी से कहा कहे ?

महाराजने तो ऐसा कहा कि इन्द्र इस समय कोपायमान है । बरसात नहीं होगा । हम लोगों ने कहा आप इन्द्र को आज्ञा किजिए कि वे बरसात करें । यह सुनकर श्रीहरिने कहा हम सभीको जो कार्यभार दिये है उसमे बाधा डालना उचित नहीं है ।

स्वामीने कहा कि इन्द्र देव तो

श्रीहरि के परिचारक हैं । आज्ञाहीन हैं । श्रीहरि की ईच्छा होय तो पलभरमें बरसात करें । लेकिन महाराज की ईच्छा नहीं है ऐसा लगता है । इसलिये हमें भी उनकी इच्छा के अनुसार वर्तन करना चाहिये । उनकी इच्छा में ही सुख है । वरसात हो या नहो महाराज हम सभी के हित कर्ता है । वे ही सभी की रक्षा करेंगे ।

श्रीहरि की जैसी इच्छा ऐसा कहकर वहाँ से सभीचल दिये । काठी दरबार आपस में कहने लगे कि हम महाराज के वशमें नहीं है । ढीले बोलने से काम नहीं चलता । अब दूसरा एक रास्ता और है । वाडी में सच्चिदानंद स्वामी रहते है, उन्हे बात बताई जाय। वे कभी-कभी महाराज से आगे बढकर काम कर देते हैं । महाराज को इसका पता चलेगा तो उन्हें निकाल देंगे, लेकिन स्वामी परोपकार में कुछ भी करने को तैयार हो जायेंगे । ऐसा विचार कर सभी स्वामी के यहाँ पहुँच गये । वहाँ सभी पूर्व कथित वात बताई । सच्चिदानंद स्वामीने कहा यह कठिन काम नहीं है । इन्द्र को वरसात करना ही होगा । लेकिन महाराज नाराज होगें । सभी एक स्वर में बोले महाराज नाराज होंगे तो हमसभी आपके साथ रहेंगे । उनसे कहेंगे कि इन्हे जो सजा देनी है वह हमें दीजिए, ए हमारे कहने से किये हैं । बाद में दादा, महाराज को मना लेंगे । आप इतना करिए कि इन्द्र इतना बरसात करें कि सारी धरती पानी से तहबोर हो जाय ।

इधर श्रीहरि भोजन करके निवास स्थान पर पहुँचे; उसी समय आकाश में वादल छा गये और बिजली चमकने लगी; ठन्ढी हवा चलने लगी देखते - देखते बरसात प्रारम्भ हुआ । बाहर से मिट्टी की भीनी सुगन्ध महाराज तक पहँची । महाराज सेवक से पूछे ब्रह्मचारी ! क्या बरसात हो रही है ?

हाँ महाराज ! बरसात हो रहा है । आज का दिन कितना अच्छा लग रहा है । आज सभी किसान प्रसन्न हो गये होंगे । पशु-पक्षी सभी को जीवन मिला । महाप्रभु ! भले ही महीने पीछे बरसात हुआ लेकिन खूब बरसात हो रहा है । इस वरसात होने मे आप ही का हाथ हैं । आपकी दया हुई ? लोटा का पानी देते हुए खुशी के साथ ब्रह्मचारी बात कर रहा था ।

ब्रह्मचारी ! हमने कोई दया नहीं की है । यह जो नहीं होना चाहिए वह हुआ । अपने में से किसने यह कार्य किया हैं । किसने बरसात करवाया ? बडे क्रोधमें चिल्ला उठे । सच्चिदानंद स्वामी इन्द्र के पास बैठे थे । महाराज की आवाज सुनते ही वहाँ से अपने वाडी में आ गये बरसात बन्द हो गया ।

श्रीहरि अक्षरदालान से दरबार में पधारे उत्तर की ओसारी के पीठ स्थान पर विराजमान हुए । सभी साधुओं को बुलवाया । सच्चिदानंद स्वामी भी डरते हुए आये । दादा खाचर, अलैया खाचर इत्यादि काठी दरबार आकर सभा में बैठे । महाराज मौन मुद्रा में बैठे है । सभी मौन, कोई बोल नही रहा है।

श्रीहरि को बोलने के लिए सोमला खाचर ने कहा कि महाराज ! चारो तरफ बरसात हुआ । सभी की चाहना पूर्ण हुई । यह सुनते ही श्रीजी महाराज क्रोधावेश में बोलने लगे कौन ऐसा है जो न करने योग्य काम करता है । अब कोई आप सब को कहने वाला नहीं है। सभी स्वतंत्र हो गये हैं ? कौन है वह ?

सच्चिदानंद स्वामी खडे हुए कि साथ में दादा खाचर, सोमला खाचर, अलैया खाचर, सुरा खाचर इत्यादि सभी खडे हो गये । हाथ जोडकर कहने लगे कि हे महाराज ? क्षमा कीजिये । हम सभी के विशेष आग्रह पर मुनिने यह कार्य किया है, इन्हे जो दंड देना है, हम सभी को दीजिए ।

श्रीहरिने कहा, मरजी के विरुद्ध जो वर्तन करे वह दोषी ही कहा जायेगा । ऐसे साधु की हमारे यहाँ जरुरत नहीं है। यहाँ से निकल जाइये, अन्यथा हम्हीं निकल जायेंगे ।

सच्चिदानंद तुरंत ही निकल गये । घेला नदी के किनारे एक शिलापट पर बैठ गये । एकमात्र श्रीहरि में मन लगा दिये । ध्यानस्थ हो गये । सम्पूर्ण रात वीत गयी । दूसरे दिन का दोपहर हो गया । भाद्रपद का सूर्य मानो निर्दयी होकर तपने लगा । जिस शिलापर बैठे थे वह जैसे अग्नि बनकर तपने लगी ।

भगवान श्रीहरि अक्षर मंदिर में पलंग पर सो रहे थे । आज अच्छी तरह भोजन भी नहीं किये थे । अस्वस्थ जैसे लग रहे थे । थोडी समय में उठ कर बैठ गये । ब्रह्मचारी पानी लाओ तो !

ब्रह्मचारी पानी लाया । आधी गिलास पानी पीकर बापस दे दिये इस करवट से उस करवट बदलते रहे बैठकर बार-बार पानी मांगते रहे बाद में ब्रह्मचारी से कहे कि आज मेरा गला क्यों सूख रहा है । पुनः पानी लाओं

एक बूद पानी पीकर पूछे कि वह साधु कहा गया ? उसकी कोई खोज किया ?

हे महाराज ! मैं तो बहुत जानता नहीं हूं लेकिन लोग कहते हैं कि धेला नदीं के किनारे खुल्ले आकाश के नीचे गर्मी में तप रहे हैं ।

जब हमें इतनी प्यास लग रही है तो उस साधु का क्या होता होगा । वह विना खाये-पीये कैसे होगा ? उसकी खबर किसी से मगाओ । मिश्री वाला पानी लाओ । यह पानी रतनजी के साथ उस साधु के पास भेंजो और साथ में लेकर आओ ऐसा कहना । रतनजी मियांजी के जाने के बाद कहे कि अब थोड़ा पसीना कम हुआ । दोनो पार्षद ध्यानस्थ मुनि को जगाया ।

श्रीहरि द्वारा प्रेषित जल पिलाया । बाद में कहे कि महाप्रभु आप को बुलाये हैं । मुनि के आनंद की सीमा न रही । झटपट उठकर चलने लगे । श्रीहरि के सामने दंड की तरह लेट गये । आंख में से अश्रुधारा बहती गयी और वे दंडवत करते गये । महाराज उन्हें उठाकर गले लगाये । बाद में कहने लगे हे महापुरुष ! अब आप अपने निवास स्थान पर जाइये कल हमारी माताजी का श्राध्ध तिथि है, भोजन करने पधारियेगा ।

साधु प्रसन्न हृदय से प्रभुको प्रणाम करके चल दिया । उस समय श्रीहरि प्रसन्न होकर मूलजी ब्रह्मचारी से कहे कि कल हमारी थाली का प्रसाद स्वामी को देना है यह भूलिएगा नहीं । यही महाप्रभु की उदारता का परिचायक है।



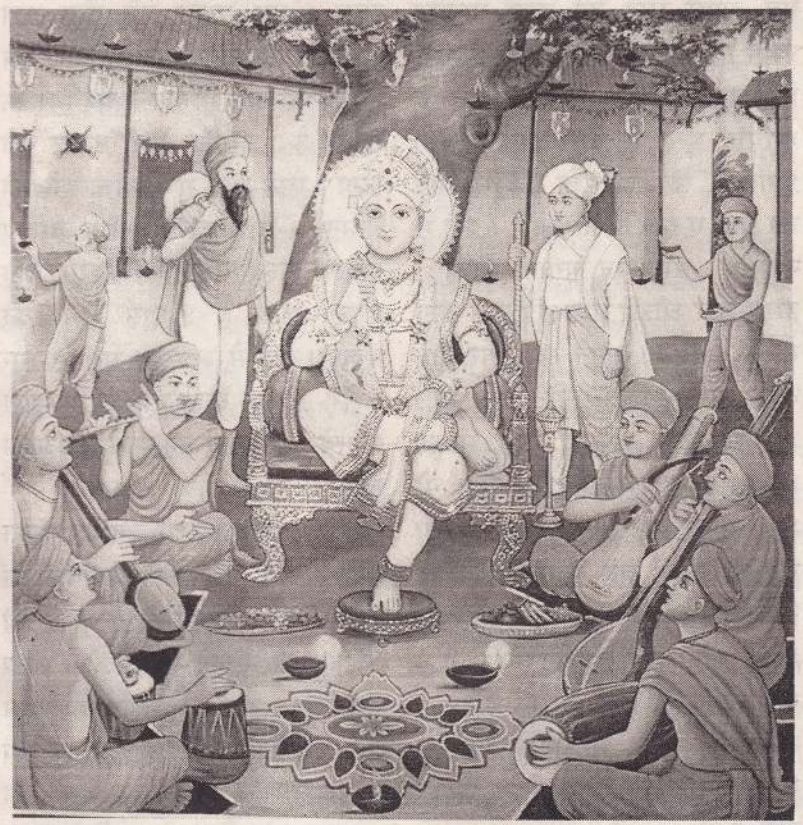
नरनारायणदेव ! अमे आव्या आपने द्वारे

हे देव ! अमे आव्या, आप ने द्वारे दर्शन करवाने,
दिव्य दर्शन करवाने, के भवसागर हरवाने, अमे आव्या .....
सूणी नरनारायणनुं नाम, दोड़ी आव्या आपने धाम,
परिपूर्ण करवा मनोकामना, अपनां दर्शन करवाने, अमे आव्या .....
हे देव ! अरजी सुनजो तत्काल, आप तो देव दीन दयाल,
आप छो परगट परचावाला, आपनां दर्शन करवाने, अमे आव्या .....
अमे कामी क्रोधी छीए पूरा, आप शरणे आव्या अधूरा,
आव्या दीन थई दुःखियारा, आपनां दर्शन करवाने, अमे आव्या .....
भक्ति मागी ए अम न्यारी, माया रहे छोटा संसारी,
अमे जीवन थाये निर्विकारी, आपनां दर्शन करवाने, अमे आव्या .....
आशा ऊंडी अनंतरनौ अमारी, आव्या अंतर मां धारी,
आपत्ति आप टालो अमारी, आपनां दर्शन करवाने, अमे आव्या .....
आत्यंतिक कल्याण करो अमारुं, साचुं मोक्ष तणुं छे बारुं,
स्मरण आखरे रहे आपनुं, आपनां दर्शन करवाने, अमे आव्या .....

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

दीपावली का दिन किस के लिये महत्व पूर्ण !

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)



दीपावली हिन्दुओं का सब से बडा त्यौहार है । जगत एवं भक्त दोनो दीपावली मानता है । परंतु दोनो की रीति अलग होती है । जगत को नाशवंत पदार्थो में, मायकि पदार्थो में स्नेह होता है जिससे उसी में रचे-पचे रहते है, उसी में सुख मानते हैं । जब कि भक्त लोग भगवान में सुख मानते हैं । भक्त लोग अपने आनंद को भगवान में अर्पण करके दीपावली मनाते हैं । संसारी लोग नये कपडे, मिठाई, पटाका, बाहर कहीं धूमने जाना घर को सजाना इत्यादि में मन लगाते हैं। जब कि भक्त लोग भगवान के लिये उत्तम भोज्य तैयार करते है । मंदिर को सजाते हैं । मंदिर में दर्शन करने जाते हैं। पूजन-अर्चन करते हैं । कथा सुनते हैं - सत्संग करते हैं । अब यह कहना नहीं होगा कि दीपावली का दिन किसके लिये यथार्थ महत्वपूर्ण है । जिसके जीवन में भगवान केन्द्र स्थान पर हों, जिसके जीवन में उत्तम संस्कार हो, सुख-शांति हो उसी के पास समृद्धि रहती है । इसीलिये ऐसे भक्त की तो ३६५ दिन दीपावली रहती है । जिसके जीवन में भगवान, धर्म, भक्ति, सत्संग नहीं है उसके जीवन में कभी दुःख, कभी क्लेश, चिंता, आदि, व्याधि, सदा बनी रहती है । अर्थात् ऐसे व्यक्ति के जीवन में सदा होली ही रहती, जीवन पर्यन्त संघर्ष-दुःख और मरने के बाद की स्थिति आप सभी जानते हो ।

स्वामिनारायण भगवान का उत्सव प्रिय है । जीवात्मा को अंतकाल में उत्सव के माध्यम से भगवान का स्मरण हो जाय तो उस जीव का कल्याण हो जायेगा । इसी हेतु से श्रीहरि दीपावली, जन्माष्टमी, एकादशी, रामनवमी, वसंत पंचमी, फूल दोलोत्सव, इत्यादि त्यौहारों को खूब धूमधाम से मनाते थे । श्रीहरिने गढपुर, वडताल, अहमदाबाद, आदरज इत्यादि अनेक धामों में दीपावली का उत्सव किया था । इसी संदर्भ मेंएक समय बडताल में श्रीहरि दीपावली का उत्सव किये थे जिस का उदाहरण अधोनिर्दिष्ट है -

आंवला से पूर्व दिशा में ऊँची बेदी पर पलंग के ऊपर पश्चिमाभिमुख श्रीहरि विराजमान थे । संत भक्त सम्मुख बैठे थे । धन तेरस के दिन निष्कुलानंद मुनिने तथा अन्य संतो ने दीपमाला की रचना की । आनंद मुनि तथा

महानुभावानंद मुनि को सेवा करने का भाव था। अपने स्वार्थ के लिये कोई कार्य नहीं करते थे। दोनो ने दीपक को बडे सुन्दर ढंग से सजाया था। सायंकाल हुआ दीपकों की माला को प्रज्वलित किया गया। वह शोभा देखने योग्य ही थी।

श्रीहरि जडीदार वस्त्र तथा सोना के आभूषण पहने हुए थे। उसके ऊपर फूल का हार पहने हुए थे। पुष्प के बाजूबन्द, गुच्छ तथा शरीर के प्रत्येक भाग को पुष्पों से आच्छादित किये हुए थे। सम्पूर्ण शरीर फूलों से ढंक गयी थी उनकी शरीर मानो कोई बगीचा हो ऐसी लग रही थी। चतुर्दशी के दिन तो इस से अधिक शोभा हुई। दीपावली के दिन आये हुए सभी भक्तजन एक-एक करके पूजा करते ही रहे।

दीपावली के दिन हरिभक्तों ने श्रीहरि को नाना बिध भोजन कराया। बाद में स्वयं प्रभु संत-भक्तों को भोजन कराये। सायंकाल का समय हुआ, इतने मेंसंतो ने दीपको की माला को प्रज्वलित किया। संतोने झांझ-मृदंग के साथ कीर्तन गाना प्रारम्भ किया। आपस में अभिनंदन करके श्रीहरि को अभिनन्द करके बैठ गये। इसके बाद श्रीहरि ने तात्विक बात प्रारम्भ की कि इस ब्रह्मांड में मायिक समझवाले मायिक पदार्थ में परम सुख मानते हैं। हरिभक्त अमायिक सुख में रस मानते हैं। दोनो सुख में रात-दिन का अन्तर है। मायिक सुध असत्य है। जिसे सत्य मानकर जीव भवसागर में भटकता रहता है। प्रहलाद एवं प्रियव्रत जैसे राजा भी सत्संग करके राज्य, समृद्धि एवं अपार सुख को तुच्छ मानकर त्याग किये हैं एवं सत्य की खोज में निकल पडे है। इसलिये हरिभक्त मायिक सुख में राग रखना नहीं। भगवान, संत, हरिभक्त एवं भगवान का धाम ए सब अमायिक है। इसी में जीव को अपनामन लगाना चाहिए। इस प्रकार श्रीहरि मध्यरात्रि तक बात करके सभी को अपने स्थान पर जाने की आज्ञा देकर स्वयं सोने चले गये।

दूसरे दिन नारायण नगर भोजन का प्रसंग था। अन्नकूट का दिन भी था। अनेक प्रकार के पक्वान, बनाये गये थे। रसोई जब तैयार हो गयी तो विशाल तम्बू के भीतर उच्च स्थान पर श्रीहरि को आसन पर बैठाकर सभी ने बडे आनंद के साथ भोजन कराया। साथ में श्रीहरिने भी अपने हाथो से सन्त-भक्तों को प्रेमपूर्वक भोजन कराया।

सभी के भोजन के बाद श्रीहरि आंबले के नीचे आकर बैठे वहीं पर सभा हुई। सुंदर गाजे बाजे के साथ कीर्तन हुआ। सभी श्रीहरि का ध्यान करके बैठे थे। आरती पूर्ण होने के बाद श्रीहरिने कहा चारोतरफ एवं गुजरात में बहुत हरिभक्त हैं। उनसे आप सभी कहना कि शास्त्रों में जो नीति नीयम बताया गया है, उसी के अनुसार वर्तन करेंगे। ऐसा करने वाला सच्चा त्यागी है। जो धर्म-नियम का त्याग करके मात्र पेट भरने के लिये त्यागी हुआ है, उसकी जो सत्संगी सेवा करेगा उसका मोक्ष कभी नहीं होगा। इस प्रकार की स्पष्ट वात सभीको समझाना। नारी, धन, पुत्र को ही जो सार मानता है वह पशु के समान है। उसका कभी उद्धार नही होगा। ऐसी वात सभी भक्तजनो को बताना। जो सत्संग करेंगा उसका अवश्य कल्याण होगा। सत्संग विना जीवन व्यर्थ है। ऐसा सभी को बताना। यहाँ से अब हम सुबह गढपुर चलेंगे। ऐसा कहकर संतो को गले लगाये। हरिभक्तों को जाने की आज्ञा दी।

हम सभी को "श्री स्वामिनारायण मासिक" के माध्मय से दीपावली के शुभ अवसर पर श्रीहरि के मुख की अमृतवाणी वांचने को मिली। मंदिर में प्रतिदिन श्रीहरि के दर्शन का लाभ मिला। श्रीहरि के अपर स्वस्थ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हस्ताक्षर पत्र भी "श्री स्वामिनारायण मासिक द्वारा वांचने को मिलेगा। इसके अलांवा इस सुनहरे पर्व पर पूज्य महाराजश्री के दर्शन होते ही अपनी दीपवली में क्या बाकी रहजायेगा।

सं. १८८० में श्रीहरि ने दीपावली का उत्सव खूब धूमधाम से किया था। उस समय समोला खाचर ने कहा - महाराज ? यह दीपावली का उत्सव कब से प्रारम्भ हुआ। महाराज ने कहा, बली राजा को भगवान ने पाताल का राज्य दिया तथा स्वयं वही भगवान

को रहना पड़ा, इसके साथ स्वयं लक्ष्मी प्रभु के लिए वही आयीं उसी समय से दीपावली प्रारम्भ हुई । आश्विन कृष्ण अमावास्या के दिन राजा बली को पाताल का राज्य मिला था । इसीलिये सायंकाल दीपमाला प्रज्वलित करते क्योंकि योजना राक्षसी का भय रहता था, उस भय से बचने के लिये यह प्रक्रिया प्रारम्भ की गयी थी । दीपावली को शास्त्र में कौमुदी कहते है । इस दिन को आनंद में बिताया जाता है, जिससे सम्पूर्ण वर्ष आनंद में बीते । इसलिये इस दिन उत्सव, कीर्तन भजन एवं भगवानको नैवेद्य को अर्पित करना चाहिए । प्रभु बलि के दरवाजे पर सदा रहते है । बलि राजा प्रत्येक अमावास्या का उत्सव करते हैं, इसलिये प्रत्येक अमावास्या को भगवान हाथ में ढाल, तरवार, तीर, बरछी, कमान इत्यादी को धारण करते हैं ।

धन तेरस को धनकी पूजा तथा दीपावली के दिन लक्ष्मीपूजा-सरस्वती पूजा- कुबेर पूजा इत्यादि करते हैं । काली चतुर्दशी के दिन हनुमानजी का दर्शन पूजन करना चाहिये । शिक्षापत्री में यह विधान श्रीहरि ने स्वंय निरूपित किया हैं । इसी आज्ञाको ध्यान में रखकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री काली चतुर्दशी के दिन सायंकाल कालूपूर मंदिर में श्री हनुमानजी का पूजन करते हैं । अपने साथ एक विशाल अर्क का पुष्पहार भी लाते हैं जिसे पूजन करके पहनाते हैं ।

प्रेमानंद स्वामी उत्सव के पद लिखे है -

आसोमास अंधारी चौदश,
पूजित पवन कुमार हो ।
आपे सुख संपति मन वांचित
काये कष्ट हजार ते ।
उत्सव आज पवन सुत को शुभ,
गाइये अति प्यार हो ।
तेल सिन्दुर सुभगत चर्चा -
पहेरवो उर हार हो ।
करी पक्वान जमाडे ! पवन सुत
करशे जय जय कार हो .... उत्सव
धूप दीप करी शुभआरती
मांगिये बाम्बार हो, प्रेमानंद कहे -
रामदूत आपो, प्रभु प्रीत अपार हो...

उत्सव

अपने मंदिरो में दीपावली का वातावरण अति मनमोहक होता है । श्रीहरि तथा श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आजके दिन खूब प्रसन्न होते हैं । भक्तों की भीड दर्शन के लिये लगी रहती है । नूतन वर्ष में सभी सम्बन्धी तथा मित्रों को मिलकर मंगला आरती करने के लिये प्रातः मंदिर पहुंच जाने का आनंद ही कुछ और होता है । कलम से मात्र लिखा जा सकता है । अनुभूति के लिये तोमंदिर जाना ही पडेगा ।

दीपावली आवे तो सभी को एक गणित तो अवश्य करलेनी चाहिये की काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंतःशत्रु, ईर्ष्या आदि कितना निर्बल हुए हैं ? तथा श्रीहरि के प्रति स्नेहस्मी भक्ति कीतनी अच्छी है । संत-हरिभक्तों के प्रति कितनी आत्मीयता हुई । सदाचार स्मी धर्म में कितनी दृढता आयी है ? श्रीहरि द्वारा अस्थापित दोनो गादी के प्रति कितनी दृढता हुई है ? ऐसी वात ग.प्र.म. ३८ में श्रीहरिने की है -

सभी सुनो - जो सत्संगी हुए है उन्हे यह विचार करना चाहिए कि वे जब से सत्संग में आये तब से क्रमशः प्रथम वर्ष में मेरा मत ऐसा था, बाद में ऐसा था - इत्यादि । भगवान में इतनी आस्था थी और जगत में में इतनी थी। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष की गणित करनी चाहिये । अपने मन में जगत की जितनी वासना रह गयी हो उसे धीरे-धीरे कम करते जाना चाहिये - अन्यथा वासना बढती ही जाइयेगी । जिस प्रकार बनिया का कर्ज तथा उसका व्याज रोज रोज का नहीं दे तो बढता जाता है, अन्त में एक साथ देना कठिन हो जाता है । यदि रोज-रोज का देते जायें तो भार नहि रहेगा । ठीक यही स्थिति अपने वासना की है । इस पर सभी को सदा विचार करना चाहिये ।

कितने उमरदार लोग ऐसा कहतेहै कि "तुम्हारीअपेक्षा हमने अधिक दीपावली देखीहै, तुम्हे क्या खबर ?" ध्रुव - प्रहलाद पांच वर्ष की उम्र के थे। परंतु भगवान का उन्हे ज्ञान हो गया इसलिये उस छोटी उम्र में ही भगवान मिल गये तो उनके जीवन की दीवाली हो गयी ?? जो जन्म-मरण के बन्धन से छूट गये उनकादीपक जला उनकी दीवाली हुई, अन्यथा अन्य का जो जब भगवान का ज्ञान होगा तब दीपावली (दीवाली) होगी !!!!!

प्रेम के भूखे हैं पदार्थ के नहीं

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

जिसे भगवान के सिवाय जगत में वासना न होतो वह ब्रह्मस्वस्म होकर भगवान की भक्ति करता है तो एकांतिक भक्त कहलाता है ।

भाडेर के राजा होते हुए भी भगवानकी एवं संतो की स्वयं सेवा करते थे । भगवान स्वामिनारायण का वचन पालने के लिए ; उन्हें प्रसन्न रखने के लिए; अपने तन, मन, धन, तथा जीवन को न्यौछावर करने के लिए तत्पर थे । जैसे वे भक्तिमान थे वैसी उनकी पत्नी थी । एक बार महाराज विचरण करते हुए आये वहाँ पर दोनों दंपती ने महाराज का उत्तम स्वागत किया । अपने घर लाकर बिराजमान किए ।

आज पातलभाई के पत्नी की खुशी की सीमा न रही । ''आज मारे ओरडे रे आव्या अविनाशी अलबेल .....'' इस किर्तन की पंक्ति को दुहराते हुए सीढ़ी से उतकर दर्शन करने नीचे आयीं और कहीं कि महाराज ! आपकी आज्ञा हो तो दूध लाउँ । भोजन में थोड़ा समय ।

महाराज ने कहा ''जो तैयार हो वह लाओ. खुब भुख लगी है । भाडेर की रानी इतना भाव विभोर हो गयी कि दूध के बदले छाछ पिलाने लगी । भाव के भुखे भगवान उसके प्रेम के वशिभूत होकर संम्पूर्ण छाछ पी गये । बडे आनंद में आकर कहे की दूध खूब मीठा था ।

नही महाराज ! हमारी भैंस का दूध बहुत मीठा है; और लेंगे क्यां ? महाराज उसका प्रेम देखकर नहीं नहीं करते हुए तीन तसला छाछ पी गये । पातलभाई की पत्नी के मन मे खूब आनंद हुआ कि आज परमात्मा पेट भर के दूध पी लिए ।

महाराज उस समय उपस्थित हरिभक्तो से कहे कि ''सेवा भावकी सतत जागृति तथा दृढ़ निश्चय होना आवश्यक है । जिसमें श्रद्धा हो उसी पर परमात्मा प्रसन्न होते हैं । अपने जीवन को सार्थक करना हो तो परमात्मा की शरणागति स्वीकार करनी चाहिए । जब श्रद्धा नहीं होगी तो परमात्मा का दर्शन कैसे होगा । कर्मानुष्ठान से ज्ञान, ज्ञान से भक्ति तथा भक्ति द्वारा भगवान के दर्शन का आनंद मिलता है ।

बाद में भोजन तैयार किया । महाराज के भोजन कें बाद पातलभाई भोजन किये । भोजन के बाद पातलभाई भूल गइ क्या ? यह तो दूध है । लेकिन दूध भरा हैं; छाछ कम है । अरे । महाराज को मैने छाछ पिलादिया है । बडा अपराध हुआ । खट्ठी छाछ महारज पी गये । पत्नी खूब पछताने लगी । महाराज से माफी मांगने लगी । महाराज ने कहा हम प्रेम के भुखे है । पदार्थ के नहीं । आप प्रेम से पीलाइ उसमें प्रेम की मीठास थी । इसलिए खूब स्वादिष्ट था । विदुर के घर जब गये उस समय विदुराणी केला की जगह छिलका खिलाइ थी । उसमें प्रेम का माधुर्य था । विदाई के समय महाराज ने कहा पातलभाई ! भगवान को जो भुला दें उनका साथ कभी मत देना । भगवान को किसने भुलाया खबर है ? भजकलदास आप की पत्नी तो भावना एवं भक्ति से पुर्ण है । इसलिए भाग्यशाली हो ।

नवा वर्ष का डट्टा तथा कलन्डर प्रकाशित हो गया है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अमदाबाद की तरफ से संवत २०६५ की साल का सुंदर कलात्मक डट्टा प्रकाशित हो गया है । इस जनवरी २००८ दिसम्बर २००८ तक का सर्वोपरि श्रीजी महाराज ने जिन नव मंदिरो में ठारुजी की प्रतिष्ठा की थी उनके चित्र के साथ छपैयाधाम एवं बाल स्वस्म घनश्याम महाराज तथा प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझीयम की तस्वीर तथा अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज की तस्वीर के साथ १४ तस्वीर वाला केलेन्डर प्रकाशीत हो गया है तो जल्दी से साहित्य केन्द्र से प्राप्त कर ले ।

दीपावली पर्व में श्रीहरि दर्शन

- पटेल गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)

भक्तिर्माहात्म्ययुक्ता त्वयि वृषतनये
स्याच्च धर्मादियुक्ता
प्रत्यूहाद्रक्षणं मे कुरु
मदनमुखाधर्मसर्गातु तस्याम् ।
ज्ञानादौ तत्सहाये भवतुं दृढतरा च
स्थिति धर्मवंशे
हे नात प्रार्थये त्वां मुहुरिति
सहजानन्द तदेहि मे त्वम् ॥

इस जीव को काल, माया एवं कर्म का भय, कर्म के बन्धन स्म यमराज का भय, जगत के व्यवहार का भय, इतना ही उठते, बैठते, जागते, सोते कहाँ भय नहीं है । जहाँ रहते है वहाँ की प्रजा का भय, जहाँ देखो वह भय ही भय है । सभी लोग जगत का भय तो रखते है, लेकिन परमात्मा का भय नहीं रखते । यदि परमात्मा का भय रखते तो अन्य सभी भय खत्म हो जाता । भगवान के भक्तो को संसार का भय भले हो लेकिन भगवान की आज्ञानुसार वर्तन करने वाले को कभी पीडा नहीं होती -

अपि मूरिफलं कर्म धर्मापेतं भवेद्यदि ।
आचर्यं तर्हि तन्नैव धर्म:
सवार्थदोऽस्ति हि ॥

अर्थात् धर्म रहित कर्म नहीं करना चाहिये क्योंकि धर्म ही सभी पुस्त्रार्थ का फल है । इसलिये किसी लोभ के कारण धर्म का त्याग नहीं करना चाहिये । इसलिये श्रीहरि ही पूर्ण पुस्त्रोत्तम परमात्मा है, यह बात सदा ध्यान में रखकर भजन-भक्ति करना चाहिये । धर्मकुल ही अपना कुल है । मुक्त ही अपने बान्धव हैं । सत्संग में प्रीति, शांति, तृप्ति, संतोष रखना ही सुखानन्द है । धर्मकुल की संतो की, गरीब की, ब्राह्मण की, गाय की अनाथ की सेवा करना सत्कार्य है । हरिदर्शन ही प्रकाश है । उस प्रकाश को अपने जीवन में उतारना ही दीपावली है ।

अनंत कोटि ब्रह्मां के नियंता, पर ब्रह्म परमात्मा जगत के पोषक, अद्वितीय ज्ञानी, सभी का नियामक अनादि नारायण एक ही हैं. वही सभी जीव मात्र को धारण करने वाले है, प्रेरक है, रक्षक हैं । भगवान इस ब्रह्मांड में जहाँ जैसा कार्य हो वहाँ वैसा स्वस्म धारण करते हैं । इसी तरह कलियुग में पूर्ण पुस्त्रोत्तम श्री स्वामिनारायण के स्म में प्रगट हुए हैं । जिसका एक तेजोमय बाह्य दृश्य स्वस्म तथा दूसरा आंतरिक कल्याणमय आनंद स्वस्म है । श्रीहरि का दोनो स्वस्म दर्शन अर्थात् अवतार तथा अवतारी के स्वस्म का दर्शन, जो श्रीहरि के प्रागट्य जीवन का हम दीपावली पर्व में अन्नकूटोत्सव द्वारा अनुभव करते हैं । श्रीहरि के जीवन लीला का प्रसंगो में श्रीहरि का आदरज (त. कलोल) गाँव में आना और गाँव के बाहर तालाब के किनारे जामुन के वृक्ष के नीचे श्वेतचादर सहित गद्दे पर विसजमान होना, श्वेत धोती, श्वेत उत्तरीय वस्त्र श्वेत पगडी, तथा संत भक्तों के साथ मंदहास करते हुए दर्शन देना तथा अन्नकूटोत्सव करके वि.स. १८६७ की साल में अनंत स्म होकर अन्न कूट का सभी प्रसाद खाये, वे ही एक स्वस्म में सभा में बैठकर संत हरिभक्त के साथ कथा प्रवचन कर रहे हैं । उसी समय मुक्तानंद स्वामी वडोदरा की सभा को जीत कर श्रीहरि के सन्मुख पधारे, उस समय श्रीहरि स्वयं कहे कि मुक्तानंद स्वामी आप सभाजीत कर आये अच्छा किये । यह बात सुनकर हर्षानंद एवं निर्किकल्यानंद स्वामी में अवगुण आया और महाराज से कहने लगे, महाराज ! हमे आज्ञा दिये होते तो हम भी जीत कर आ गये होते । यह अहंकार युक्त वाणी सुनकर श्रीहरि का स्वस्म बदल गया ।

मदन मद उतारे श्याम अंबुज नैन,
नयन विशाल करुणा सागर श्रीहरि,
गोवर्धन देख धीर गंभीर बने श्रीहरि ॥

महाराज का हास्य वदन, धीर-गंभीर देखकर सभा स्तब्ध रह गयी । उसी समय श्रीहरि बोले "हवे अमे वनमां जईशुं ना राजी थईने विदाय देशो तो कागणे मेलाप राखिशुं" यह सुनकर भक्त लोग उदास हो गये । श्रीहरि को कहने लगे कि आप जो कहेंगे वहीं हम करेगे । तब श्रीहरि अपने सच्चिदानंद स्वस्म को धारण करके कहने लगे "अब अपना सत्संग बहुत बढ गया है - इसलिये बडे संतो में नित्यानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, चैतन्यानंद स्वामी

इत्यादि को सद्गुरु की पदवी देकर, उन्हें बैल गाडी पर बैठाकर उनकी आरती उतार कर "संत सेवा प्रभु सेवा" इस तत्वार्थ को चरितार्थ करके दीपावली के ज्ञानदीपक को प्रगट करते हुए कहे कि जिसे ये प्रत्यक्ष भगवान दिखाई दिये उस भगवान के लिये तथा उनके भक्त (संत) के लिये क्या असंभव है। लोक लाज को त्याग कर, कुटुम्ब का त्याग कर, राज्य सुख का त्याग कर, धन का त्याग कर, जो भगवान की आज्ञा मेंअपना वर्तन करता है उसका सर्व विध ही हित होता है, कभी अमंगल नही होता। ये प्रत्यक्ष भगवान है सभी गुरुओं के गुरु है। सभी योगियों के योगी हैं। प्रभु मात्र एकांतिक भक्त को दिखाई देते हैं। श्रीहरि की महिमा तथा संत-आचार्य धर्मकुल की महिमा को जानते हैं तथा इन में जिसे निश्चय हो उसी की दीपावली है।

इस प्रकार राग-द्वेष से रहित होकर अविद्या को दूर करने का संदेश लेकर शरदऋतु की पूर्णिमा के चन्द्र के तेज में श्रीहरि के सच्चिदानंद स्वरूप का दर्शन होते ही चाँद निकलता है -

मारा पुण्य तमो नहि पार,
वर मळ्या छे जगदा धार।
मारा उरमा की धो व्हाले वास,
हूं तो थई छुं स्वामीनी दास।
मुने अखंड एजातण आप्युं,
मारुं जन्ममरण दुःख काढ्युं।
मारो सुफल जन्म व्हाले कीधो,
में तो हरि साथे ल्हावो लीधो।
मैं तो अखंड हरि गुण गावुं,
हवे पछी ते भव न आवुं।
मल्यो पुरुषोत्तम बहुनामी,
व्हाला प्रेम सखी नो स्वामी।

श्रीहरि एवं श्रीहरि का धर्मकुल आश्रित सत्संग मिला है तो उनके स्वरूप का दर्शन करें।

श्रीहरि ने अपने आश्रितों के कल्याणार्थ मांगरोल में इमिली के वृक्ष के नीचे सभा करके विराजमान थे। उसी समय हरिभक्त हाथ जोडकर महाराज से पूछे कि हे महाराज ! हम सभी के कल्याण के लिये सद्पदेश दीजिये, तब श्रीहरिने नारायण गीता चारो वर्णो के लिए उपयोगी है यह बताया। इसके साथ भक्त के छ नित्य कर्म भी बताये। (१) स्नान करना, अर्थात् मंदिर में या पवित्र स्थान में स्थिर आसन पर लगाकर बैठना। (२) श्रीहरि की मूर्ति का ध्यान करना। (३) पूजा करना (४) सत्पुरुषों का समागम करना (५) भगवान के गुणानुवाद को सुनना (६) भगवान के मंत्र का (श्री स्वामिनारायण नमः) जप करना, शिक्षापत्री का नित्य निमय पूर्वक वांचन करना। इन सभी के रहस्य को समझना ही दीपावली है। जिस में नूतन वर्ष के आरंभ में स्वसुखाय पर हिताय श्रीहरि के अक्षरधाम को प्राप्त करने की दीपावली। इस दीपावली के माध्यम से हृदय गुफा अंधकार को निकालना, असत्य, हिंसा, दुराचार, अंधश्रद्धा, मंत्र-तंत्र, वशीकरण इत्यादि से दूर रहना, अंतःशत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, निंदा-प्रशंसा इत्यादि प्रकृति को दूर करना, श्रीहरि को आगे रखकर निष्कपट भाव से दया, मैत्री, विनय का भाव रखना, दंभ-पाखंड से दूर रहकर अपने पवित्र आचरण द्वारा स्वजीवन एवं परजीवन को योग्य मार्ग देना ही दीपावली है। आचार्य, संत, हरिभक्त सभी के भीतर परमात्मा का वास है ऐसा मानकर श्रीहरि द्वारा प्रवर्तित नीति नियम का पालन करना ही जीवन की सार्थकता है।

न्यु दिल्ही श्री स्वामिनारायण मंदिर एड्रेश तथा फोन में सुधार की सूचना

२१, गुजरात विहार, जमुना पार,
प्रीत विहार पेट्रोल पम्प के सामने, विकास मार्ग,
न्यु दिल्ही-११००९२
फोन : (०११) २२४९८७१

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हरिद्वार श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत पद पर मूली के शास्त्री स्वामी व्रजवल्लभदासजी गुरु स.गु. स्वामी धर्मवल्लभदासजी की नियुक्ति की है।



सखी हैडे ते हरख न माय, आ दीवाली रे



- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

दिपावली आते ही सभी पशु प्राणी इतना ही नहीं सारी प्रकृति आनंदित हो उठती है । मानव ऐसे भी उत्सव प्रिय है। भगवान स्वामिनारायण तो उत्सवों की हारमाला पिरोकर गये हैं । इसी बहाने अंत समय में प्रभु की झांकी का भी दर्शन हो जाय तो जीव का कल्याण हो जायेगा इसी हेतु से प्रभु ने उत्सवों की परम्परा बनाई ।

नंद संतो ने भी श्रीहरि को केन्द्र स्थान पर रखकर कीर्तनों की रचना की थी । कीर्तन बनाते समय श्रीहरि को अपने हृदय में रखकर तद्स्म रचना करते थे । आज उनकी सुवास चारो तरफ फैल रही है । नंद संतो की रचना सम्प्रदाय की धरोहर है । प्रत्येक उत्सवों को ध्यान में रखकर कीर्तनों की रचना करते थे । ब्रह्मानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी, देवानंद स्वामी के हृदय में से कीर्तन अपने आप निकल आते थे । उनके हृदय में श्रीहरि की दिव्य माधुर्य मूर्ति अखंड विराजमान रहती थी । मूर्ति का स्मरण करते ही कीर्तन की धारा वह पड़ती थी । इसमें भी उत्सव का प्रसंग तो तादृश चित्रित हो जाता था मानो श्रीहरि साक्षात् सामने खड़े हो, आज भी उस स्म का दर्शन उत्सवों के माध्यम से होता रहता है ।

सनातन धर्म में जितने उत्सव है, प्राय: उनको ध्यान में रखकर सभी कीर्तन हैं । वसंत पंचमी, फूलदोलोत्सव, शिवरात्री, रामनवमी, श्रीहरि जयंती, श्रावण का झूलोत्सव, एकादशी, रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, गणेश चतुर्थी, राधाष्टमी, जलयात्रा, एकादशी, विजया दशमी, शरद पूर्णिमा, दीपावली, धनतेरस, काली चतुर्दशी, अन्नकूटोत्सव, इत्यादि पर्वों के अलग अलग कीर्तन है ।

ब्रह्मानंद स्वामी ने दीपोत्सव पर्व पर बडे सुन्दर कीर्तन लिखे हैं । वे कीर्तन आज भी संत-भक्तों द्वारा गाँवो गाँवो में अविरत वह रहे हैं । अपने संप्रदाय में ही नहीं बल्कि अन्य स्थलों पर भी ये गीत गाकर लोग आनन्द का अनुभव करते हैं । काषाय वस्त्रों को धारण किये संतो के बीच में श्वेत वस्त्रधारी श्रीहरि ऐसे सुशोभित लगते हैं कि जैसे पारिजात के पुष्प खिले हों । जोते हरि केवा हरखथी मने आवकारे छे । सभी को ऐसी प्रतीति होती है । सर्वोपरि श्रीहरि की यही विशेषता है ।

ब्रह्मानंद स्वामी धनतेरस के दिन श्रीहरि को इस तरह वर्णन किये हैं -

सखी उत्सवनो दिन आज,
धन्य धन तेरसने ।
मल्या रंगीलो व्रजराज,
धन्य धन तेरसने ।
मारे मोहन आव्या घेर,
आज थई छे लीला लहर ।
जेनी नित्य जोती हूँ तो वाट,
ते वहालो आवी बैठा खाट ।
मारां पुण्य तणों नहीं पार,
आव्या मंदिर मोरार ।
ब्रह्मानंद कहे थई निहाल,
लटकार्यो पधार्या लाल ।

महाराज जिस उत्सव में कहे हो उसी उत्सव में भक्त आते थे अन्य दिन भक्त आवें तो उनके रहने की व्यस्था अन्यत्र होती थी लेकिन धनतेरस से व्यवस्था उत्सव के निमित्त होती थी । आकर दर्शन करके लोगो के मन में इस तरह का भाव होता -

"मल्या रंगाली व्रजराज, धन्य धन तेरस ने"

दर्शन के बाद भक्तों का हृदय गाँ उठता है -

आव्या रसियो जादवराय,
तेरस धन्य तूंने ।
हूँ तो प्रेमे लागी पाय,
तेरस धन्य तूंने ।
में तो मोतीडे वधाव्या माव,
थयो अंतर अधिक उछाव ।
कीधी मन नी पूरी हाम,
बोलावी मुने सुंदर श्याम ।
में तो चंदन की धी गार,
सज्या शोभिता शणगार ।
भेट्या श्याम चतुर व्रज चंद,
बलिहारी ब्रह्मानंद ।

नयन भरकर जब प्रभु का अंतर में दर्शन हुआ हो तो स्वाभाविक गीत अपने आप बाहर आजाती है -

नेणे निरख्या नटवरनाथ,
दिन धन तेरसनो ।
शोभे व्रजवासीने साथ,
दिन थन तेरसनो ।
आज गाइये मंगल गीत,
हरि ने मड़िये भाव सहित ।
हसी बोल्या श्याम सुजान,
थई अलौकिक ओड खाता ।
मारे हैडे ते हरख न माय,
जोई नेणां शीतल थाय ।
ब्रह्मानं कहे थई रंगरेल,
करीए खाताला थी खेल ॥

धन तेरस को गाँव में धेनु (गाय) तेरस भी कहते हैं । इस दिन गायों को अलंकृत किया जाताहै । ब्रह्मानंद स्वामी तो यही विन्ती करते हैं कि बस महाराज ! पतले वस्त्र धारण करके, मस्तक पर मुकुट धारण करके हमारे मनोरथ पूर्ण करो ।

चहेरो अंबर झीणां अंग,
धन तेरस आवी ।
वारी रसिया नवरंग,
धन तेरस आवी ।
तेडो गोठीडा गोवाल,
गाइए मोरलीमां गीत रसाल ।
करीये धेनुने शणगार,
रंगिए शींग अजब रंग सार ।
करो लटकां भीने वान,
थाय व्रजनारी गुलतान ।
माथे मुकुट धरो महाराज,
करो ब्रह्मानंदनुं काज ।

आश्विन कृष्ण चतुर्दशी अर्थात् काली चौदश । यह चौदश अत्यंत लाभ कारी बताई गई है । ब्रह्मानंद स्वामी को महाराज का अच्छा श्रृंगार करना है । मस्तक पर काला टीका करना है । इसलिये कि किसी की नजर न लग जाय ।

स्डो चौदश नो दिन श्याम,
कुंज विहारी रे ।
सजो शोभिता शणगार,
गिरिवर धारी रे ।
प्रीतम बांधो पाघडी रे,
आंटादार अनुवुं रे ।
हरिवर देखुं हेत थी तारुं,
रसिक मनोहर स्म रे ।
फरता मेलो फूलनां रे,
छोगलियां चहुकोर रे ।
सभा करीने श्यामणा,
बेसो नागर नंद किशोर रे ।
लटकावो शिर लालजी रे,
सुभग कलंगी सार रे ।
ब्रह्मानंद न वहालमां,
जाऊँ बानक ने बलिहार रे ।

यमचतुर्दशी के बाद आती है दीपावली -

क्यारे आवे दीवाली करिए दीवा रे ।
आज अंतर मां उजास भूदर भाणी रे ।

सभी के हृदय में आनंद का दीपक जल रहा है । ब्रह्मानंद स्वामी के अंतर में इस तरह दीपावली है -

सखी हैडे ते हरख न माय,
आज दीवाली रे ।
हूँ तो मगन थई मनमांय,
भूदर भाणी रे ।
सुंदर श्याम सोहामणो रे,
सुंदर गज गति चाल ।
सुंदर शोभा अंगनी हूँ तो,
निरखी ने थई छूं निहाल ।
नयन मनोहर नाथनां रे,
हैडे मनोहर हार ।
सुभग मनोहर श्यामलो वहालो,
नटवर नंदकुमार ।
बाजू नौतम बेरखां रे,
बेहद नौतम बान ।
ब्रह्मानंद ना नाथनुं स्म,
जोई थई छुं हूं गुलतान ।

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा का दिन मंगल कारक दिन है । इस दिन श्रीहरि के सन्मुख अन्नकूट का भोग लगाया जाता है । महीना पूर्व से इस की तैयारी होती है । जहाँ स्वयं नारायण हों वहाँ किसकी कमी होगी । उस अन्नकूट का स्वाद अदृश्यस्म से प्रभु ग्रहण करलेते हैं । ब्रह्मानंद स्वामी इसे हृदय - गम करके गाते हैं -

पूरण प्रगट प्रमाण जमो ने,
प्रभु पूरण प्रगट प्रमाण ।
पूरेउ प्रभु आगे अन्नव्यंजन,
जन मिल परम सुजाण ।
अन्नकूट की रचना अलौकिक,
ऐसी न लखी कहु आन ।
तेही बीच बैठे सोहत हरि,
धरत जाहि मुनि ध्यान ।
अविनासी जब जिम के,
अधाये तब ही निराजन ठान ।
ब्रह्मानंद कुं देत भये हरि,
शीत प्रसादी दान ।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ३१

अंत में नीलकंठ वर्णी पंढरपुर में विठु भगवान को भेंटे

- डो. एच.वी. केराई (अंजार-कच्छ)

(मा-बाप की सेवा को ही सच्चा धर्म बाताया)

भगवान का परम भक्त तथा माता पिता का परम भक्त पुंडलीक नाम का एक ब्राह्मण, जिसके नाम से पुंडलीक पुर आगे जाकर पंढरपुर के नाम से यह गाँव प्रसिद्ध हुआ, जो चन्द्रभागा नदी के किनारे तथा नासिक एवं गोदावरी नदी के सन्निक वसा हुआ है । हिन्दु तीर्थ के नाम से यह तीर्थ आज जाना जाता है । पहले यहाँ वैष्णव भक्तों का आवा गमन खूब था । वर्णी के स्प में भगवान स्वामिनारायण भी यहाँ अपना पदार्पण किये थे। विठु भगवान को भेंटने के बाद तो स्वामिनारायण संप्रदाय के भक्तों की भीड़ यहाँ लगने लगी । स्वामिनारायण संप्रदाय के लिये एक उत्तम तीर्थ बन गया है । पुंडलीक माता एवं भगवान विष्णु का परम भक्त होने से जगत की सभी प्रवृत्ति छोड़कर केवल सेवा में लगा रहता था। उसके विवाह की वात चलती थी लेकिन सेवा में विध्न आवे ऐसा मानकर तथा अपने मित्रों के घर की स्थिति का उसे ख्याल था जिससे वह विवाह के लिये नहीं कर दिया । उसके मन में ऐसा था कि भगवान की सेवा न होतो चलेगा माता-पिता की सेवा न होतो भगवानभी माफ नहीं करेंगे । गुरु की ऐसी आज्ञा भी थी । वृद्ध माता-पिता की सेवा करना ही सभी तीर्थ है । जोमाता पिता का अनादर करके तीर्थ करने जाते हैं, उनके तीर्थ का फल नहीं मिलता । जिसके घर में माता पिता दु:खी हो उनको तीर्थ करना व्यर्थ है । सभी तीर्थ माता पिता स्वयं है । जो माता पिता की सेवा को तीर्थ मानकर करते हैं, उन्हे सभी तीर्थ का फल मिल



जाता है । यही भाव मानकर पुंडलीक माता-पिता की सेवा में मग्न रहता था।

सर्व प्रथम प्रात: उठकर अपनी दैनिक क्रिया पूर्ण करके माता पिता को उठाकर स्नानादि क्रिया से निवृत्त करके तेलकी मालिक करता था । स्वयं भोजन बना कर खिलाता था । धार्मिक पुस्तक से कथा सुनाता था । जब दोपहर में आराम करते तो गाँव में व्यावाहरिक कार्य करने जाता था । कृषि कर्म में भी मजदूरों के यहाँ जाकर देख आता, खेत में धान होता जिससे उसकी परवरिश हो जाती थी । दोपहर के बाद घर आकर माँ-बाप को जगाकर आवश्यक सेवा करके पुन: सायंकालीन रसोई में लगजाता था । इस तरह दैनिक कृत्य पुंडलीक का था । समय मिलने पर मंदिर भी जाता था । रात्रि में शयन से पूर्व शास्त्र की कुछ वातें सुनाते हुए, चरण दबाते । जब वे सो जांय तो स्वयं सोता था ।

पंढरपुर के अगल-बगल के गाँवो में पुंडलीक के सेवा की प्रशक्ति होने लगी थी । आदर्श पुत्रो में उसकी गिनती होने लगी । इस प्रकार की बात सुनकर देव लोक से नारदजी भी आये । देवता भी उसकी भक्ति पर प्रसन्न होकर दर्शन दिये । अंत में स्वयं भगवान विष्णु उसकी परीक्षा लेने आये । प्रात: काल का समय पुंडलीक अपनी माता पिता की सेवा में लगा हुआ था, उस समय वह प्रभु को आया देखकर भी उन्हें प्रणाम नहीं कर सका, मात्र इशारे से बैठने का निवेदन किया । सत्कार में उसने अपने पास की एक ईंट ढकेल दिया और इशारा किया कि आप इसी पर बैठिये बाद में तेल मालिस, स्थान विधि, भोजनादिक से निवृत होजाने के बाद बाहर आया । तब तक प्रभु उसी ईंट पर बैठे रहे । जब बाहर आया तो प्रभु को दंडवत प्रणाम करके सत्कार किया । प्रभु ने उसे प्रसाद दिया जिसे अपने मा-बाप को खिलाया । भगवान पुंडलीक पर खूब प्रसन्न होकर गले लगा लिये और आशीर्वाद दिये । पुंडलीक की प्रार्थना पर भगवान पुंडलीक के माता पिता को विठ्ठल एवं रुक्मिणी देवी के स्प में दर्शन दिये ।

प्रभु जिस ईट पर बैठे थे वह ईंट

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ३८

सत्संग सुरंभि :

प्रत्येक में से गुण लेने की आदत रखो

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

गुजरात में खेड़ा जिला के वडताल गाँव श्रीजी महाराज को बहुत प्रिय था। यहाँ कभी-कभी पधारते थे । उपदेश की बात करते । समाज के उद्धार हेतु अगल बगल के गाँवो में विचरण करते रहते थे।

श्रीजी महाराज संत स्त्री-धन का सर्वथा त्याग करते थे । महाराज के अनुसार उन्हीं के नीति नियमो को ध्यान में रखकर त्याग, तप, वैराग्य के वे प्रति मूर्ति थे । तप करने से कितने संतो की शरीर कृष हो गयी थी । इसकी शिकायत किसी ने महाराज से नहीं की । महाराज की इच्छा में अपना जीवन मानते थे । ऐसी ही समझ संत भक्त दोनो में थी ।

श्रीहरि सदा प्रसन्न होकर सभी को भोजन कराते थे उसी में उन्हें आनन्द आता था । आग्रह करके दूध, दहीं, घी परोसते थे । संत जब खाने को नहीं कहते तो खीर को मस्तक पर गिराकर स्नान कराने लगते ।

चैत्र महीना की दशमी को दोपहर में श्रीजी महाराज सभी संत भक्तों को बडताल की पाठशाला में भोजन करा रहे थे । उस समय जब भोजन कराते तब सभी लोग नारायण की धूनि चलती रहती थी । अंतिम में शूद्र भक्तों को भी महाराज उतने ही प्रेम से भोजन कराते थे। भोजन अभीपूर्ण नहीं हुआ था कि इतने में दो संत दूसरे गाँव से पधारे । ब्रह्मचर्य से शरीर का तेज झलक रहा था । जय स्वामिनारायण कहकर भोजन शाला में प्रवेश किये ।

सभी की नजर तेजस्वी संतो पर स्थिर हो गयी । वे दोनो संत गाँवो से विचरण करके वहाँ की जनता को कुरिवाज, व्यसन से मुक्त करके सच्चा सहजानंदी बनाकर आये थे । अनपढ ग्रामजनों को भगवान स्वामिनारायण की पहचान कराकर आये थे । परंतु विपरीत संयोग के कारण तीन दिन से उपवास हुआ था ।

महाराजने "जय स्वामिनारायण" कहकर आवकार्य दिया । परंतु अचानक पधारे हुए इन अतिथि संतो को भोजन करवाने का प्रश्न सभी को सता रहा था । क्योंकि लोगो के कहने से ब्रह्मचारी स्वामीजीने सब कुछ परोस दिया । परंतु जिस दिन एकादशी का उपवास आता हो उस दिन अन्न रखना भी हितकर नहीं होता ।

परंतु आँगन में पधारे अतिथि संतो को छोड़कर भोजन करना भी उन्हें योग्य नहीं लग रहा था । सभी अचंभे में पड गये । श्रीजी महाराजकी दीर्घ दृष्टि समझ गये । महाराज दो थाली को लेकर खड़े हो गये ।

"आज हमारे समारंभ में दो तपस्वी संत अतिथि के रूप में पधारे हैं । अतिथियों को भोजन ग्रहण करवाने का पुण्य मिलता है ऐसा शास्त्रो में लिखा है । ऐसा कहकर दोनो थाली लेकर महाराज पंक्ति में धुमने लगे । सभीने अपने-अपने पात्र में से अच्छा पकवान थाली में रख दिया । दोनो थाली सम्पूर्ण भर गयी । सभी ने जयनाद करके भोजन की शुरुआत की ।

सभी को प्रेमपूर्वक भोजन करवाया तथा ब्रह्मानंद भी करवाया । वड़ताल की भोजनशाला में स्वामीश्री सहजानंदने खूब सहजता से आनंदपूर्वक समूह भोजन करवाया था ।

शाम के समय गोमती नदी के किनारे श्रीहरि उत्तरार्ध मुख विराजमान थे । सभी संत तथा हरिभक्त महाराज के आस-पास बैठ गये । गोमती नदी के पानी में ढलती हुई शाम के सूर्य की छबी प्रतिबिंबित हो रही थी । सभी हरिभक्त प्रभु की अमृतमय वाणी में डूबने को आतुर थे ।

"महाराज आपने तो आज सुंदर दीर्घ दृष्टि का उपयोग किया था ।" कुछ भक्तोंने महाराज के दोपहर की भोजन के प्रसंग की बात की ।

"किस बात में आप को दीर्घदृष्टि दिखाई दी ?" हम तो हंमेशा की तरह परोपकार का कार्य करते हैं । महाराज ने हस कर कहा ।

"आज दोपहर के समय आपने हमे संभाल लिया । हम गृहस्थो के साथ ऐसे प्रसंग कईबार होतें है । भोजन करते हो और कोई व्यक्ति आ खड़ा हो तब परेशानी होती है । उन्हें भूखा रखकर भोजन करने की हिंमत ही नही होती ।

वहाँ खडे मुलजी ब्रह्मचारी बोले, "महाराज ! आपने मानपूर्वक भोजन की व्यवस्था की । अतिथि संतगण भोजन नहीं प्राप्त करते तो हमारे जीव को दुःख होता, ऐसे संत भूखे रहे तो बहुत पाप मिलता है ।"

श्रीजी महाराज सत्संग समुदाय में संस्कार का सिंचन हो तथा समज दृढ बन जाय उस प्रकार का ज्ञान देने हेतु हंमेशा तत्पर रहते । भोजन का प्रसंग तो सामान्य था । परंतु भक्तजनो को उनकी परेशानी दूर करने हेतु उपदेश दिया ।

"दैवी, मानसिक, शारीरिक या आकस्मिक ऐसी किसी भी प्रकार की विपत्ति आ पडे तब दुःख देखकर दुःखी नहीं होना चाहिए । सावधानी से उपाय ढूंढना चाहिए । नरसिंह मेहता, मीराबाई भगवान के भक्त ये तो उनकी कठोर परीक्षाए हुई उनमें वे अड़िग भी रहे ।" महाराजने सभी को अड़िग रहने की शीख दी ।

इस तरफ संध्या आरती का समय होने आया था । इसीलिए महाराजने सभी से अंतिम प्रश्न पूछा, "आज इस भोजन प्रसंग पर, वे दोनो संतोने भी संतोष पूर्वक भोजन किया । परंतु इन सभी को इन बातों में से कुछ प्रेरणा मिली ?"

सभी एक दूसरे की ओर देखने लगे । महाराजने स्वयं उत्तर दिया । शुक्रतारा सहित दूसरे तारें भी मीठा-मीठा हसते है परंतु उसमें रात्रिराजा चंद्र का उज्जवल तथा शीतल हास्य सबसे अलग और अनोखा होता है । उसी प्रकार सभी में कुछ गुण होते हैं । उन गुणों में से अति उत्तम गुण को ही ग्रहन करना चाहिए ।" महाराज फिर से बोले कि "परोसे हुए पात्रों में से जैसे थोड़ा थोड़ा अन्न, थाली मं भरा गया तो वह संम्पूर्ण भर गयी । तथा मन की समस्या भी दूर हो गयी । भूखे संत भी तृप्त हो गये । अतिथि धर्म भी यही है । प्रत्येक गुण में से ग्रहण करने की आदत रखनी चाहिए तो आप का अंतःकरण धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति से छलक जायेगा तथा परमेश्वर की कृपा होगी । चाहे जीतना बडा त्यागी, वैराग्यी हो परंतु जब तक समज दृढ नहीं होगी तब तक उसके लिए अक्षरधाम दूर नही होगा ।

महाराज द्वारा दिये गये ज्ञान भक्तजन समझ गये । धर्म यह था की अन्न कम हो गया तो सभी ने अपने पात्रों में से उत्तम पकवान देकर संतो को भोजन करवाया । जहाँ परोसने वाले भगवान स्वयं प्रभु हो वहाँ अन्न की कमी कभी नहीं हो सकती ।

कर्णदार का ऐसा करिश्यमा देखकर भक्तजन अत्यंत भावविभोर हो गये । प्रभु शाम की संध्या आरती करने गये । उनके पीछे-पीछे भक्तजन भी गये ।

परंतु इस समोहक व्यक्तित्व में से उद्भवित उपदेशामृत के स्पंदन में से गुण ग्रहण करने की आदत रखनी चाहिए ।

पृष्ठ २८ से आगे.....

सखी हैडे ते हरख न माय, आ दीवाली रे

एकांतिक भक्त को तो मात्र प्रसाद ही चाहिए । उसीमें अलौकिक सुख एवं शांति है । दीपोत्सव के प्रसंग पर श्रीहरि के अलौकिक स्म को देखकर प्रेमानंद स्वामी गाते हैं -

ओरा आओ धेल तमारुं छोगलुं जोउं रे ।
छोगलुं जोउं ने मारां दिल मां प्रोवुं रे ।
एटलुं तो हवे करजो माणीगर मावा रे ।
प्रेमानंदनां नेण मां रहेजो आवा ने आवा रे ।

स्वामिनारायण भगवान दीपावली के उत्सव को सत्संगदीप नाम दिये थे । ऐसे सत्संग दीप के अवसर पर प्रभु को प्रार्थना करें कि हे महाराज ! हमारे नेत्र में, हमारे हृदय में सदा विराजमान रहना । पर ब्रह्म परमात्मा पुरुषोत्तम + सत्पुरुष + सत् धर्म + सत् शास्त्र इन चारों का समन्वयात्मक सत्संग सदा बना रहे तथा आचार्य महाराजश्री की कृपा सदा वरसती रहे ऐसी कृपा करना ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

प्रत्येक दिन दीपावली है

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

दीपावली आनन्द का पर्व है । छोटा हो या बडा बालक होगा बुड्ढा, सभी अपने ढंग से दीपावली पर्व को मानता है । एक मास पूर्व से ही तैयारी होने लगती है । अभी श्राद्ध पक्ष के खीर का स्वाद भूला नहीं कि शरद पूनम के दूध चिउड़ा का प्रसाद आजाता है । इसके जाते ही दीपावली की तैयारी चालु हो जाती है । पूरे वर्ष तक जिन दिवालों को छोटे बच्चे रंगवेरंगा बना देते है, उन्हें धो पोंछ कर साफ सुथरा कर दिया जाता है, लेकिन हृदय को कोई साफ नहीं करता । वर्ष भर में जिन पात्रों की जरुरत न पडी हो उन्हें भी उतारकर चमचमाता करके पुनः यथोचित स्थान पर रखदिया जाता है। इन पात्रों को जिस तरह परिमार्जित किया जाता है, उसी तरह अपने विचारों को भी परिमार्जित करना चाहिए । नतून वर्ष की तैयारी में नूतनवस्त्र की खरीदी भी प्रारम्भ हो जाती है । मैले कपडों को धोबी के पास देकर धुलाया जाता है, लेकिनमैले मन को कहाँ धुलाने जायेंगे ? हाँ मैले मन को संत समागम से धुला जा सकता है । इसके बाद घर में नये पक्कवान की तैयारी होती है । नाना प्रकार की नमकीन एवं मिठाईयां बनाई जाती है ।

इतना सबकुछ करके दिपावली आ जाती है । दो दिन नये कपडे पहने, इधर उधर धूमे, इनके यहाँ गये, उनके यहाँ गये सर्वत्र कुछ रसास्वाद लिये कि दीपावली चली जातीहै । जिन दीपो से जगमगाते प्रकाश काआनंद लिये वे अब धीरे-धीरे बुझ जाते है । यही संसार का क्रम है, लेकिन संतो से लिया गया ज्ञान तो अन्धकार को सदा के लिये मिटा देता है और ज्ञानस्मी दिपक तो सदा जलता ही रहता है । अन्तर में उसका प्रकाश भराही रहता है । उस अन्तर के प्रकाश सेहम बाह्य जगत को भी प्रकाशित कर सकते है । यद्यपि जागतिक दीपावली का प्रकाश तो कितनों वर्षो से आया और इसी तरह चला भी जायेगा । इस प्रकाश से क्या चिंता, उद्वेग या मानसिक अशांति खत्म होती है ? यह जगत केजीवों की बात है । लेकिन जो भगवान के भक्त है, उनके लिये तो अन्दर एव बाहर तो रोज दीपावली है। कारण यह की उन्हे जगत के आनंद से कुछ लेना देना नहीं होता । भक्तों का आनंद भगवान के साथ मिल जाता है । दोनो का एकी भाव आनंद है वही यथार्थ दीपावली है।

वात है मांचा भक्त की, जिस वात को भगवान स्वामिनारायणने अपने मुख से कही थी । एकवार मांचा भक्त के घर कोई ठग आया, वह मांचा भक्त की खूब प्रसंशा की,आप तोबडे परोपकारी है, उदार है, भूखे को भोजनदेते हैं, गरीबों की सेवा करते है, इस लिये मैं आप के ऊपर प्रसन्न हूँ । तो आप मेरे पास से एक जडीबूटी ले लीजिये । इस जडी बूटी से लोहाको आप चांदी बना सकते हैं । जिससे आप खूब रुपये कमा सकते हैं । दूसरा कोई लाख रुपये दे तो भी यह जडी बूटी उसे नहीं दूगा । आप उत्तमपात्र हैं इसलिये यह जादू आपको देता हूँ । इसके बदले आपको जो देना है दीजिएगा । यह सुनते ही मांचा भक्त भीतर गये, इधर वह ठग सोचने लगा किभीतर से तांबा के वर्तन लायेगे लेकिन भक्त भीतर सेबाहर आये तो हाथ में लकडी लेकर आये और कहनेलगे कि तूं यहाँ से भागता है कि इस लकडी से प्रहार करुँ । हमें तुम्हारी जडी बूटी या जादू कुछ नहीं चाहिये । हमें तो भगवान के अलांवा इस जगत में कुछ नहीं चाहिये । तू जल्दी से भाग, इतना हीनहीं उसे अपने घर में से ही नहीं, अपितु गाँव के बाहर तक भगा आये, जिससे दूसराकोई अन्य भोला इसके चंगुल में न फंसे ।

जिस तरह भगवान के भक्त को भगवान के अलांवा कुछ भी अच्छा नहीं होता। इसी तरह भगवान को भी

भक्त के सिवाय कुछ अच्छा नहीं लगता । इसीलिये मांचा भक्त वचनामृत में स्थान प्राप्त किया ।

जगत का कोई प्रलोभन जिसे प्रलोभित नहीं कर सकता जगत के आनंद की कोई वस्तु जिसे आकृष्ट नहीं कर सकती ऐसे भक्तों के लिये तो सदा दीपावली हैं । ऐसे भक्तों के हृदय में परमात्मा का नित्य साहचर्य रहता है । इसलिये वर्ष का प्रत्येक दिन जिंदगी की दीपावली है । हम भी इस नूतन वर्ष में यह पाठ सीखे कि - अपने दीपावली का आनंद भगवान के पूजन - भजन से एवं नूतन वर्ष का आरंभ इष्टदेव के दर्शन से करें, तो ब्रह्मानंद स्वामी का शब्द अपने जीवन में सार्थक होगा ।

"ब्रह्मानंद ना रे व्हाला तम संग,
रमता मारे,
दहाडी दहाडी दे दीवाली,
हैडामां मुने व्हाला लागो छो
वनमाली ।"

•

प्रत्येक दीन काम का है

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

नूतन वर्ष का प्रारम्भ अपने इष्टदेव के दर्शन से होता है - ऐसा कहा जाता है । कारण यह कि भगवान के मुखारविंद का नूतन वर्ष के दिन प्रथम दर्शन करें तो सम्पूर्ण वर्ष सुखमय एवं आनंदमय वीतता है ।

मित्रों ! भगवान के एकवार दर्शन से मन में इतनी दृढता आती हो कि सम्पूर्ण वर्ष अच्छा जायेगा, तोउस परमात्मा का दर्शन जो प्रतिदिन करता होगा उसकी क्या वात होगी ? इसलिये सदा आनंदित जीवन रखने के लिये प्रतिदिन इष्टदेव का दर्शन करना चाहिए ।

भाल विस्तार की एक सुन्दर वात है - एक समय ऐसा था जब यहाँ गेहूँ के सिवाय कुछ मिलता नहीं था । जहाँ दूध न मिलता हो, वहाँ पर छाछ की अपेक्षा कैसे रखी जा सकती है । जहाँ सब्जी न मिलती हो वहाँ सब्जी बनाने की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये । भाल में एक माताजी रहती थी उनका बेटा अहमदाबाद में पढता था । नूतन वर्ष के उपलक्ष्य में अवकाश हुआ तो वह घर जाने की तैयारी करने लगा । अपनी इच्छानुसार कुछ वस्तुए खरीदी, उसके मन में विचार आया कि मेरी मां कभी सब्जी खायी नहीं है इसलिए सस्ती सब्जी यहाँ से खरीद लेते चले, यह विचार कर पत्ता गोभी खरीद कर गाँव गया, वहाँ उसकी मा लम्बे समय के बाद बेटे से मिली थी इसलिये खूब आनंद के अश्रुजल के साथ गले लगा ली । बेटे ने सभी वस्तु के साथ खरीदी हुई सब्जी भी मां को दिया और कहा मां इसकी सब्जी बनाना । ऐसा कहकर अपने मित्रों से मिलने चला गया । इधर मांताजी उस पत्ते गोभी को काटने के लिये एक एक वर्त उतारती चली गयी उन्हें यह समझ आ रहा था किऊपर सभी छिलका है, भीतर कुछ होगा, अन्त में तो कुछ निकला ही नहीं । अपने बेटे को कहने लगी कि बेटा मेरा ठगा गया है । सब्जी बनाने लायक कुछ निकला ही नहीं । माताजी उन सभी पत्तो को लेकर बाहर डालने जा रही थी उसी समय बेटा आ गया और पूछा मां कहा जा रही हो तो मां ने कहा बेटा तूं तो सब्जी लाया था उसमें पूरा का पूरा पत्ता निकल गया, उसे फेंकने जा रही हूँ । तूं ठगा गया है । यह सुनते ही बेटेने कहा मां यह तो पत्ता गोभी हैं । इसके पत्ते की ही सब्जी बनती है । सभी काट डालो तथा बघार कर दो वस बन गयी सब्जी । अरे बेटा ! मुझे तो खबर ही नहीं ।

यह कितनी छोटी बात है लेकिन उपदेशात्मक है । भगवान ने यह सुन्दर जिंदगी दिया है, कितनी अमूल्य है । जिस प्रकार पत्तागोभी का एक-एक पत्ता उपयोगी है, इसी प्रकार मनुष्य का एक-एक दिन उपयोगी है । लेकिन अज्ञानी मनुष्य समझता नहीं है । इसका यथार्थ उपयोग किये विना समय को पत्ते की तरह व्यर्थ गवाँ देता है । जो इस रहस्य को समझता है वह उसका रसास्वाद ले लेता है - वह क्या तो भजन, भक्ति, सेवा, सत्संग, सद्भाव नीति, नियम, पक्ष, निश्चय स्मी आस्वाद का प्रत्येक दिन उपयोग करता है ।

यह नूतन वर्ष चिंतामणी के समय सभी के लिये सत्संग-भजन में खूब उपयोगी बने ऐसी ईष्टदेव के चरणो में प्रार्थना ।

।। भक्तिसुधा ।।

मधुबाई की तरह किसी का भोजन नहीं

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अहमदाबाद)

लोया गाँव में संधा पटेल नामक एक हरिभक्त रहते थे । उनकी पत्नी मधुबाई भी परम हरि भक्ता थी जब-जब महाराज लोया पधारते तब-तब दोनो दम्पति अपने सभी कार्य छोड़कर महाराज की सेवा में लग जाते थे । जब महाराज वहाँ से कहीं अन्यत्र जाने को तैयार होते तो दोनो के मानो प्राण निकल जाते ।

छोटे किसान थे मेहनत करके घर की परवरिश करते । मधुबाई को प्रतिदिन यही आशा रहती कि महाराज एक दिन हमारे घर अवश्य आयेंगे । मेरे हाथ की रसोई खायेंगे ।

एकवार महाराज नागडके से लोया जा रहे थे, उसी समय मधुबाई भात लेकर खेत में जा रही थी । अपने हृदय में महाराज का चिंतन करती जा रही थी । उसी समय किसी ने मधुर स्वर में पुकारा अरे ! मधुबाई कहाँ जा रही हो, मधुबाई ने सामने देखा तो साक्षात् श्रीहरि थे, दिव्य स्वस्थ मुस्कान के साथ प्रसन्न मूर्ति, सौम्य मुखारविंद, चमकदार वस्त्र में सुशोभित हो रहे थे ।

पटेल की पत्नी ने कहा महाराज ! खेत में पटेल के लिये भात लेकर जा रही हूँ । महाराज ने कहा हमें भूख लगी है, हमें भोजन नहीं कराओगी ?

महाराजने कहा चलो ! मधुबाई आगे-आगे चलने लगी महाराज पीछे पीछे चलने लगे ।

बाई महाराज को पीढ़े पर बैठाई और अपने पति के लिये जो भात एवं बाजरे की रोटी एवं उड़द की दाल ले जा रही थी उसी को सामने अर्पण कर दिया । महाराज बडी प्रसन्नता के साथ उस प्रसाद को ग्रहण करके, तुरंत घोडे पर सवार होकर गढडा के लिये निकल दिये । बाई की प्रसन्नता की कोई सीमा न रही ।

महाराज आज हमारे मनोरथ को पूर्ण किये । इस वात को कहने के लिये बडे उतावले से खेत की तरफ चलने लगी । उधर गढपुर में मोटी बा महाराज के लिये भोजन बनाई थी, उस भोजन को ग्रहण करते समय महाराज ने कहा "कल लोया में जो प्रसाद ग्रहण किया आज तक ऐसा प्रसाद कभी ग्रहण नहीं किया था ।

"दूसरे दिन भी उत्तम रसोई बनाई, उस दिन भी महाराज वही बात कहे ?"

बाद में मोटी बाने बैलगाडी भेंजकर लोया से पटेल की पत्नी को गढडा बुलवा लिया । मोटी बा एवं लाडूबा दोनो पटेल की पत्नी से कहने लगी "तुम महाराज को क्या और कैसे खिलाई थी, जो बार-बार तुम्हारी ही प्रसंशा करते हैं ? बाद में मधुबाई ने बताया कि बा मैं तो उडद की दाल, रोटी ही महाराज को खिलाई थी । महाराज मेरे भाव को देखकर प्रसन्न है, दूसरा कुछ नहीं ।

लाडूबा तथा जीवुबा दोनो उस महिला का भाव देखकर खूब प्रसन्न होगयी । दोनोने कहा जब यहाँ आ गयी हो तो आज भी तुम्हीं महाराज के लिये भोजन बनाकर जाओ । हम लोग भी प्रसाद पायेंगे ।

परमात्मा अपने भक्त के भाव से मतलब रखते हैं । यह अनादिकाल की रीति है । रामावतार के समय भी शबरी के जूढे बेर खआये थे । कृष्णावतार में दुर्योधन के घर मेवा मिष्ठान्न त्याग कर विदुर के घर सब्जी खाये । मधुबाई का भोजन मधुरतो था ही ऐसे स्वाद की चाहना महाराज को रहती है ।

•

कारियाणी की शीतबा

- राधाबहन रसिकभाई गोडविया (सूरत)

गाँव चाहे कितना छोटा हो पर वही गाँव जब भगवान के संबंध से जुड़ जाता है तो वह गाँव अति पवित्र एवं बडा हो जाता है । उस गाँव के भक्तों का प्रभाव बढजाता है । सत्संग की सुवास चारो तरफ फैलने लगती है । ऐसा ही अपने संप्रदाय में कारियाणी गाँव है - जहाँ के भक्त मांचा खाचर के भतीजे वास्ता खाचर (जिसका वचनामृत में महाराज ने नाम संकीर्तन किया है । उन्हीं की पत्नी शीतबा (रतनबा) थी । गृहस्थाश्रम में रहकर सांख्ययोगी जैसा नियम रखती थी । महाराज के प्रति एक निष्ठा भक्ति थी ।

जिस प्रकार गढपुर में लाडूबा, जीवुबा महाराज को प्रसन्न करने में नाना विध भोजन बनाकर खिलाती थी, ठीक यही स्थिति कारियाणी में शीतबा की थी । वे महाराज की प्रत्येक क्षण में चिंता किया करती थी । महाराज कहाँ होंगे ? क्या करते होंगे ? क्या खाते होंगे ? कौन खिलाता होगा ? यही प्रेम भक्ति की पराकाष्ठा है ।

वरसात की ऋतु, सायंकाल का समय

था शीतबा पलंग पर सोये-सोये महाराज की चिंता में करवट बदल रही है। निद्रा नहीं आ रही है, महाराज की चिंता लगी हुई है। वास्ता खाचर ने पूछा क्यों देवि ? नींद क्यों नही आ रही है। शीतबा ने कहा, आज महाराज कहाँ होंगे ? कहाँ खाये होंगे ? कहाँ सोये होंगे ? खूब वरसात हो रही है, यही चिंता है।

उस समय महाराज कारियाणी से नजदीक बोटाद में थे। भक्त की व्यथा भगवान की व्यथा। भगवान भी उस समय वरसात रात में पलंग पर करवट बदल रहे हैं। ब्रह्मचारी ने पूछा महाराज नींद नहीं आ रही है क्या ? महाराज ने कहा हाँ मेरा कोई भक्त मुझे याद कर रहा है। मुझे जाना पडेगा। अरे महाराज ? इस बरसात में चारो तरफ पानी पानी है। चारो तरफ गाढ अंधकार फैला है, आप कैसे जायेंगे। तुम यही रहो हम अकेले जायेंगे। हमें जाना ही पडेगा।

महाराज अकेले निकले चारो तरफ पानी, अंधकार था। भगवान को क्या अंधकार, क्या पानी। एक क्षण में कारियाणी पहुँच गये। १०-०० बजे की रात्रि में शीतबा का दरबाजा खटखटाया भीतर से आवाज आई कौन ? हम महाराज। दरवाजा खोलते ही आश्चर्य की सीमा न रही, अरे महाराज ! आईये, आईये अभी कहाँ से ? इस वरसात में भींगे तो नहीं ? नहीं भीगा नहीं। भोजन करेगे महाराज ? हाँ जो बचा हो उसे ही लाना, कुछ अलग से तैयारी करने की जरुरत नहीं हैं। मुझे बहुत भूख लगी है। शीतबा शाम को भोजन बनाते समय एक बाजरी की रोटी बचा कर रखी थी। वही रोटी तथा महाराज मक्खन, गुण, अंचार, पानी एक पीढा पर लाकर रख दी और कही महाराज भोजन कीजिए। भोजन करके वास्ताखाचर के साथ दरबार में आये, वही बात करते रहे, इतने में वास्ता खाचर सो गये और प्रभु अन्तर्ध्यान हो गये, बोटाद पहुँच गये।

इधर शीतबा महाराज को लोटा में पानी देने गयी वहाँ देखा तो महाराज गायब और वास्ताखाचर तो सो रहे है। शीतबा को ख्याल आ गया कि महाराज मेरी चिंता दूर करने के लिये आये थे। मेरे मनोरथ पूर्ण करने आये थे। इसलिये अब निश्चिंत होकर सो गयी।

इधर महाराज १२-०० बजे बोटाद पहुंचे। ब्रह्मचारी ने कहा कि मैने मना किया न कि अभी जाने लायक नहीं है, वापस आये न ? महाराज ने कहा मैं कारियाणी जाकर आया हूँ। ब्रह्मचारी ने कहा आप भगवान है। समर्थ है। आपके लिए असंभव क्या ?

शीतबा भगवान की परम भक्ता महिला थी। इनकी बहुत सारी बाते अप्रकाशित है, ऐसी भक्ता महिला को वारंवार नमन जिसके प्रेम ने महाराज को खींच कर लाया था।

•

लाकडी बाई का प्रभु प्रेम

- गीता बहन लीलाधर भाई पित्रोडा
(जोरावनगर)

पंचाला से करीब ५० कि.मी. दूर मेघपुर एक गाँव है। यहीं पर प्रभु की भक्ता लाकडी बाई एवं उनकी बेटी रहती थी। उस समय प्रभु पंचाला में जीणाभाई के दरबार में विराजमान थे। सभी संत भक्तों को कथा का सुख देते रहे।

उसी समय लाकडीबाई तथा उनकी बेटी दोनो ने ऐसा संकल्प किया कि प्रभु हमारे यहां ज्वार खायेंगे तो ही हम खायेंगे, अन्यथा फेंक देगे। प्रभु तो अन्तर्यामी दोनो की भावना को समझ गये। प्रेम में बध गये। पंचाला में रहते हुए चिंता करने लगे कि मैं नही जाऊँ तो सम्पूर्ण ज्वार फेक दिया जायेगा।

इसलिये श्रीजी महाराज ने कथा में विराम देकर भगुजी को कहे कि हमें शौचालय जाना है। भगुजी बाहर साथ गये। दूर तक पेड़ खोजकर आये नहीं मिला तो महाराज से कहे महाराज ! शौच के लिये कहीं कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। ऐसा करे हम और ब्रह्मचारी दुपट्टा को खोलकर एक-एक दोर पकड़ कर खडे है, आप शौच कर लें। महाराजने हाँ कर दिया लेकिन कहा कि जब तक मैं खोंरवारु नही तब तक आप दोनो में से कोई पीछे नहीं देखेगा। उन दोनो ने हाँ कहा दिया।

श्रीजी महाराज दुपट्टे के पीछे लोटा का पानी लेकर बैठे कि मेधपुर पहुँच गये। इधर भगुजी एवं भूलजी ब्रह्मचारी ने देखा कि कितना समय होगया महाराज खेंखारते नहीं है, हम थक गये हैं। देखें तो महाराज निवृत्त हुए या नहीं। ज्यों नजर करते हैं वहाँ महाराज नहीं, अब दोनो घबड़ा गये, खोजने लगे। लेकिन महाराज मेघपुर में विराजमान थे।

महाराज मेघपुर आकर लाकडीबाई के दालान में खडे है। यह देखकर लाकडी बाई एवं उनकी बेटी आनंद में आ गई। महाराज को ज्वार का धान प्रेम से खिलाती हैं। मन में आनंद की वरसात हो रही है। लाकडी बाई कीर्तन बोलने लगती हैं कि "आज सखी आनंदनी हेली" "हरिमुख जोई ने हूँ थई छूँरघीली"।

इस प्रकार गीत सुनकर महाराज ने

कहा, आपका प्रेम देखकर ही हम पंचाला से भाग कर आ गये हैं। अब मुझे जाने की आज्ञा दो।

इस तरह हम भी महाराज को एक निष्ठा भक्ति करें तो, महाराज लाकडी बाई की तरह आपके संकल्प को पूरा करने त्वरित आयेंगे जेतलपुर में जीवड भक्त की रोटी एवं सब्जी भी प्रेम वश होकर खाये थे। इसी तरह हमारा जीवन ही भक्ति भाव से पूर्ण हो तो निश्चित श्रीहरि हमारे संकल्प को पूर्ण करने आयेंगे।

•

कुल त्याग कर निश्फल हुए

- काचा कौशिका (जीरागढ-हालार)

वैराग्य मूर्ति तपोमूर्ति निष्कुलानंद मुनि का जन्म सं. १८२२ में सौराष्ट्र देशान्तर्गत हालार देश में शेखपाट गाँव में हुआ था। पिता का नाम रामभाई, माता का नाम अमृतबा था। उन्होंने अपने बेटे का नाम लालजी रखा। माता-पिता दोनो भक्ति निष्ठा वाले थे। रामानन्द स्वामी के गुरु आव्यानंद स्वामी को गुरु बनाये थे। जो समाधिनिष्ठ एवं वचन सिद्ध थे। गुस्वर्य रामभाई को ऐसा वरदान दिये थे कि आपके घर महातपस्वी, वैराग्यवान पुत्र पैदा होगा। महान कार्य करके कीर्ति मान बनेगा। जाति के लोहार थे।

लालजी कृषि तथा शिल्प कर्म करते थे। रात्रि में अपने गाँव से तीन कि.मी. दूर खीरी गाँव जाते तथा भादरा गाँव से मूल शर्मा (गुणातीतानंद) आते लंबे समय तक सत्संग करते। श्रीहरि वर्णिवेश में लोज पधारे उसी समय से महिमा बढती गयी। वर्णिराज का दर्शन करने लोज आये। श्रीहरि का ऐश्वर्य देखकर वशीभूत हो गये। श्रीहरि भी उन्हें देखकर कहे कि वैराग्य में शुकदेव के समान होंगे। जेतपुर में रामानंद स्वामी ने धर्मधुरा सौपने का महोत्सव किया। उस समय लालजी सुथार ने स्वयं की बनायी हुई मंजूबा भेंट की। श्रीहरि उनके ऊपर खूब प्रसन्न हुए। सं. १८५६ में लालजी के यहाँ पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम माधवजी रखा गया। सं. १८५७ में दूसरे पुत्र का जन्म हुआ जिसका कानजी रखा गया। लालजी तो वैराग्य के कारण श्रीहरि से दीक्षा का निवेदन किये। एक समय श्रीजी महाराज शेखपाट गाँव में लालजी सुथार के यहाँ पधारे। सं. १८६० माघ शुक्ल पंचमी के दिन संत हरि भक्तों के साथ वसन्तोत्सव किये। लालजी के घर में कड़वी नीम का वृक्ष था। उस वृक्ष की पत्ती महाराजने खाई, सभी ने कहा महाराज यह पत्ती बहुत कडवी है, महाराज ने कहा अब आप सभी खाओ इसकी पत्ती मिठी है। उसी समय से नीम का वृक्ष अपनी कडवास छोड़कर मधुर हो गया। आज भी वह वृक्ष मंदिर में है। कुछ दिन रहकर महाराज को कच्छ जाने की इच्छा हुई तो लालजी भी साथ में जाने के लिए तैयार हो गये। कच्छ का मार्ग अति विकट था। मार्ग का पाथेय साथ लेकर कुछ पैसे-रुपये भी साथ लिये और महाराज के साथ चल दिये। रास्ते में भिखारीने पाथेय मागा उसे दे दिये। आगे कुछ डाकू मिले उन्होंने इनका पैसा-रुपया लूट लिया। यह सब श्रीहरि की इच्छा से हुआ।

थोड़ा आगे जाने पर लालजी का कंठ सूखने लगा श्रीहरि को बताये तो श्रीहरिने समुद्र में से पानी पीने के लिए कहाँ वहाँ पानी पीये वह पानी मधुर था। वही पर थोडा पानी भर लिये। वह भी श्रीहरि की कृपा से खारा पानी मधुर हो गया। मरुस्थल पार करने के बाद श्रीहरि एक बबूल वृक्ष के नीचे आराम करने लगे, उस समय श्रीहरि के चरणों नंगे पाँव हो गये बहुत कांटे देखकर लालजी ने कहा प्रभु कांटे निकाल दूं, ऐसा कहकर कांटे निकालते समय श्रीहरि के चरणो में सोलह चिन्ह का दर्शन किये।

भगवान अपने ऐश्वर्य प्रगट करते ही रहे। आधोई गाँव के पास जब आये तो लालजी को गाँव में जाकर भिक्षा मांग ले आओ ऐसा सूचन किये। उस समय लालजी ने कहा यहाँ सभी हमारे परिचित हैं यह सुनकर श्रीहरि उनकी दाढी-मूछ सभी काटकर कौपीन पहना कर भेजे। इनका नाम निष्कुलानंद रखे। उसी गाँव में रुकने की आज्ञा करके यमदंड नामक ग्रन्थ लिखने को कहा। श्रीजी भुजनगर पधारे। निष्कुलानंद बडे सम्पन्न थे इसलिये कहते हैं कि "संतो साभडो साची बात, नथी लीधो आ भूख्ये भेख। जननी नुं जायो कहूँ छूं अवश्य हतो हूँ एक॥"

निष्कुलानंद स्वामीने भक्त चिंतामणी, यमदंड, सारसिद्ध, वचन विधि, हरिबल गीता, धीरजख्यान, स्नेहगीता, पुरुषोत्तमप्रकाश, भक्तिनिधि, कल्याण निर्णय, मनगंजन, गुण ग्राहक, चोसठ पदी, हरि विचरण, हरि स्मृति, अरजी विनय, अवतार चिंतामणी, चिन्ह चिंतामणी, पुष्प चिंतामणी, लग्न शकुनावलि, वृत्ति विवाह, शिक्षापत्री आदि ग्रन्थ लिखे थे। संप्रदाय के संस्कृत ग्रंथो में सबसे अधिक साहित्य निष्कुलानंद स्वामी के हैं। इसके साथ गुजराती साहित्य भी इतना सरल है कि कम पढा भी समझ सकता है। भक्त चिंतामणी ग्रन्थ स्वामी का सबसे बडा

ग्रन्थ है । सं. १८८७ में गढडा में रहकर अश्विन शुक्ल-१३ को यह ग्रन्थ पूर्ण किये थे । जिसमें १६ प्रकरण हैं । ८५२७ दोहा तथा चौपाई है ।

निष्कुलानंद स्वामी के त्याग-वैराग्य की प्रसंशा गढडा के अंत्य प्रकरण के २६ वें वचनामृत द्वारा जाना जा सकता है ।

पिताजी का अनुकरण करता हुआ माधवजी भी गोपालानंद स्वामी से दीक्षा लेली । जिसका नाम गोविंदानंद रखा गया । बाद में श्रीहरि के दर्शनार्थ ले गये । श्रीहरिने जब स्वामी से कहा कि "यह निष्कुलानंद मुनि का सेवक है । तब श्रीहरि प्रसन्न होकर बोले" सिंह तो सिंह ही होता है । "गोपालानंद स्वामी जब सारंगपुर में कष्टभंजन देव की प्रतिष्ठा की उस समय गोविन्दानंद स्वामी को दृढ नैष्ठिक ब्रह्मचारी जानकर उन्हीं से आरती करवाये थे ।

•

सगरम वाघरी तथा स्वामिनारायण भगवान (बहेलिया सत्संगी बना)

- श्रीमती पुष्पाबहन केराई (अंजार-कच्छ)

सगरम वाघरी लीमड़ी गाँव का रहने वाला था । अत्यज वर्ण का बहेलिया था । इसके जीवन में सभी प्रकार के दोष थे चोरी करना, शराब पीना, मांस खाना, झूठ बोलना, परस्त्री गमन करना इत्यादि । इस गाँव के दरबार को गलत आदत थी - कुत्ते की मांस खाने की, जो सगरम कुत्ता पकड-पकड कर लाता, मारकर दरबार उसे खाजाता था । इसके अलांवा सगरम पशु पक्षी का शिकार करके दरबार को देता । जब शिकार नहीं मिलता तो किसी के घर में चोरी करता था । शराब खूब पीता, जिससे सभी कमाई शराब में चली जाती थी । घर में पत्नी को कितनी बार पानी मिलता, लेकिन पत्नी समझदार थी इसलिये नहीं बोलती थी ।

सगरम एकबार लीमडी के मूलजी शेठ के परिचय में आया मूलजी उसे धीरे धीरे पाप कर्म का फल बता-बताकर सभी आदत छोडवाने लगे । यमपुरी का भय बताते और कहते ऐसे कर्म करने वाले बडी यमयातना भोगते है । उसे यमराज के दूत लेजाते हैं । यमदंड भोगना पडता है । इस प्रकार का भय मूलजी शेठ देने लगे जिसे सुनकर सगरम तथा उसकी पत्नी सचेत होने लगी । पत्नी रोज शेठजी की वात करती जिससे सगरम धीरे-धीरे गन्दी आदत छोड़कर सच्चे मार्ग पर चलने लगा । स्वामिनारायण भगवान की उस पर कृपा हो गयी ।

•

पुत्र का दान

- श्रीमती हीना बहन संजयकुमार भोजाणी (मोरबी)

जिस प्रकार सूर्य पूर्व में उदित होकर पश्चिम में अस्त होता है ठीक इसी तरह कौशल देश में भगवान स्वामिनारायण प्रगट होकर पश्चिम गढडा में अस्त ही नहीं हुए बल्कि देश देशान्तर में अनेकों जीवो के कल्याणार्थ सत्संग के माध्यम से अपनी कर्मभूमि गुजरात को बनाये । गुजरात की भूमि को पवित्र करने के लिये संत पार्षदो के साथ पंचाला की तरफ प्रयाण करते हैं । निरंतर ६ घंटे घोड़ा चलाने के बाद शेत्रुंजी नदी के किनारे घोड़े को खडा किये वहीं पर थोडा आराम करने के बहाने सभी को आराम मिले सभी के घोडे भी पानी पीलिये, तब महाराज ने कहा क्यों सुराखाचर ! आराम हुआ, हाँ महाराज अभी कितने संत पार्षद तो पीछे रह गये हैं । इसलिये थोडे समय और आराम करें । सुरा खाचर ने कहा महाराज भूख लगी है । महाराज ने कहा आप जाकर पता लगाइये यहाँ क्या मिल सकता है । जहाँ महाराज बैठे थे वहाँ से थोडी दूर पर एक कुंभार अपनी पत्नी तथा गधे के ऊपर सामान लेकर बैठा था दूसरे गाँव काम धंधा के लिये निकला था । कुंभार का नाम पीतांबर एवं पत्नी का नाम कनु बहन, इसके साथ में चार बालक भी थे । पत्नी महाराज का दर्शन करते ही आनंदित हो गयी और कहने लगी लगता है । कोई दिव्य पुरुष हैं । चलके दर्शन करते हैं । सुरा भगत के साथ वाघरी एक खेत में जाकर ककरी का फूट ले आयी । महाराज उसका प्रसाद बनाकर स्वंय खाये बाकी सभी को दे दिये । महाराज प्रसन्न होकर वाघरी से कहे कि इसकी क्या कीमत देनी है वाघरी ने कहा कुछ नही, आप को साधु जानकर खिलाया । महाराज ने कहा में तुम्हारी इच्छा थी मुझे खिलाने की वह आज पूरी हुई, फूट खिलाने से उसका कल्याण कर दिये । लेकिन पक्की निष्ठा होनी चाहिए । कुंभार ने अपना वर्तन देकर महाराज के खाने के लिये सेवा किया, जिससे महाराज उसके ऊपर खूब प्रसन्न होकर कहे कि मांगो क्या चाहिए, तब उसने कहा हमें कुछ नहीं चाहिए आप एकबार मेरे घर अवश्य पधारियेगा । दोनो दंपती को कंठी बांधकर सत्संगी बनाये । इस वात को वीते सात वर्ष वीत गये कुंभार विमार हो गया और कहने लगा, महाराज अभी तक नहीं आये । कुंभार अपनी पत्नी से कहता है देखो महाराज जब आये

उनकी खूब सेवा करना लेकिन कुछ मांगना नहीं । अब मैं जा रहा हूँ । ऐसा कहकर धाम में चला गया । महाराज पंचाला में रंगोत्सव किये । उस समय यह भक्त परिवार पत्नी एवं चारो बालक सेवा में लगे रहे । मनु बहन अपने बेटे से कही कि महाराज से पूछो अपने भक्त को तो आप अपने धाम में ले गये, लेकिन अपने वचन के अनुसार हमारे गाँव कब पधारेंगे । चलो कल ही हम आंयेगे । कनु बहन अपने गाँव गयी । वहाँ जाकर कहीं भगवान स्वामिनारायण कहा गाँव में पधारने वाले है, इस गाँव में कोई सत्संगी नहीं था । फिर भी सारा गाँव स्वागत के लिये तैयार हो गया । कुंभार परिवार के पास कुछ नहीं था, उसने अपने वर्तन बेंचकर व्यवस्था करके ब्राह्मण से भोजन बनवाया, जिसे श्रीहरि भोजन करके खूब प्रसन्न हुए और कहे कि कनु बहन क्या चारिये मागं लो । कनु बहन कहती है कि महाराज हमें कुछ नहीं चाहिये, यद्यपि भगवान जान रहे हैं कि इसके पास कुछ नहीं है फिर भी अपने पति के वचन को पकड़कर कहती है, महाराज केवल आपकी प्रसन्नता चाहिए ।

कैसी निष्ठा, कैसी भक्ति, कैसी श्रद्धा ? महाराज की दृष्टि वेटों पर पड़ी कनू बहन कहती है महाराज बेटों को भी साथ लेजाइये, हमें भी गढपुर ले चलिये । गढपुर चलकर क्या करोगी ? गढपुर में लाडुबा, जीवुबा के साथ रहकर जूठा वर्तन साफ करुँगी, घर का काम करुँगी । महाराज ने कहा हम इन मेंसे दो को लेजा रहे हैं । दो को लेजाकर एक का नाम प्रसादानंद तथा दूसरे का नाम दहरानंद रखकर नंदसंतो की कोटि में वचनामृत में उल्लेख किया । अंत में कनु बहन को अपने धाम में ले गये । बहनों हम सभी भाग्य शाली है ऐसा दयालु धर्मकुल मिला है । हम सभी प्रतिज्ञा करें कि गादीवाला की आज्ञा के विना कुछ करेंगी नहीं । जब वे किसी गाँव में पधारे, या किसी बगल के घर में भी पधारें उस समय हम सभी वहाँ उपस्थित रहेंगी । उनकी आज्ञा के अनुसार ही दान-भेंट देना है वे जहाँ कहें वही देना है । हम सभी उन्हीं की आज्ञा में सुखी रह सकते हैं । जो धर्मादा निकालेगा वहीं सुखी रहेगा । यही सुख की चाभी है । ऐसा करने से कभी दुःख नहीं आयेगा ।

पृष्ठ २९ से आगे.....

अंत में नीलकंठ वर्णी पंढरपुर में विठु भगवान को भेंटे

सोने की हो गयी । जहाँ पर बैठकर पुंडलीक की प्रतिक्षा किये थे वहीं पर मंदिर बन गया । उसी मंदिर में ईट के ऊपर भगवान विठ्ठल आज दिव्य दर्शन दे रहे है । तथा स्वामिनारायण संम्प्रदाय के भक्तों की भीड लगती है ।

स्वामिनारायण भगवान जब पंडर पुर पधारे उस समय भगवान विठ्ठल की भव्य मूर्ति का आलिंगन करके अपनी मनोकामना पूर्ण की थी । स्वामिनारायण भगवान पंढरपुर में रहकर हरिभक्तों को माता पिता की सेवा का अमूल्य बोध दिये थे । माता-पिता के चरणों में चारो धाम है । सभी तीर्थ है। इस प्रकार प्रभु के प्रवचन सुनकर बहुत नवयुवानों में परिवर्तन आया था।

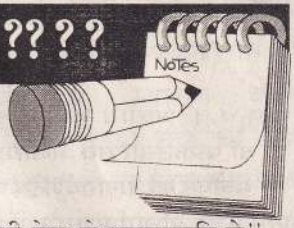
भगवान स्वामिनारायणने भी अपने मा-बाप की सेवा की थी । जब वे अक्षरधाम में चले गये तब वन विचरण के लिये निकले । इससे बडा जगत में मा-बाप की सेवा का अन्य उदाहरण क्या हो सकता है ।

पंढर पुर को पावन करने के बाद रामायण के समय का चित्रकुट वर्तमान समय का नासिक शहर जहाँ पर भगवान राम के वन विचरण के समय भगवान राम ने झोपड़ी बनाई थी, वही पर लक्ष्मण रावण की बहन शूपर्णखा की नाक-कान काटे थे और लंका वापस किये थे । इसी स्थल पर छोटे भाई भरत अयोध्या से माताओं तथा गुरु वशिष्ठ एवं प्रजा के साथ भगवान राम को लेने आये थे । उसी स्थल पर पहुँच कर भगवान स्वामिनारायण भगवान राम के अविस्मरणीय मिलाप को अपने हृदय में उतारकर गद्‌गद् हो गये थे ।

प्रभुअपनी वन विचरण लीला यहीं पूर्ण किये । इस समय उन्हें सात वर्ष वीत चुके थे । इस समय वर्णी की उम्र उठ्ठारह वर्ष की हो चुकी थी ।

सात वर्ष में प्रभु गुजरात के सिवाय सभी प्रदेशों को पावन कर चुके थे । गुजरात ही प्रभु की लीला का मुख्य स्थल था । गुजरात की भूमि को अपनी कर्म भूमि बनाकर, धर्म की स्थापना करके, लाखो जीवो का उद्धार किया, उन्हे सत्मार्ग दिया और मोक्ष गामी बनाया । इनके कार्यक्षेत्र में मार्ग दर्शक बनने वाले उद्धवजी यहीं मीलने वाले थे । इन्हीं कई कारणो से गुजरात को मूल धर्मस्थान बनाया ।

?????????????? प्रश्नपेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ जीव का क्या लक्षण है ?

प्रश्न : २ ''आ घडी आ पल अने आसाधु कोटि कल्पे मळवा दुर्लभ छे, पण महिमा जणातो नथी केम जे मनुष्याकृति छे'' - माटे यह बात किस नंद संत ने कही है ?

प्रश्न : ३ महाराज संतो के साथ वडताल जाने को तैयार हुए कि उसी समय सूरत से संघ दर्शन करने को आया, महाराज का पूजन अर्चन किया और हाथ में स्या की वांसुरी दिया उसे देखकर ब्रह्मानंद स्वामीने कहा ?

प्रश्न : ४ स.गु. नित्यानंद स्वामी का जन्म किस साल में हुआ था तथा उनके माता पिता तथा उनका क्या नाम था ?

प्रश्न : ५ ''धन्य धन्य ..... गाँव, वाले जेने कह्युं निज धाम'' - इस पंक्ति को पूर्ण करो ?

प्रश्न : ६ जिस प्रकार धर्म मे या भगवान की भक्ति से कोई पीछे नहीं आता तथा अपने इष्टदेव भगवान श्रीकृष्ण नारायण में से बुद्धि कभी डिगे नहीं उसके लिए श्रीजी महाराजने एक कागज लिखकर देश-देश के सत्संगियों को भेजा था ।'' वह कागज किस स्थान पर तथा कब लिखा था ?

प्रश्न : ७ प्रेमी गधिका प्रेमे झुलावे रे, झुले हरि हिंडोळे इस कीर्तन के रचयिता कौन हैं ?

सितम्बर २००७ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) श्रीकृष्ण भगवान की विषयक महात्म्यज्ञान के साथ हार्दिक स्नेह वही भक्ति - शि.प. १०३ । (२) स.गु. निर्विकारानन्द स्वामी मारंगपुर १९ । (३) उनके चरण में १६ चिन्ह होना चाहिए । हमें बताये विना स्वयं बता देते हैं । इसके अलावा इस कुंडी पर पडे हुए तीन चौपाल को मांगलेते । (४) थाली में से पेंडा लेकर स्वयं भोजन करने लगे, सम्पूर्ण पेडा खा गये । (५) बड़े रामभाई । (६) आपकी मूर्ति का महासुख छोड़ कर अन्न क्या प्रिय लगेगा । अन्न जल तो याद भी नहीं आता । (७) स.गु. प्रेमानंद स्वामी ।

१. सां.यो. मंजुबा, भारतीबा (अमदाबाद)
२. हसुबहन कन्हैयालाल ठक्कर (इसनपुर)
३. नीनयम सोनी (नरोडा)
४. वीणाबहन आर. भावसार (अहमदाबाद)
५. अरविंदाबहन एन. भावसार (चांदलोडिया)
६. मनाली पारुल पुष्पा (जीरागढ)
७. काचा कौशिक, भावेश, चंद्रेश (जीरागढ)
८. रेखा बहन मनसुख पोरिया (जामसर)
९. गंगा बहन भक्तिभाई (झूलासड)
१०. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल (सूलासड)
११. ज्योत्स्नाबहन राजेन्द्रभाई कोठारी (आनंदपुरा)
१२. मीनाबहन डायालाल पटेल (जासलपुर)
१३. गीताबहन प्रवीणभाई (गजपुर)
१४. सां.यो. ललिताबा तथा गीताबा ।
१५. रंजनबा तथा नानीबा (विराटनगर)
१६. पुष्पाबहन रतीलाल तथा मधु बहन अशोकभाई (ओढव)
१७. काछडिया गीता बाबुभाई
१८. हर्षद कोलोनी मंदिर (बापूनगर)
१९. प्रगति सुदानी (राजकोट)
२०. बर्मकरण (जीरागढ)
२१. विनोदभाई पुंजाभाई पटेल (वहेलाल)
२२. भानुबहन वी. परमार, भूमिका वी.
२३. सोनी दक्षाबहन घनश्यामभाई (अहमदाबाद)
२४. अंजनाबहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
२५. शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
२६. प्रफुलाबहन शरदभाई पटेल (उवारसद)
२७. पटेल कैलासबहन विष्णुभाई (नांदोल)
२८. डाभी मफाजी सरदारजी (डांगरवा)
२९. पटेल हेली किरीटभाई (नरोडा)
३०. पटेल सुभद्राबहन (कनीपुर)
३१. सोनी धर्मिष्ठाबहन धीरजलाल (अहमदाबाद)
३२. सां.यो. ललिताबा तथा गीताबहन (पित्रोडा)
३३. पटेल गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)
३४. अमृतलाल के. मोदी (सोजा)
३५. चंद्रिका, ज्योत्सना, कृपा (जीरागढ)
३६. कंचनबहन बाबूभाई पटेल (रतनपर)
३७. माधवजीभाई हरखजीभाई (मोरबी)
३८. भगवानदास बेलजीभाई सोनी (मोरबी)
३९. सागरबहन नटवरभाई पटेल (नांदोल)
४०. मेघाबहन कमलेशकुमार पटेल (कुहा)
४१. सां.यो. शिल्पाबा, शीतलबा (सुरेन्द्रनगर)
४२. करशन जोइताराम पटेल (कोठा)

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें । २. प्रश्न का उत्तर स्वच्छ अक्षर में होना आवश्यक है, जिससे सरलता से उसे पढा जा सके । पत्र के ऊपर एक ही व्यक्ति का नाम होना आवश्यक है, उसी का नाम अंक में छापा जायेगा ।

सत्संग समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३५ वाँ प्राकट्योत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति परम पूज्य आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३५ वाँ प्राकट्योत्सव आश्वीन शुकलपक्ष-१० विज्या दशमी के दिन ता. २१-१०-०७ रविवार के शुभ दिवस पर सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू. बडे महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ निश्रा में हजारो संत-हरिभक्तोने धूमधाम से मनाया ।

इस शुभ दिन पर प्रथम प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की निश्रामें तथा हजारो संत हरिभक्तों की उपस्थिति में अहमदाबाद म्युनिसिपल कोर्पोरेशन द्वारा हमारे मंदिर के बहार के आँगन का "श्री नरनारायणदेव चौक" नामाभिधान करके उद्घाटन प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से हुआ था ।

श्री नरनारायणदेव के दर्शन करने के बाद सभा में बिराजमान होते ही प्रथम विद्वान विप्रो द्वारा स्वस्तिवाचन की शुभ मंगल कामना की गई ।

उसके बाद वयोवृद्ध तथा ज्ञानवृद्ध संतोने पू. महाराजश्री की समूह आरती की सभा का संचालन पू. महंत स.गु. स्वा. नारायणस्वरूपदासजी की तरफ से संप्रदाय के विद्वान कथाकार पू.पी.पी. स्वामीने किया था । श्री स्वामिनारायण मासिक के साथ वर्षो से जुडे हुए माननीय लेख लिखते हुए मूर्धन्य लेखक महोदय का सन्मान पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया ।

आज की सभा में श्री स्वामिनारायण संस्कृत महा विद्यालय के विद्यार्थी संतो में से अहमदाबाद मंदिर के कोठारी शा.धर्मकिशोरदास (हिन्दी में), शा. भगवतचरणदास (अंग्रेजी में शा. गोपालजीवनदास (मूली), शा. यज्ञप्रकाशदास (कांकरिया), शा. श्रीजीप्रकाशदास (शोकली.), शा. चैतन्यदास (कोटेश्वर), शा. सत्यसंकल्पदास (मूली), शा. स्वामी अक्षरप्रकाशदास (भूज), शा. पूर्णप्रकाशदास (माणसा) आदि संतोने रोचक भाषा में विद्वतापूर्ण प्रवचन किये थे ।

पू. महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से कोठारी शा.स्वा. रामानुजदास, शा. वी.पी. स्वामी, कोठारी शा. धर्मकिशोरदास तथा स्वा. हरिप्रकाशदास, जेतलपुर के महंत स्वामी के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार जेतलपुर संस्कृत पाठशाला के संतोने सभा मंडप को सुशोभित करने की महत्वपूर्ण सेवा प्रदान की थी । *- कल्पेशभाई पटेल*

अहमदाबाद मंदिर में जलझीलणी एकादशी के दिन श्री गणपतिजी का जुलूस निकला था

श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित रीत-परंपरा के अनुसार भाद्रपक्ष शुक्ल-११ जलझीलणी एकादशी के दिन श्री गणपतिजी का जूलुस अमहादाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर से प.पू. हमारे भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव समक्ष श्री गणपतिजी का पूजन आरती करके दोपहर १-३० बजे मंदिर से लांबेश्वर की पोल, केलिकोडोम से सीधे नारायणघाट मंदिर पर संत-हरिभक्तगण तथा श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल आदि सभीने उत्सव के साथ आनंद प्रगट किया ।

उसी प्रकार शाम ६-०० बजे रीलीफ रोड, ओरिएन्टल बिल्डींग से कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर रोड के बीच प.पू. लालजी महाराजश्री की निश्रा में पू. महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी तथा जेतलपुर के पूज्य पी.पी. स्वामी. संस्कृत पाठशाळा के संतो के साथ तथा मार्गदर्शन अनुसार हरिभक्त तथा उत्सव मंडलने सर्वोपरि श्रीहरि के कीर्तनो का गान करके सभी उत्सव में मग्न हो गये ।

रात्री में ७-३० बजे हमारे मंदिर के चौक में जूलुस पहुँचा था ।

- कोठारी शा. धर्मकिशोरदासजी

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वमिनारायण मंदिर में चातुर्मास कथा

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के दिव्य सानिध्य में तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी की प्रेरणा से श्रावण महिने में हमारे कथाकार स्वामी भक्तिवल्लभदासजी (अमेरिका-न्युजर्सीवाले) ने श्रीमद् भागवत कथा शास्त्र का सुबह तथा शाम अपनी सुमधुर शैली में कथामृत पान करवाकर नगरवासी धार्मिक जनोंको सुंदर पान करवाकर नगरवासी धार्मिक जनोको सुंदर लाभ दिया । पवित्र श्रावण महीने में ऐसा धन्य लाभ प्राप्त करके अपना जीवन धन्य बना लिया था । *- कोठारी शा. धर्मकिशोरदास*

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण महीने में ठाकुरजी के समक्ष विभिन्न प्रकार के झुलोत्सव करवाकर हरिभक्तो को अलौकिक दर्शन करवाये थे । ता. १८-८-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । श्रीमद् भागवत कथा के वक्तापद पर शास्त्री निर्लेपदासजी थे । जिसकी पूर्णाहुति प.पू. आचार्य महराजश्री के वरद् हाथों से हुई थी । इस प्रसंग पर धामोधाम के संत पधारे थे । सभा संचालन शा. सत्यप्रकाशदासने (मूली) किया था ।

ता. २४-९-०७ के दिन समूह महापूजा का आयोजन किया गया था । जिसमें कई भक्तजनों ने लाभ लिया था । शनिवार के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्रीने श्री कष्टभंजनदेव की आरती उतारकर सभी को अलौकिक दर्शन का लाभ दिया था । महंत स्वामी गुस्प्रसाददासजी की प्रेरणा से प्रसंग का सुंदर आयोजन हुआ था ।

महारुद्र यज्ञ

श्रावण महिने की अमावस्या को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री सिद्धेश्वर महादेव का पूजन अर्चन तथा महारुद्र यज्ञ धूमधाम से संपन्न हुआ था । जिसके मुख्य यजमान प.भ. हरिकृष्णभाई ठक्कर थे ।

शाम के दिव्य वातावरण में भूदेवोने वेदविधिपूर्वक महाभिषेक करके आरती उतारी थी । जिसके मुख्य यजमान प.भ. अजयभाई देसाई थे ।

समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्री ने शिव महिमा का शास्त्रोक्त विधान के साथ माहात्म्य समझाया था ।

जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी का जुलूस कांकरिया सरोवर तक धूमधाम से निकला था ।

- विष्णुकुमार शास्त्री

जेतलपुर धाम में जलझीलणी एकादशी का उत्सव मनाया गया

"धन्य धन्य जेतलपुर गाम, वाले जेने कर्युं निजधाम" - निष्कुलानंद स्वामी के बुलाने पर श्रीहरि जिस गाँव में पदार्पण १००-१०० बार घर-घर किये थे तथा भोजन किये थे । ऐसे श्रीहरि को भाद्र महीने की एकादशी "अर्थात् जलझीलणी एकादशी" इस दिन जेतलपुर धाम में धूमधाम से निज मंदिर से श्रीहरि को पालकी में बैठाकर ग्रामजनोने प्रभु को सरोवर में स्नान करवाया था । उस देवसरोवर में श्रीहरि को जल में स्नान करवाया था । इस दिन जेतलपुर में बहुत बडा मेला लगता है । तथा प्रथम ठाकरजी अक्षरवाडी में हरिमंडप में पधारे थे । वहाँ से देवसरोवर में पधारे थे । तथा आरती करवाकर ककडी का प्रसाद बाँटा गया था । इस प्रकार जलझीलणी एकादशी धूमधाम से मनायी जाती है । जिसमें जेतलपुर मंदिर के महंत स्वा. स.गु. शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. पी.पी. स्वामी तथा स.गु. के.पी. स्वामी, मंदिर के पूजारी ब्र. पूर्णानंदजी तथा ग्रामजनोने अत्यंत उत्साह पूर्वक भाग लिया था । एकादशी के उत्सव का आयोजन पू. महंत स्वामी के.पी. स्वामी तथा वडील वयोवृद्ध श्याम स्वामीने किया था ।

- शा. भक्तिनंदन स्वामी

जयपुर (राज.) श्री स्वामिनारयण मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के पू. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से यहाँ के महंत शा. स्वामी देवस्वरूपदासजी की प्रेरणा से श्रावण वद-५ के दिन ठाकुरजी का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर जेतलपुर से महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी तथा श्यामचरण स्वामी, कांकरिया महंत स्वामी गुस्प्रसाददासजी, जेतलपुर के महंत के.पी. स्वामी आदि संतो की उपस्थिति में श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक वेदविधिपूर्वक संपन्न हुआ । उसके बाद विभिन्न पक्वान से छप्पनभोग का अन्नकूट भगवान को धराया गया । जिसमें कई हरिभक्तों ने लाभ लिया था । पाटोत्सव के यजमानपद का लाभ प.भ. ईश्वरभाई परसोत्तमभाई पटेल के परिवार (मेगवाले) ने प्राप्त किया था । पू. आत्मप्रकाश स्वामी यजमान परिवार का पुष्पाहार पहनाकर सन्मान करके आशीर्वाद दिये । जयपुर के (मेतपुर-खंभातके) स्थानिक हरिभक्तों की सेवा प्रेरणास्प थी । हरिभक्तोने दर्शन का दिव्य लाभ लिया था । समग्र उत्सव में जेतलपुर के महंत के.पी. स्वामी अग्रेसर थे ।

- पी.पी. स्वामी, जेतलपुर

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में मंदिर निर्माण कार्य पुनः प्रारंभ

भगवान श्री स्वामिनारायण के चरण कमलो से पवित्र हुई महेसाणा की भूमि जहाँ श्रीहरिने विधवा ब्राह्मण कसलीबाई के मनोरथ पूरे करने हेतु खीचडी के दातून बनाये थे । उस पावन भूमि में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा उन्हीं के वरद् हाथों से शिखर बद्ध महामंदिर का सन १९९५ में शिलान्यास विधि की गयी थी । उसके बाद तीन वर्ष की अवधि में मंदिर का ७०% कार्य पूर्ण होने आया है ऐसे संजोगो में जमीन मालकी हक्क के बारे में कुछ कोर्ट केस उपस्थित होने के कारण कार्य स्थगित किया गया था । ईष्टदेव श्रीहरि की असीम कृपा से समस्त अवरोधो का समान आने के बाद १५-९-२००७ के मंगल दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की २४ घंटे की अखंड धून करके पुनः बाकी का निर्माण कार्य का प्रारंभ प.पू.ध.धु. महाराजश्रीके वरद् हाथों से किया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा आशीर्वाद से आगामी एक वर्ष में कार्य पूर्ण हो जायेगा तथा २००९ के मंगल वर्ष में धूमधाम से महामंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा की विधि होगी । महेसाणा विस्तार तथा शहेर के हरिभक्त उस क्षण की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे है । सभी सत्संगी हरिभक्त कार्य को पूर्ण करने हेतु तन, मन, धन के सहयोग की अपेक्षा रखते हैं । वंशी पहाडपुर लाल पथ्थर से संप्रदाय में अजोड अद्वितीय अलौकिक महामंदिर तैयार होगा । तथा महेसाणा जिले का मुख्य स्थान हमारे संप्रदाय का मंदिर बनेगा ।

जेतलपुर मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा शास्त्री स्वामी पी.पी. स्वामी के संपूर्ण सहयोग से मंदिर का कार्य पूर्ण जोश में शुरुहो गया है। इस मंदिर में सेवा के हेतु मूर्ति सेवा तथा कलश, ध्वजदंड, शिखर, सिंहासन, आभूषण, वस्त्र-बर्तन, सुवर्ण आदि में सेवा प्रदान करने हेतु समस्त हरिभक्तो को अनुरोध है।

संपर्क हेतु

शास्त्री उत्तमप्रियदासजी, स्वामी नारायणप्रसाददासजी,

महंत स्वामी श्री स्वामिनारायण मंदिर, गायत्री मंदिर के सामने, महेसाणा (उ.गु.)

ईडर श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में तथा परम पूज्य आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्रावण महीने में ठाकुरजी के विविध झूलोत्सव बनाकर झुलवाया गया था।

यहाँ मंदिर में जन्माष्टमी का मेला हंमेशा होता है। जिसमें हजारो हरिभक्तो ने दर्शन हेतु भाग लिया था।

हिंमतनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

हिंमतनगर मंदिर में बिराजमान बालस्वरूप श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में श्रावण महिने में अलौकिक ठाकुरजी के झुलोत्सव दर्शन करवाये गये थे। सभी भक्तजनोने कथा श्रवण तथा मटकी फोडने का कार्यक्रम भी मनाया था। महंत शा. स्वामी आनंदजीवनदासजीने इस प्रसंग का सुंदर आयोजन किया था।

- साधु धर्मकिशोरदास

हमारी शैक्षणिक संस्था के समाचार

ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी शिक्षण ट्रस्ट संचालित श्री सहजानंद प्राथमिक विद्या मंदिर (गु.मा.) के विद्यार्थी सी.आर.सी. कक्षा पर आयोजित गणित-विज्ञान प्रदर्शन में छ विभाग में से चार विभाग में श्रेष्ठ कृति का स्थान प्राप्त किया है। आंबावाडी वोर्ड में से कुल २५ स्कुल में से हमारी स्कूल के विद्यार्थियोने प्रथम नंबर प्राप्त किया है।

१. <u>ट्राफिक समस्या का निवारण :</u> वोरा पार्थ संदिपभाई, शेठ देवांशी, पाठक सालिका।
२. <u>ग्लोबर वोर्मिग से खेती पर होते नुकशान की असर :</u> शाह सपन, संघवी नैसर्गी।
३. <u>हरियाली वाले मकान पर्यावरण संवर्धक पाणी बीजली का संचय कर रोके ऐसे मकान :</u> व्यास देवांशी, शेठ केन, पटेल जील।
४. <u>ईन्फ्रारेड किरण तथा प्रकाशित काईबर द्वारा छाने संचार :</u> व्यास अंतरिक्ष, ठाकर हिनल तथा कला शिक्षक संघ द्वारा आयोजीत।

तत्काल बाल स्पर्धा में कक्षा-६ के शाह सपना तथा कक्षा-४ की पंड्या जानकी ने १२०० विद्यार्थीओ में प्रथम नंबर प्राप्त किया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री हमारे विद्यार्थीओ की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु आशीर्वाद दिये थे। *- आचार्यश्री, श्री सहजानंद प्राथमिक विद्या मंदिर*

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हमारे मथुरा श्री स्वामिनारायणमंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में श्रावण महिने में अनेक झुलोत्सव करवाकर ठाकरुजी को झुलाया था। श्रावण महिने में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन शेठश्री केदारनाथ मित्तल तथा भूता पंडित के साथ सहकार से संपन्न हुआ था। ता. २-९-०७ के दिन केदारनाथ मित्तल के घर से पोथीयात्रा धूमधाम से मंदिर आयी थी। महंत स्वामी भानुप्रसाददासजी की प्रेरणा से समग्र आयोजन किया गया था।

- पूजारी स्वामी

दिल्ही श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

न्यु दिल्ही के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा-आशीर्वाद से तथा महंत स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी तथा महंत स.गु. स्वामी विष्णुप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्रावण सुद-८ को बाल स्वरूप श्री घनश्याम महराज का पाटोत्सव अभिषेक वेद विधिपूर्वक धूमधाम से संपन्न हुआ था। महंत स्वामी के वरद् हाथों से बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का अभिषेक षोडशोपचार विधि संपन्न हुआ था। उसके बाद विविध पक्वानो के भोग के साथ अन्नकूट की आरती हुई थी। प्रासंगिक सभा में महंत स्वामी तथा हरिभक्तोने श्री घनश्याम महाराज के लीला चरित्रो तथा धर्मकुल के महिमा की बाते की। *(जनकभाई टांक)*

डांगरवा

श्रीजी महाराज के प्रसादी के जतनबा के डांगरवा गाँव में पवित्र श्रावण महीने में श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीमद् भागवत कथा पारायण शा. ब्रह्मस्वरूपदासजी गुरु स्वामी घनश्यामजीवनदासजी (वालीवाले) के वक्ता पद पर संपन्न हुई थी। *(कोठारीश्री)*

चलोडा (जीतबावाला)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २६-७-०७ की रात्रि में सत्संग सभा में धोलका के महंत शास्त्री स्वामी पूर्णप्रकाशदासजी संत मंडलने सर्वोपरि श्रीजी महाराज तथा नरनारायणदेव गादी का माहात्म्य समझाया था। साथ में पधारे शा. नंदकिशोरदासने भी सुंदर वक्तव्य दिया था। *- जयंतीभाई पटेल*

माघवगढ (प्रांतीज देश)

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण

महीने में ठाकोरजी को पूरा महीना अनेक प्रकार हिंडोले को सजाकर झुलाया जाता है । जिसमें तलोद के हरि भक्तों ने सुंदर सेवा दी थी । *- कोठारीश्री*

मोडासा

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चातुर्मास के श्रावण महीने में शास्त्री विश्वस्वरूपदास गुरु शा. छपैयाप्रसाददासजीने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत भक्त चिंतामणी ग्रन्थ की कथा का दिव्य लाभ दिया । कांतिभाई प्रजापति के यहाँ महापूजा और रमेशभाई पटेल के यहाँ जनमंगल यज्ञ का आयोजन किया गया मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धामधूम से मनाया गया । देवस्वामी, हार्दिक भगत और करण भगत की सेवा प्रेरणा स्म थी ।

- कोठारी नारणभाई

आदेश्वर नगर नरोडा मंदिर

यहाँ के अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण महीने में ता. २४-८-०७ से ११-९-०७ तक रोज रात्रि में ९-०० से १०-०० बजे तक साधु श्रीजीस्वरूपदासने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान तथा श्री नरनारायणदेव की महिमा के साथ वचनामृत पर सुंदर विवेचन करके कथा करके हरिभक्तो को सुंदर लाभ दिया था । हरिभक्तों में श्री ठाकरसीभाई भीखुभाई, कांतिकाका, महेन्द्रभाई तथा नवीनभाई आदि सभी की सेवा प्रेरणास्म थी । ता. १६-९-०७ के दिन सत्संग मंडल ने वडताल मंदिर की यात्रा करके १२ घंटे महामंत्र धून में बैठकर श्रीहरि का स्मरण किया था । *- बेचरभाई परमार*

मारुसणा

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण महीने में शास्त्री छपैयादासजीने 'श्रीमद् सत्संगिभूषण' की कथा १५ दिन तक की थी । जन्माष्टमी की रात्रि में १२-०० बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । *- हार्दिक भगत*

लुणावाडा

लुणावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण सुद-१ से श्रावण सुद-१५ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा शा. स्वामी छपैयाप्रसाददासजीने की थी । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा संत-पार्षदो की सेवा प्रसंशनीय थी ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

मेघाणीनगर की बाल सभा में पधारे हुए प.पू. लालजी महाराजश्री

ता. २६-८-०७ के रविवार को रोज मेघाणीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में हर रविवार को आयोजित बाल सभा में प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री १०८ श्री वजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे । तथा बाल सभा में १०० जितने बच्चो को प्रमाणपत्र के साथ पेन तथा शिक्षापत्री देकर आशीर्वाद दिये थे ।

बाल सभा में सभी बच्चो को नियमित मंदिर आने हेतु तथा बाल सभा में प्रत्येक रविवार को भाग लेने की आज्ञा करके आशीर्वाद दिये थे ।

- रणछोटडभाई देवाणी

नांदोल मंदिर

नांदोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हरिभक्तोने सुंदर कलात्मक झूलोत्सव बनाकर भगवान को झुलाया गया था । हरिभक्तोंने उत्साह श्रद्धा से मंदिर की प्रवृत्ति में बहुत ही रस लेकर सेवा की थी ।

- नांदोल सत्संग मंडल

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर

बोपल के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत हरिवल्लभ स्वामी तथा महेन्द्र भगत ने श्रद्धा भक्ति से ठाकुरजी के विभिन्न कलात्मक झुलोत्सव के दर्शन करवाये थे ।

रात्रि में सत्यसंकल्पदास स्वामीने श्रीमद् भागवत कथा का रसपान करवाया था । श्रावण सुद-८ जन्माष्टमी के दिन कृष्ण जन्मोत्सव के साथ रास गरबा का आयोजन किया गया था ।

मंदिर में विराजमान शिवजी का विप्रोने लाखो बिल्व पत्रो से अभिषेक करके पूजन विधि की थी । *- प्रविणभाई उपाध्याय*

वसई (डालला) मंदिर

वसई गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से गाँव के समस्त हरिभक्तों ने श्रावण महीने में श्रद्धा, भक्ति तथा उत्साह से बहुत ही सुंदर कलात्मक झूलोत्सव बनाकर ठाकुरजी को झुलाया था । मंदिर का ९१ वाँ पाटोत्सव भाद्र सुद-५ के दिन पू. महाराजश्री की आज्ञा से माणसा के महंत शास्त्री स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी तथा संत मंडलने श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करके धूमधाम से मनाया गया था जिसके यजमान विक्रमसिंह चावडा थे । *- रजनीभाई*

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप

श्री स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा अनुसार तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से भाद्र सुद-६ के दिन महेसाणा मंदिर से पू. महंत स्वमी तथा संतोने पधारकर भगवान श्रीहरि की दिव्य लीला चरित्रों का वर्णन करके सभी भक्तजनो के दिल जीत लिया था । महेसाणा नरनारायणदेव युवक मंडलने कीर्तन भक्ति करके सभी ग्रामजनो को हरि रस में मग्न कर दिया था ।

- शा. स्वामी हरिवल्लभदास, महेसाणा

ओलपाड (सुरत) में सत्संग सभा

सर्वोपरि श्रीजी महाराजने ओलपाड में अपने दिव्य चरणो से इस भूमि को अति पावन कर दिया था । हालार के हरिभक्त नोकरी व्यापार हेतु यहाँ आये थे । जिनकी श्रद्धा प्रारंभ से ही मूल संप्रदाय में तथा महाराजश्री की आज्ञा अनुसार वर्तन करने तथा श्री राधाकृष्णदेव के प्रति वफादारी की भावना पहले से ही है । परम पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कुछ समय से हर गुरुवार को अलग-अलग हरिभक्तों के घर सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है । प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु.

आचार्य महाराजश्री सभा दरम्यान फोन द्वारा प्रेरणात्मक आशीर्वाद प्रदान करतें है।

- शांतिभाई वरु

सिद्धपुर में नूतन शिखरबद्ध मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के दिव्य चरणो से अंकित तीर्थोत्तमा भूमि सिद्धपुर हाई-वे रोड पर प.पू.ध.धु. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वादात्मक संकल्प से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से स.गु. शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरूपदासजीने हरिभक्तो के साथ सहकार से हमारे श्री नरनारायणदेव ताबा के तीन शिखर के भव्य मंदिर का काम पूर्ण होते संवत २०६४ के कार्तिक वद-२ की ता. २६-११-०७ के शुभ दिन श्री धर्म भक्ति हरिकृष्ण महाराज तथा श्री राधाकृष्णदेव आदि स्वरूपो की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से संपन्न होनेवाला है।

मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष में ता. २०-११-०७ से श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण, विष्णुयाग तथा विविध कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। इस प्रसंग पर समस्त धर्मकुल परिवार तथा देश-देश के संत पधारेगें।- *महंत शा. प्रेमस्वरूपदासजी*

विसनगर में पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री अनिलभाई के. पटेल (मनन स्टोर्स) माताजी के स्मरणार्थ यहाँ ता. १०-८-०७ से १६-९-०७ तक श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया था। जिसके यजमान श्री दिनेशभाई, श्री बिपीनभाई, श्री अशोकभाई, श्री अनिलभाई तथा श्री दीपकभाई थे। कथा के वक्तापद पर शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजीने सुंदर कथा का लाभ दिया था। कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव तथा रुक्मिणी विवाह में वरपक्ष के यजमान कोठारी कांतिभाई पटेल बने थे।

इस प्रसंग पर शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी नाराणघाट के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा नाना पी.पी. स्वामी आदि अनेक संतोने पधारकर लाभ दिया था। पूर्णाहुति के प्रसंग पर पधारकर यजमान परिवार को आशीर्वाद प्रदान किये थे। *- परेशभाई पटेल*

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

मूली मंदिर में झूलोत्सव तथा जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया

परम पू. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ श्री राधाकृष्णदेव के समक्ष स.गु. कोठारी स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन अनुसार युवा उत्साही महंत शा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजीकी प्रेरणा से तथा पूजारी स्वामी प्रेमवल्लभदासजी की प्रेरणा से हरिभक्तो ने विविध सुंदर झूलोत्सव दर्शन करवाकर हरिभक्तों को दर्शन का दिव्य लाभ प्रदान किया था।

श्रावण वद-८ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री विदेश में सत्संग विचरण अर्थे पधारे हुए थे इस कारण अगले ही दिन फोन द्वारा उत्सव का लाभ लेने पधारे हुए सभी संतो को आशीर्वाद प्रदान किये थे। दोपहर के बाद प्रासंगिक सभा में धून कीर्तन का तथा बाद में पवित्र श्रावम महीने के उपलक्ष्य में आयोजित श्रीमद् भागवत ज्ञानयज्ञ का शा. सुव्रतवल्लभदासजीने सुंदर कथामृत पान करवाया था। आगेवान हरिभक्तों द्वारा कथा की पूर्णाहुति तथा समग्र धर्मकुल की तरफ से आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की प्रतिमा का पूजन-अर्चन आरती की गयी थी। उसके बाद कोठारी कृष्णवल्लभदास स्वामी राम स्वामी, भक्ति स्वामी तथा सत्यप्रकाश स्वामीने प्रसंग के अनुरूप प्रवचन किया था।

रात्रि में ८-३० से १२-०० बजे तक ब्रह्मानंद सभा मंडप में महाप्रतापी श्री घनश्याम महाराज के दिव्य आशीर्वाद से गवैया साधु भजनप्रकाश तथा संत हरिभक्तो ने बहुत ही रसभर कीर्तन वाजींत्रो के साथ गाये थे। रात्रि में १२-०० बजे पू. महंत स्वामी के वरद् हाथों से श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती के दर्शन करके हरिभक्तो को भावविभोर बना दिया था। उत्सव में पूजारी प्रेमवल्लभदासजी तथा संत हरिभक्तोने सुंदर व्यवस्था करके सभी को प्रसन्न कर दिया था। *- नवलदान गढवी*

सुरेन्द्रनगर मंदिर में झूलोत्सव दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से वर्तमान में महंत स्वामी की प्रेरणा से श्रावण महीने में अनेक प्रकार के सुंदर कलात्मक झूले में ठाकुरजी को झुलाया गया था। ता. २४-८-०७ से ३०-८-०७ तक नकली नोटो के १२ झूले सभा में दर्शन हेतु रखे गये थे। जिसका न्युझ पेपर तथा मिडीया में सुंदर कवरेज किया गया था। श्रावण वद-९ से श्रावण वद अमावस्या तक शास्त्री सुव्रत स्वामीने श्रीमद् भागवत दशम स्कंध का पान करवाया था। जलझीलणी एकादशी का उत्सव भी धामधूम से मनाया गया था।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

लींबडी (तपोवन मंदिर)

तपोवन श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्रावण महीने में श्रीमद् भागवत कथा साधु भक्तवत्सलदासने की थी। समूह महापूजा, समूह जनमंगल पाठ तथा समूह आरती का आयोजन किया गया था। साधु वंदनप्रकाशदासने संगीत के ताल पर कथा सुनायी थी।

- कोठारी माणेकलाल

विदेश सत्संग वृत्तान्त

बोस्टन (U.S.A., I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव पारायण धूमधाम से मनाया गया

अमेरिका के बोस्टन में आये हुए हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से २१ अगस्त से २५ अगस्त तथा पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन का पंचान्ह पारायण संप्रदाय के विद्वान सुप्रसिद्ध कथाकार पी.पी. स्वामीके वक्तापद पर संपन्न हुआ था । प्रत्येक दिन ७०० से ८०० भाविक भक्तोने कथामृत पान किया था ।

प्रसंग के दरम्यान प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे सभी संत-हरिभक्तोने उनका स्वागत करके उत्सव मनाये । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमल द्वारा मंदिर में बिराजमान देवों का षोडशोपचार महाभिषेक वेदविधिसे संपन्न हुआ था । उसके बाद पारायण कथा तथा महापूजा की पूर्णाहुति अपने वरद् हाथों से की थी ।

प्रासंगिक सभा में प्रमुखश्री अरविंदभाई कचरदास पटेल (डांगरवावाले) तथा उपप्रमुखश्री ज्ञानेशभाई धोलकियाने सी.ओ. का लेटर (काउन्सील द्वारा मंदिर के लीगल परमीशन अत्यंत जरुरी है) प.पू. आचार्य महाराजश्री को अर्पण किया था ।

उसके बाद पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. नारणभाई बेचरदास पटेल (डांगरवा) पारायण के यजमान प.भ. सुरेशभाई, महापूजा के यजमान श्री ब्रिजेशभाई पटेल आदि यजमान तथा श्री रमणभाई कचरदास पटेल, श्री केनीभाई पटेल, श्री संजयभाई रसिकभाई पटेल, श्री चंदेशभाई मणीभाई पटेल आदि हरिभक्तोने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे । सभा का संचालन बोस्टन मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी हरिप्रकाशदासजी (मूली)ने सुंदर ढंग से किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ पू. पी.पी. स्वामी के शिष्य महंत शा. माधव स्वमी (न्युजर्सी) जयपुर के महंत शा. स्वा. देवस्वरूपदासजी अहमदाबाद मंदिर के कोठारी शास्त्री धर्मकिशोरदासजी सेवा में साथ थे । बोस्टन मंदिर में सेवा पूजा करते ब्र.शा. हरिस्वरुपानंद बालकृष्णस्वामी तथा जेतलपुर के पूजारी व्रजवल्लभ स्वामीने बहुत सुंदर सेवा की थी ।

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री बोस्टन के हरिभक्तों के उपर बहुत ही प्रसन्न है । *- शास्त्री व्रजवल्लभदास*

डिट्रोईट श्री स्वामिनारायण मंदिर में तृतीय पाटोत्सव (U.S.A., I.S.S.O.)

डिट्रोईट के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तृतीय पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी वक्तापद पर बिराजमान थे । श्रीमद् भागवत दशम स्कंध की त्रिदिनात्मक पारायण का आयोजन किया गया था । ता. २६-८-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव-अभिषेक धूमधाम से संपन्न हुआ था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से महापूजा तथा विष्णुयाग तथा पारायण की पूर्णाहुति हुई थी । प्रासंगिक सभा में डिट्रोईट मंदिर के महंत शा. देवस्वरूपदासजी तथा अहमदाबाद मंदिर के कोठारी शा. धर्मकिशोरदासने सर्वोपरि श्रीजी महाराज तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का माहात्म्य शास्त्रो में से दृष्टांत सहित समझाया था ।

पाटोत्सव के यजमान डॉ. मनोजभाई ब्रह्मभट्ट परिवार तथा सह यजमान श्री कांतिभाई पटेल, कथा के यजमान केतनभाई आदि हरिभक्तोंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे । लगातार तीन दिन तक प्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गयी थी । प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति की प्रगति अच्छी रही । *- डॉ. अरविंदभाई पटेल प्रेसिडेन्ट डिट्रोईट मंदिर*

ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर (U.S.A., I.S.S.O.)

ह्युस्टन के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं ।

गुरुपूर्णिमा के दिन महंत स्वामी के.पी. स्वामीने सभा में धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का माहात्म्य समझाया था। श्रावण महीने में के.पी. स्वामी तथा युवान हरिभक्तोने मिलकर अद्भुत झुलोत्सव बनाये है । कांकरिया सरोवर पर ब्राह्मणो ने जो चोर्यासी की थी वैसे ही प्रसंग के अनुस्म शनि-रवि को ५० जितने ब्राह्मण परिवार को आमंत्रण देकर यहाँ भी चोर्यासी की गयी थी । तथा रक्षाबंधन का पवित्र त्यौहार पर ब्राह्मणो के प्रेमपूर्वक भोजन ग्रहण करवाकर दक्षिणा भी दी गई थी ।

सेवा करनेवाले भक्तजनो का सन्मान मंदिर की कारोबारी कमिटि ने किया था । हमारे प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति की प्रगति अच्छी है ।

- रमेश टी. पटेल

कोलोनीया (U.S.A., I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में ८ अगस्त शनिवार को गुरु पूर्णिमा का उत्सव धामधूम से मनाया गया था । सभा की शुरुआत नंद संतो के कीर्तन-गान से हुई थी । चेरिहील से आये हुए महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने प्रासंगिक सभा में हमारे गुरु धर्मवंशी आचार्य महाराज का माहात्म्य समझाकर उनकी तसवीर का पूजन-अर्चन किया था । ठाकुरजी के विविध झूलोत्सव दर्शन भी हुए थे । अपनी सेवा संस्था के डॉक्टरो तथा सहायकों का महंत

स्वामी द्वारा सन्मान किया गया था ।

११ अगस्त को हमारे भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री का प्राकट्योत्सव बड़े हरिभक्त तथा बच्चो ने "हेपी बर्थ-डे टु लालजी महाराजश्री" के आकर्षक कलर के भिन्न-भिन्न गुब्बाबो से सजाया था । शाम को ५-०० बजे सेंकडो हरिभक्तोने श्री हरिकृष्ण महाराज को झुलाया था तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का प्राकट्योत्सव मनाने के लिये हरिभक्तगण पधारे थे । महंत स्वामीने कथा में परम पू. लालजी महाराजश्री का गान किया था । क्योंकि वे बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के ही स्वरूप है । बच्चोने केक काटकर प्यारे पूज्य लालजी महाराजश्री का प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया था । पू. लालजी महाराजश्री की तसवीर का पूजन-अर्चन स्वामीश्रीने प्रथम किया था उसके बाद हरिभक्तोंने पूजन-अर्चन किया था । झूलोत्सव तथा जन्मोत्सव में सेवा करनेवाले हरिभक्तों का मंदिर की तरफ से सन्मान किया गया था । अंत में महंत स्वामीने प्रेरणात्मक प्रवचन किया था । - *प्रविणभाई शाह*

सीडनी (ओस्ट्रेलीया I.S.S.O.) मंदिर

सीडनी के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा-प्रेरणा तथा आशीर्वाद से सत्संगी साथ मिलकर सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का भजन-कीर्तन कथावार्ता आदि करते हैं ।

ता. ३०-७-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी तस्वीर का पूजन-अर्चन करके सभी ने भक्ति भावपूर्वक दर्शन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

पवित्र श्रावण महीने में रविवार को सुंदर कलात्मक झुलोत्सव बनाकर भगवान को झुलाया था । जिसमें सुंदर फूलो के भगवान के चरणारविंद वनविचरण, घास की सुंदर झोपडी तथा ओस्ट्रेलिया करन्सी के भव्य झुलोत्सव हरिभक्तोने बनाये थे । ता. १२-८-०७ की सभा के यजमान श्री जीलन किरणभाई अमीन तथा श्री हितेशभाई जानकी, ता. १९-८-०७ की सभा के यजमान श्री चिरागभाई विहोल तथा उनकी माताजी उषाबा विहोल बने थे । ता. २६-८-०७ के यजमान श्री केनिल शशीकान्त पटेल बने थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पधारे हुए हमारे भुज मंदिर के संतोने महापूजा विधिपूर्वक करवाकर हरिभक्तों को दिव्य लाभ दिया था ।

यहाँ प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सभी उत्सव धूमधाम से मनाये गये थे ।

ता. २-९-०७ रविवार की सभा श्री योगेशभाई पटेल की तरफ से हुई थी । जिस में धून, भजन, कीर्तन तथा गायत्री मंत्र के पाठ किये गये थे ।

ता. ४-९-०७ को जन्माष्टमी की रात्रि में १२-०० बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव की आरती की गयी । श्री विसद दवे के तबला के ताल के साथ श्री रजनीकांत पटेलने हारमोनिया के मधुर गंजन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया था ।

श्री परेशभाई जुठ्ठाणी द्वारा समूह आरती तथा बच्चो के विविध कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये थे । ता. १६-९-०७ की सभा श्री अंकित दिक्षित की तरफ से हुई थी । २३-९-०७ की सभा के यजमान श्री जीज़ेश पटेल थे ।

ता. ३०-९-०७ के रविवार को मंदिर की तरफ 'सीडनी बोट' में सत्संग शिबिर का आयोजन हुआ था । १०० से भी अधिक हरिभक्तोंने बोट में दरिया के मध्य में शिबिर का आयोजन करके सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव, धर्मकुल आचार्य महाराजश्री की महिमा तथा नियम, निश्चय तथा पक्ष का प्रथम बल रखना चाहिए ऐसा विवेचन किया था तथा कीर्तन, भक्ति, नित्य, नियम, ठाकुरजी की आरती आदि जैसे कार्यक्रम संपन्न किये थे । इस प्रसंग के यजमान श्री अंजलेश यशवंतभाई पटेल तथा श्री गौरांगभाई शाह थे ।

- तेजस बी. पटेल

वोशिंग्टन डी.सी. I.S.S.O. चेप्टर

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा से तथा कृपा से वोशिंग्टन I.S.S.O. चेप्टर में कई वर्षो से सत्संग सभा नियमित रूप से होती है ।

२५ अगस्त तथा ८ वी सितंबर की सत्संग सभा अनुक्रम २ घंटे तथा ३ घंटे तक चली थी । जिसमें श्रीजी महाराज की कथा वार्ता-धून-भजन-कीर्तन तथा नित्य नियम-वचनामृत (२७३) का वांचन विवेचन तथा ठाकुरजी की आरती तथा भोग का आयोजन किया गया था ।

- कनुभाई पटेल

न्युजर्सी (U.S.A., I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में जलझीलणी एकादशी का उत्सव मनाया गया

न्युजर्सी के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से भाद्र सुद-११ जलझीलणी एकादशी की दोपहर के १ से ५ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून की गयी थी । जिस में संत मंडल द्वारा अखंड धून की गयी थी । जिसमें संत मंडल के साथ ठाकोरभाई, प्रहलादभाई, घनश्यामभाई धून किये थे । उसके बाद पू. पी.पी. स्वामी के शिष्य पूजारी स्वा. ब्रजवल्लभदासजी (जेतलपुर) तथा स.गु. शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजीने श्रीजी महाराज का सुंदर माहात्म्य कहा था । महंत शा.स्वा. माधवस्वामीने अति परिश्रम करके अद्‌भुत स्नान करनेवाला पुल तैयार करके रिमोट कंट्रोलबोट में श्रीहरिकृष्ण महाराज को बैठाकर नौका विहार में भगवान को रखकर साक्षात् दृश्य बनाया था । अंत में आरती, नित्य विधि करके सभी ने समूह प्रसाद ग्रहण किया था । इस थाल के यजमान श्री प्रहलादभाई, श्री अस्गाभाई, श्री बाबुभाई, श्री अमृतभाई आदि हरिभक्त थे ।

- प्रहलादभाई वि. पटेल

लेस्टर (I.S.S.O., U.K.) मंदिर में तृतीय पाटोत्सव मनाया गया

लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का तृतीय पाटोत्सव प.पू. बडे महाराजश्री तथा अ.सौ. प.पू. बडी गादीवालाश्री के शुभ सानिध्य में मनाया गया ।

इस प्रसंग पर पाटोत्सव के उपलक्ष में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का शुभ आयोजन ता. १९-८-०७ से ता. २५-८-०७ तक किया गया था। प.भ. मूलजीभाई लक्ष्मणभाई काचा ट्रेलर के निवास स्थान से पोथीयात्रा धूमधाम से नीकलकर मंदिर तक धून-भजन रास करते हुए हरिभक्तों (ट्रस्टीयों के साथ(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा बहनो के समुदाय के साथ पहुँची। मंदिर में महिला मंडल की बहनोने मुख्य द्वार पर पोथी का पूजन किया था। कथा के वक्ता पद पर शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. भक्तचरणदासजीने अपनी मधुर शैली में कथामृतका पान करवाया था।

ता. २०-८-२००७ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे तब हरिभक्तो ने तथा संत मंडलने उनका स्वागत किया था। मंदिर की कार्यवाहक समिति तथा प्रमुखश्रीने हार पहनाकर पूजन किया था।

दोपहर के समय अ.सौ. प.पू. बडी गादीवालाश्री सांख्ययोगी बहनो के साथ पधारी तब भक्ति महिला मंडल की बहनोने साथ मिलकर प.पू. गादीवालाश्री का स्वागत किया था।

इस प्रसंग पर गादीवालाश्रीने बडी संख्या में पधारी महिलाओं को आशीर्वाद दिया था। इस दिवस के दैनिक यजमान डॉ. कंदर्पभाई जोशी परिवार तथा श्री महेन्द्रभाई केशवलाल बारोट परिवार बने थे।

ता. २१-८-०७ को ठाकुरजी की आरती के बाद यजमानो नें प.पू. बडे महाराजश्री का पूजन आरती करके पोथी तथा वक्ताश्री का पूजन आरती की थी। सुबह-शाम दोनो समय प.पू. बड़ी गादीवालाश्री बहनो को आशीर्वाद देती तथा कथाश्रवण करती थी। इस दिन के यजमान का लाभ श्री जयंतीभाई नारणभाई पटेल तथा श्री रणछोडभाई गंगदासभाई चोटलीया परिवारने लिया था। ता. २२-८-०७ के दिन श्री राधाकृष्ण हरिकृष्ण महाराज का तृतीय पाटोत्सव-अभिषेक सुबह ८-०० बजे प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से संपन्न हुआ। अभिषेक के यजमान पद पर प.भ. महेशभाई जयंतीभाई ठक्कर(अहमदाबाद, जीवराजपार्क)ने लाभ लिया था। अभिषेक की सामग्री प.भ. सुमित्राबहन एच. पटेल की तरफ से अर्पण की गयी थी। ठाकुरजी के वस्त्रों की सेवा मीराबहन जेठवाने की थी।

सुबह १०-०० बजे ठाकुरजी की श्रृंगार आरती प.पू. बडे महाराजश्रीने उतारकर सभी भक्तजनो को दर्शन का दुर्लभ लाभ दिया। जिसके यजमान श्री विनोदभाई चौहाण थे। भक्ति महिला मंडल की बहनोने समूह में मंदिर के रसोई में ठाकुरजी के लिये अन्नकूट का भिन्न-भिन्न भोग-पक्वान पवित्रता से बनवाकर ठाकुरजी को छप्पन भोग लगाया था। अन्नकूट के मुख्य यजमान पद पर श्री गोरधनभाई रलागी परिवार, श्री दामजीभाई चावडा परिवार ने सहयजमान पद की सेवा देकर प.पू. बडे महाराजश्री के साथ अन्नकूट आरती का लाभ लिया था। ध्वजारोपण के यजमान श्री हिनाबहन रत्नाणी तथा श्री हितेश रत्नाणी परिवारने लाभ लिया था। जिसमें श्री छगनभाई टांकने ध्वज की सेवा की थी।

अन्नकूट के दर्शन शाम के ७-०० बजे तक अविरत चला था। हजारो भाविक दर्शन करके तृप्त हो गये थे। इस दिवस के यजमान श्री जयप्रकाशभाई मकवाणा श्री मावजीभाई टांक, श्री चिमनभाई शाह तथा चि. देव्यानी पटेल (लंदन) आदि परिवार बने थे। प.पू. बडे महाराजश्री तथा अ.सौ. प.पू. बडी गादीवालाश्री के शुभ सानिध्य में सत्संग ज्ञान गोष्ठि कार्यक्रम युवान हरिभक्तों द्वारा संपन्न किया गया।

ता. २३-८-०७ के दिन कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. बडी गादीवालाश्री के शुभ सानिध्य में श्री चिमनभाई शाह तथा श्री रमेशभाई पारेख यजमान पद पर बिराजमान थे तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर रास किया था। वस्त्रो की सेवा गं.स्व. श्री कस्तुरीबहन ने की थी।

शाम के समय लेस्टर बेलग्रेप के काउन्सीलर श्री रश्मिकांत जोशी तथा यहाँ के श्री जलाराम मंदिर श्री राम मंदिर, श्री हिन्दू मंदिर तथा भिन्न धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं के प्रमुखश्री तथा अधिकारी प.पू. बडे महाराजश्री के दर्शन के लिए पधारे थे। मंदिर द्वारा कार्यवाहक कमिटी की तरफ से श्री किरणभाई भावसारने स्वागत किया था। प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से आशीर्वाद स्म हार पहनाया गया था। इस प्रसंग के यजमान श्री डाह्याभाई चौहाण तथा श्री गंगादासभाई टांक तथा श्री हरिशभाई जेढ परिवार थे।

ता. २४-८-०७ के दिन शाम को श्री नरनारायणदेव युवक मंडल लेस्टर द्वारा कीर्तन संध्या कार्यक्रम सुंदर किया गया था। उसके बाद लेस्टर के इस्ट के एम.पी. किथवाझ प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से सुंदर सन्मान किया गया था।

उन्होंने सभा में कहा कि प.पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शन करने मात्र से ही मन में शांति हो जाती है। मेरे जीवन में इससे बडी प्राप्ति और कोई भी नहीं हुई। मेरा जीवन धन्य हो गया। आपश्री लंदन के पार्लामेन्टरी में पधारेगे तो मुझे विशेष आनंद होगा। आज के दैनिक यजमानश्री राजीवभाई कारीया तथा श्री पार्वतीबहन का परिवार बने थे।

ता. २५-८-०७ के दिन कथा के पूर्णाहुति के बाद सभा में प.पू. बडे महाराजश्री तथा अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवालाश्री के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल लेस्टर द्वारा "चांदलानी चमक" नामका धार्मिक नाटक प्रस्तुत किया गया था। मंदिर के सह मंत्रीश्री किरण भावसारने प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" निर्माण की संपूर्ण माहिती सभा में प्रदान की थी। आज के दैनिक यजमान गं.स्व. उजमबहन परिवार। चि. पूजाबहन वाघेला परिवार, श्री वालजीभाई के परिवार तथा वस्त्रो के यजमान गं.स्व. लाधीबहन

वढिर आदि बने थे ।

ता. २५-८-०७ के दिन सप्ताह पारायण की पूर्णाहुति प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से हुई थी ।

इस प्रसंग के सभा में अयोध्या के महंत स.गु. स्वामी देवप्रसाददासजी, धोलका मंदिर के पूजारी स्वामी नरनारायणदासजी तथा शा. भगवतचरणदासजी (जेतलपुर मंदिर)ने युवा वर्ग को अंग्रेजी में धर्म का महिमा समझाया था । उसके बाद लंडन, बोल्टन, स्ट्रेधाम तथा इग्लैड से पधारे हुए हरिभक्तो का सन्मान किया गया ।

लेस्टर मंदिर कार्य वाटक समिति के निवृत हुए हरिभक्त श्री जयंतिभाई नारणाभाई पटेल (प्रमुखश्री) श्री रणछोड़भाई गंगादासभाई चोटलीया (उपप्रमुख) तथा श्री हेमराजभाई चोटलीया (मंत्रीश्री) की मंदिर प्रति अभूतपूर्व सेवा को प्रोत्साहित करके प.पू. बडे महाराजश्रीने उन्हे आशीर्वाद देकर सन्मानित किया था । सहमंत्रीश्री किरण भावसार तथा प्रमुखश्री योगेशभाई पटेल ने आभार विधि की थी ।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री के यु.के. के धर्मप्रवास दरम्यान विल्सडन मंदिर, कार्डिफ मंदिर, लेस्टर तथा स्ट्रेधामं मंदिर में रसोई तथा विविध सेवा में अयोध्या मंदिर के व्यवहार कुशल निःस्पृही महंत स्वामी देवप्रसाददासजी ने अत्यंत श्रद्धा भक्ति से संत मंडल पूजारी स्वामी नरनारायणदासजी (धोलका) शा.स्वा. भगवतचरणदासजी तथा शा.स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी इसं प्रकार सभीने साथ मिलकर धर्मवंशी आचार्य महाराश्री के पाकशाला की सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । मंदिर की कार्यवाहक समिति के उपप्रमुखश्री नाथाभाई चौहाण, मंत्रीश्री कानजीभाई मालवीने उत्सव दरम्यान व्यवस्था तथा संचालन किया था । मंदिर के खजानची श्री जीवराजभाई टांक तथा श्री डाह्याभाई चौहाणने थाल भेट तथा म्युझियमकी भेट की सेवा की पावती तथा अन्य सेवा की जिम्मेदारी श्रद्धापूर्वक संभाली थी ।

श्री तस्गाभाई त्रिवेदीने प.पू. महाराजश्री की पधरावणी की व्यवस्था, महिला मंडल के मधुबहन चौहाण तथा श्री मीनाबहन रत्नाणीने प.पू. गादीवालश्री की पधरावणी की व्यवस्था की थी । सहमंत्री श्री किरण भावसार माजी मंत्रीश्री हेमराजभाई चोटलीया के मार्गदर्शन अनुसार समग्र उत्सव दरम्यान सभा-संचालन किया था । महाप्रसाद की सेवा भक्ति महिला मंडल की बहनोने की थी । पड़दे की सेवा श्री हरिशभाई गोविंदभाई पटेल की तरफ से तथा ८ दिन के ठाकुरजी के भोग की सेवा श्री जयंतीभाई पटेल की तरफ से तथा ८ दिन के ठाकुरजी के भोग की सेवा श्री जयंतीभाई टांक की तरफ़ से की गयी थी ।

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से लेस्टर मंदिर में प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाये गये ।

- किरण वी. भावसार

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

स्वामिनरायण मंदिर कालुपुर : प.पू. आचार्य महाराजश्री के पार्षद मुकुंद भगत ता. ७-९-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

दहेगांव : श्री घनश्यामभाई गोकलदास ठक्कर ता. २२-८-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

बापुपुरा : श्रीमती सोनीबहन सवाभाई चौधरी ता. ७-९-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासीनी हुई है ।

महाराजपुरा (ता.कडी) : भू.पू. कोठारी श्री चतुरभाई भवानभाई ता. २४-७-०७ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अहमदाबाद : श्री कंचन बहन बाबूलाल ठक्कर (दूधवाला) ता. २४-८-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं ।

गांधीनगर : श्री दिपीलकुमार भीखाभाई चौहाण श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद (बापूनगर) : श्रीमती अंबाबहन हरीभाई जोगाणी ता. ७-८-०७ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं ।

अहमदाबाद : श्रीनारायणभाईगंगारामदास (धरमपुर-कीडवालावर्तमानमेंमणीनगर) ता. २२-७-०७ केदिनअखंडस्मरणकरतेहुए अक्षरनिवासीहुएहैं।

अहमदाबाद (अंबावाडी) : सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव देश के अग्रगण्य निष्ठावान हरिभक्त श्री बाबूभाई मणीलाल शाह (उ. ८९ वर्ष) (प्रांतीजवाला) ता. २२-८-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

बावला : श्री शेठ श्री नगीनभाई हरजीवनभाई ता. १४-९-२७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : श्रीमतीशांकरबहननाथाभाईपटेल (उ.९५ वर्ष) ता. ३-९-०७ केदिन श्रीहरिका अखंडस्मरणकरतीहुईअक्षरनिवासीनीहुईहै।

बावला : श्री रतीलाल नाथालाल ठक्कर ता. ३-९-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : श्रीमतीमालिनीबहनमधुसूदनशाहआषाढशुक्ल-१० ता. २८-७-०७ केदिन श्रीहरिका अखंडस्मरणकरतीहुईअक्षरनिवासीनीहुईहै।

अहमदाबाद : श्रीमती रंजनबहन कांतीलाल भाईचंद कोठारी (मोजीदडवाला) भाद्रपद कृष्ण-१० ता. ५-१०-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई है ।

प्रतापपुरा (इडरदेश) : श्री हरिभाई जेठाभाई (उ. १०६ वर्ष) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।



मेघाणीनगर के मंदिर में बाल सभा में आशीर्वाद देते हुए पू. लालजी महाराजश्री ।



प्रागट्योत्सव के यजमान श्री जेठालाल धनजीभाई सवाणी परिवार (केरा-कच्छ) प.पू. महाराजश्री के आशीर्वाद के साथ सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के स्वरूप का भेंट स्वीकार करते हुए ।



बोपल मंदिर में भव्य झूले पर दर्शन देते हुए घनश्याम महाराज ।



अहमदाबाद मंदिर में जलझीलणी एकादशी के अवसर पर श्री गणपति भगवान के नगरयात्रा में दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. संत एवं हरिभक्त ।



महेसाणा के भव्य शिखरी मंदिर का निर्माण कार्य पूरे जोर-शोर से चालू है ।

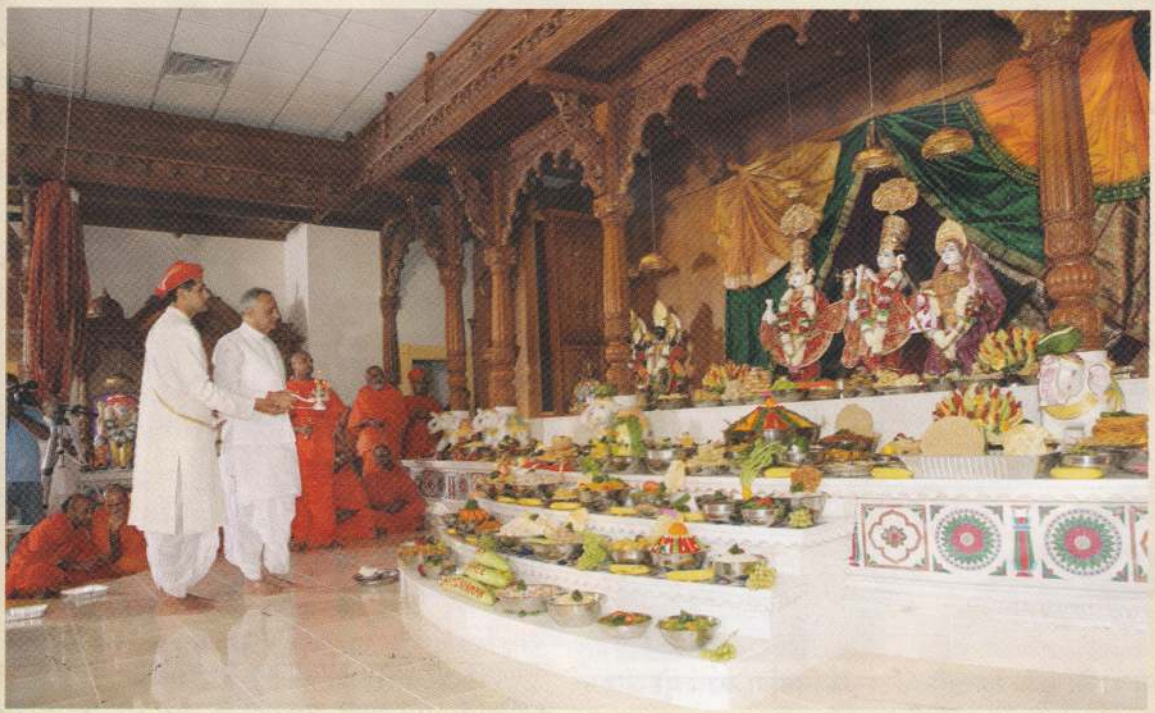


जेतलपुर मंदिर द्वारा आयोजित जलझीलणी एकादशी को पालकी में विराजमान ठाकुरजी के साथ संत एवं हरिभक्तों का विशाल समुदाय ।

under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ३५ वें जन्मदिन प्रसंग पर श्रीहरि के तीनों अपर स्वरूपों का अलौकिक दर्शन ।



चेरिहिल (I.S.S.O. अमेरिका) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

Praful Kharsani